RNI: UPHIN/2015/60902

राजधानी से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

www.theachivertimes.com

डाक पंजीयन संख्या

एस.एस.पी.एल.डब्लू/एन

पी.439/2015-2017

वर्ष : 9 अंक : 215

पृष्ठ : 8 मूल्य : 3 रुपया

लखनऊ, मंगलवार, 28 नवम्बर, 2023

द अचीवर टाइम्स

एक नज़र

एलजी ने आप सरकार को दिया झटका

नई दिल्ली। दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने आपराधिक मामलों में जांच की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए गठित मौजूदा स्थायी समिति को भंग कर दिया। इस समिति को आप सरकार ने गठित किया था। इस समिति में स्थायी और अतिरिक्त स्थायी वकील को जगह दी गई थी। इन्हें समिति का अध्यक्ष और सदस्य के रूप में नियुक्त किया गया। उपराज्यपाल कार्यालय के मुताबिक यह साल 2014 में सुप्रीम कोर्ट और केंद्र सरकार के निर्देशों का उल्लंघन है। दरअसल, सर्वोच्च न्यायालय ने सात जनवरी 2014 को गुजरात राज्य बनाम किशन भाई के मामले में एक निर्देश दिया था। इसमें कहा गया था कि प्रत्येक राज्य का गृह विभाग पुलिस और अभियोजन विभागों के वरिष्ठ अधिकारियों की एक स्थायी समिति का गठन करें। इन्हें जांच करने की जिम्मेदारी सौंपी जाए। यह आपराधिक मामले में बरी करने के सभी आदेश और प्रत्येक मामले में अभियोजन की विफलता का कारण दर्ज करेगा। आप सरकार ने इस आदेश की अवहेलना करते हुए स्थायी वकील और अतिरिक्त स्थायी वकील को इसमें जगह दी। इससे टकराव की स्थिति बनी जो सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों का मूल उद्देश्य पूरा नहीं करता। इसे देखते हुए एलजी ने इस समिति को भंग करते हुए अतिरिक्त मुख्य सचिव - प्रमुख सचिव (गृह) को अध्यक्ष और प्रमुख सचिव (कानून), निदेशक (अभियोजन) और विशेष पुलिस आयुक्त को सदस्य बनाकर स्थायी समिति के पुनर्गठन को मंजूरी दी।

उपराज्यपाल ने जताई थी आपत्ति

उपराज्यपाल का कहना है कि इससे पहले भी समय-समय पर दिल्ली उच्च न्यायालय के स्थायी वकील (आपराधिक) की अध्यक्षता वाली स्थायी समिति और अतिरिक्त स्थायी वकील को सदस्य के रूप में बनाए रखने में हितों के इस टकराव पर आपत्ति जताई थी। उनका कहना है कि इस मामले में सत्तारूढ़ व्यवस्था का ढुलमुल रवैया पुलिस और अभियोजन अधिकारियों के सेवा मामलों को नियंत्रित करने का प्रयास दिख रहा है। जबकि दिल्ली सरकार के कार्यकारी क्षेत्र में यह नहीं आता है।

शिव के आंगन में देवताओं ने मनाई देव दीपावली

क्रैकर्स शो का दिखा अद्भुत नजारा

एजेंसी

वाराणसी। देवताओं के दिव्य लोक में देव दीपावली की छटा कैसी रही होगी, यह तो देवता और ऋषि-मुनि ही जानें, लेकिन देवाधिदेव महादेव की काशी के घाटों पर सोमवार की सांझ की बेला में कार्तिक पूर्णिमा पर जब करीब 22 लाख दीप एक साथ जले तो यहां भी देवलोक सा दृश्य लगा। कार्तिक मास की आखिरी सांझ में अद्भुत, अलौकिक, अनुपम छटा देख इस पल के साक्षी बने लोगों का रोम-रोम पुलकित हो उठा। मान्यता है कि काशी भगवान शंकर के त्रिशूल पर बसी है। ऐसी ही शिव की काशी के आंगन में देवताओं ने सोमवार को देव दीपावली मनाई। इसके साक्षी देश विदेश के आम नागरिकों के साथ ही 70 देशों के राजदूत, 150 डेलीगेट्स और उनके परिवारीजन बने।

धर्म व अध्यात्म के साथ राष्ट्रीयता का संदेश

देव दीपावली पर काशी के घाटों की श्रृंखला अलग-अलग रंग बिखेरती दिखी। कहीं लेज़र शो का आयोजन हुआ, तो गंगा पार रेत पर ग्रीन एरियल फायर क्रैकर्स शो का देशी और विदेशी सैलानियों ने आनंद लिया। दशाश्वमेध घाट की महाआरती में राम भक्ति और राष्ट्रवाद के साथ आध्यात्मिकता व सामाजिकता की भी झलक दिखी। दशाश्वमेध घाट की महाआरती रामलला को समर्पित रही। भक्तों को यहां रामलला व राम मंदिर की झलक देखने को मिली। दशाश्वमेध घाट पर अमर जवान ज्योति की अनुकृति बनाकर देश के वीर जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। भारत के अमर वीर योद्धाओं को %भगीरथ शौर्य सम्मान% से सम्मानित भी किया गया। 21 अर्चक व 51 देव कन्याएं ऋधि सिद्धि के रूप में दशाश्वमेध घाट पर मां गंगा की पूजा और आरती की, यह नारी शक्ति का संदेश भी देती रही।

परंपरा के साथ आधुनिक काशी का नजारा

काशी के घाटों पर एक साथ 12 लाख (जन सहभागिता से 21 लाख) दीयों के प्रज्जवलित होने से अलौकिक समा तो बंधा ही साथ ही चेत सिंह घाट पर साउंड एंड लाइट शो विद प्रोजेक्शन शो के माध्यम से पौराणिक काशी और भगवान शिव के चित्रात्मक जानकारी सुनकर दर्शक मंत्रमुग्ध हो उठे। देव दीपावली पर काशी के सभी मंदिरों, घाटों पर फसाड लाइट, सड़क के विद्युत खंभों को भी आकर्षक तिरंगे स्पाइरल झालरों से सजाया गया।

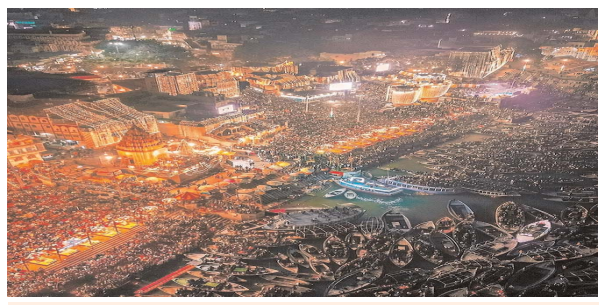

22 लाख दीपों से जगमग हुई काशी

देव दीपावली पर काशी नगरी में लगभग 22 लाख दीप प्रज्वलित किए गए। काशी के अर्धचंद्राकार घाटों पर ही 12 लाख से अधिक दीप जलाए गए। इनमें एक लाख दीप गाय के गोबर से बने थे। दीप पश्चिमी तट घाटों पर और पूर्वी तट की रेत पर जलाये गए थे। काशी के कुंडों, सरोवरों, गंगा-गोमती तट पर स्थित मार्कण्डेय महादेव, वरुणा नदी के शास्त्री घाट आदि स्थानों को लाखों दीयों से जगमग किया गया।

जल, थल और नभ में रही अभेद्य सुरक्षा व्यवस्था

जल मार्ग पर बने थे यातायात के नियम

देव दीपावली पर पर्यटकों और श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए घाटों को 8 जोन, 11 सेक्टर और 32 सब सेक्टर में बांटा गया था। कई चक्र में सुरक्षा के इंतजाम भी किए गए थे। घाटों, नदियों और सड़क पर सुरक्षा, यातायात व्यवस्था, पार्किंग, इमरजेंसी प्रबंधन, क्यूआरटी, इंट्री एंड एग्जिट को लेकर पूरी तैयारी का खाका पहले से ही तैयार किया गया था। महिलाओं की सुरक्षा के लिए पिंक बूथ, एंटी रोमियो स्कवॉयड आदि की तैनाती की गई थी। गंगा में नावों से चलने के लिए दोनों दिशाओं से लेन निर्धारण किया गया था। नावों पर सुरक्षा के उपकरण, नाविकों को अधिक सवारी और नशा न करके नाव चलने की हिदायत दी गई थी। एनडीआरएफ और जल पुलिस के जवान बोट, अत्याधुनिक उपकरणों और चिकित्सकों की टीम के साथ वाटर एम्बुलेंस लेकर तैनात थे।

पहला मौका रहा, जब 70 देशों के राजदूत व डेलीगेट्स बने साक्षी

यह पहला मौका है, जब मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अगुआई में इतनी बड़ी संख्या में कई देशों के राजनायिकों ने इस अलौकिक, अद्भुत और अविस्मरणीय क्षण को अपनी आंखों के सामने देख खुद को गौरवान्वित महसूस किया। योगी सरकार इस वर्ष से देव दीपावली को प्रांतीय मेले का दर्जा दे चुकी है। इससे देव दीपावली की आभा पूरी दुनिया में फ़ैल रही है। गोरक्षपीठाधीश्वर और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के करकमलों से देव दीपावली पर पहला दीपक जलाकर न सिर्फ इसका शुभारंभ किया गया, बल्कि देवताओं का स्वागत भी किया गया। धार्मिक,आध्यात्मिक और सांस्कृतिक नगरी काशी में सोमवार की गोधूलि बेला में भव्य देव दीपावली मनाई गई। सूर्यास्त के साथ ही उत्तरवाहिनी जाह्नवी के तट पर लाखों दीपों ने अद्भुत और अलौकिक छटा बिखेरी। काशी के धनुषाकार 85 घाटों पर मानो आकाशगंगा के सितारे उतर आए हों। पूरी काशी दीपों की रोशनी में नहाई दिख रही थी। सभी घाटों पर शंखनाद, भव्य महाआरती और घंट-घड़ियालों की ध्वनि से काशी की धरती पर देवताओं का स्वागत हुआ। काशी के चेत सिंह घाट पर लेजर शो और गंगा पार क्रैकर्स शो का अद्भुत नजारा दिखा। योगी सरकार देव दीपावली को दिव्य और भव्य बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ रही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मेहमानों का स्वागत किया और इनके साथ क्रूज़ पर सवार होकर देव दीपावली की अद्भुत छटा भी देखी।

इस्राइल-हमास संघर्ष विराम दो दिन बढ़ा

युद्ध में अब तक 15 हजार से अधिक मौतें

एजेंसी

तेल अवीव। हमास और इस्राइल के बीच डेढ़ महीने से भी ज्यादा समय से जारी युद्ध को लेकर आखिरकार दोनों पक्ष युद्धविराम को और दो दिनों के लिए बढ़ाने पर सहमत हो गए हैं। कतर ने ये दावा किया है। कतर सरकार ने बताया कि इस्राइल ने कहा है कि वह प्रत्येक 10 अतिरिक्त बंधकों की रिहाई के लिए संघर्ष-विराम को एक दिन बढ़ा देगा। कतर की घोषणा के बाद, हमास ने पुष्टि की कि वह समान शर्तों के तहत दो दिन के विस्तार पर सहमत हो गया है। गौरतलब है कि कतर, अमेरिका और मिस्र के साथ, इस्राइल और हमास के बीच चल रहे संघर्ष में प्रमुख मध्यस्थ रहा है।

कतर के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता माजिद अल अंसारी की ओर से सोशल मीडिया पोस्ट पर यह घोषणा की गई है। बता दें कि पूर्व में हुए समझौते के मुताबिक, बंधकों की चौथे जत्थे की अदला-बदली आज यानी सोमवार (27 नवंबर) को होने की उम्मीद थी। दोनों के बीच जारी चार दिवसीय संघर्ष विराम का आज आखिरी दिन था। संघर्ष विराम के आखिरी दिन देर शाम दोहा के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने दावा किया कि कतर ने इस्राइल और हमास के बीच चार दिवसीय संघर्ष विराम को दो दिनों तक बढ़ाने पर समझौता हो चुका है। कतर का दावा है कि दोनों पक्षों के बीच सफलतापूर्वक बातचीत हो चुकी है।

20 बंधकों की रिहाई; 30 फलस्तीनी कैदी भी छोड़े जाएंगे

द टाइम्स ऑफ इस्राइल की रिपोर्ट के मुताबिक कतर की घोषणा का मतलब है कि कम से कम दस और इस्राइली बंधकों को मंगलवार (पश्चिम एशिया के स्थानीय समय के मुताबिक) रिहा किया जाएगा। अन्य दस बंधकों को बुधवार को रिहा किया जाएगा। इसी के साथ हर दिन इस्राइल 30 फलिस्तीनी कैदियों को भी रिहा करेगा।

गाजा पट्टी पर संघर्ष विराम; इस्राइल की पुष्टि नहीं

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर कतर विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता माजिद अल अंसारी ने पोस्ट किया, कतर ने घोषणा की है कि इस्राइल और हमास के बीच जारी मध्यस्थता के हिस्से के रूप में, गाजा पट्टी में मानवीय संघर्ष विराम को अतिरिक्त दो दिनों के लिए बढ़ाने पर एक समझौता हुआ है। टाइम्स ऑफ इस्राइल की खबर के मुताबिक संघर्ष विराम विस्तार की इस्रायली पक्ष से आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। हालांकि, हमास ने कतर और मिस्र के मध्यस्थता के प्रयासों को श्रेय देते हुए अपना बयान जारी कर दिया है।

अब तक 15 हजार से अधिक लोगों की मौत

बता दें कि इस्राइल और हमास का हिंसक संघर्ष बीते सात अक्तूबर को शुरू हुआ था। इस लड़ाई में अब तक 15 हजार से अधिक लोग मारे जा चुके हैं। हमास के आतंकी हमलों के जवाब में इस्राइली डिफेंस फोर्स गाजा के आतंकी ठिकानों पर लगातार हमले कर रही है। हमास के कब्जे वाले गाजा में स्वास्थ्य मंत्रालय का दावा है कि अब तक 12 हजार से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है। दूसरी तरफ इस्राइली पक्ष में 1200 लोगों की मौत हुई है।

41 जिंदगियां बचाने की जद्दोजहद

अब सुरंग में मोर्चे पर उतरेगी रैट माइनर्स

एजेंसी

उत्तरकाशी। सिलक्यारा सुरंग में फंसे 41 श्रमिकों को बचाने लिए रेस्क्यू अभियान लगातार जारी है। सुरंग के भीतर ऑगर मशीन का हेड निकालने के बाद यहां इस काम के माहिर रैट माइनर्स की टीम मैन्युअल खोदाई करेगी। इसमें सेना उनकी मदद करेगी। रैट माइनर्स एक विशेषज्ञों की टीम है जो खोदाई में एक्सपर्ट होती है। एनएचआईडीसीएल के एमडी महमूद अहमद और उत्तराखंड सरकार के सचिव डॉ. नीरज खैरवाल ने बताया, मैन्युअल खोदाई शुरू होने के बाद एक मीटर प्रतिघंटा तक खोदाई हो सकती है। वहीं, सोमवार को वर्टिकल ड्रिलिंग के दौरान पानी और पत्थर आने से कुछ दिक्कत हुई। वहीं सुरंग के अंदर फंसे ऑगर मशीन के बरमे को बाहर निकाल लिया गया है। हालांकि मशीन का हेड फंसा होने से अभी मैन्युअल ड्रिलिंग शुरू नहीं हो पाई है। मशीन का हेड निकलते ही यहां मैन्युअल ड्रिलिंग शुरू होने की उम्मीद है।

दरअसल, यहां सुरंग के अंदर फंसे मजदूरों को बचाने के लिए कई प्लान पर एक साथ काम चल रहा है। बीते रविवार को सुरंग के ऊपर वर्टिकल ड्रिलिंग का काम शुरू किया गया था। जिसके साथ यहां आठ इंच की ड्रिल भी की जा रही है। जिससे जमीन के अंदर मिट्टी की प्रोफाइल के साथ चट्टान की प्रकृति भी पता की जा रही है। इसके अलावा सुरंग के दायीं ओर से भी ड्रिफ्ट टनल तैयार कर अंदर फंसे मजदूरों तक पहुंचने का प्लान तैयार किया गया है। सोमवार को रेस्क्यू अभियान के नोडल अधिकारी सचिव डॉ. नीरज खैरवाल व एनएचआईडीसीएल के एमडी महमूद अहमद ने बताया कि सुरंग के ऊपर वर्टिकल ड्रिल का काम जारी है। यहां मशीन की रिक व मशीन को बदलने में कुछ समय लग सकता है। सुरंग के अंदर फंसे ऑगर मशीन के बरमे को सोमवार सुबह साढ़े तीन बजे के करीब काटकर बाहर निकाल दिया है। वहीं मशीन के हेड को बाहर निकालने के बाद रैट माइनर्स यहां मैन्युअल खोदाई का काम शुरू करेगी।

सीजन का पहला कोहरा

फ्लाइटें हुईं लेट, बसों के पहियों पर भी लगे ब्रेक, ट्रेनों पर असर

एजेंसी

लखनऊ। सोमवार को इस सीजन का पहला कोहरा पड़ा। मौसम में बदलाव से सोमवार को विमानों का संचालन गड़बड़ा गया। दिल्ली, मुम्बई, रियाद सहित अन्य रूटों की दर्जनभर से अधिक फ्लाइटें देरी की शिकार हुईं, जिससे पैसेंजरों को असुविधाओं का सामना करना पड़ा। विमानों की लेटलतीफी से पैसेंजरों को एयरपोर्ट पर रुकना पड़ा, जिससे भीड़भाड़ रही। सोमवार को मौसम ने करवट ली। सुबह ही धुंध के साथ कोहरा छाया रहा। बदरी का आलम दिनभर बना रहा, जिससे फ्लाइटों का आवागमन प्रभावित हुआ। लखनऊ से दिल्ली जाने वाली फ्लाइट 6ई 6172 देर रात 2.09 बजे उड़ान भर सकी। जबकि यह उड़ान रात 11 बजे लखनऊ से उड़ान भरकर बारह बजे दिल्ली पहुंच जाती है। देरी से टेकऑफ करने के कारण विमान ने दिल्ली में सुबह 3:34 बजे लैंडिंग की। ऐसे ही इंडिगो एयरलाइंस की फ्लाइट संख्या 6ई 5072 भी लेट हुई। फ्लाईनास की उड़ान संख्या एक्सवाई 334 लखनऊ से सुबह 8ः55 बजे रवाना होती है। लेकिन सोमवार को यह उड़ान करीब डेढ़ घंटे की देरी से सुबह 10:35 बजे उड़ी। इंडिगो की ही उड़ान संख्या 6ई 2243 लखनऊ से दिल्ली के लिए दोपहर 2:35 बजे उड़ान भरती है। जबकि सोमवार को यह 3:27 बजे उड़ान भरकर शाम 4:54 बजे दिल्ली पहुंची। एयरलाइंस सूत्रों के अनुसार एक ही विमान विभिन्न शहरों में अलग उड़ान संख्या पर पहुंचता है। ऐसे में कोहरा होने पर पूरा रूट डिस्टर्ब हो जाता है।

इधर बसों के पहियों पर लगा ब्रेक

कोहरे के चलते रोडवेज बसों का संचालन गड़बड़ा रहा है। ऐसे में अगर आप रोडवेज बस से सफर की तैयारी में है तो अतिरिक्त समय लेकर निकलें। कोहरे के चलते रोडवेज की बसों की रफ्तार थम रही है। जिस सफर में अब तक पांच से छह घंटे लग रहे थे, वहीं अब सात से आठ घंटे लग रहे हैं। हालांकि, सुरक्षा को देखते हुए बसों को कोहरे में कम स्पीड से चलाने को कहा गया है। परिवहन निगम के अधिकारियों ने बताया कि रोडवेज बसों से होने वाली दुर्घटनाओं को रोकने के लिए चालकों-परिचालकों की काउंसिलिंग लगातार चल रही है। इस दौरान उन्हें कोहरे में नियंत्रित गति में ही बसों के संचालन के निर्देश दिए गए हैं। आने वाले दिनों में यदि ऐसा रहा तो इसका असर ट्रेनों पर भी पड़ेगा। पंजाब की तरफ से आने वाली ट्रेनों कोहरे से प्रभावित हो सकती हैं। रेलवे द्वारा कोहरे के आशंका को देखते हुए कई ट्रेने पहले ही कैंसिल की जा चुकी हैं।

यूपी में बदला मौसम

तीन साल के बाद सर्दी ने तोड़े रिकॉर्ड

दस्तक

मौसम विभाग ने की आने वाले दिनों की भविष्यवाणी

एजेंसी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में ठंड बढ़ने के संकेत दे रहा है मौसम विभाग। पूरे प्रदेश में बादलों ने डेरा डाल रखा है। सोमवार को बुंदेलखंड में झांसी-हमीरपुर, आगरा-अलीगढ़ की तरफ बारिश रिकॉर्ड की गई।

यूपी का मौसम अचानक से बदल गया। एक दिन पहले दिख रही धूप गायब हो गई। आसमान में बादल छाए रहे। ठंडी हवाओं से तापमान गिर गया। मौसम विभाग ने बताया है कि आने वाले दिनों में मौसम कैसा रहेगा।

ठंड की तल्खी धीरे-धीरे बढ़ती दिखाई दे रही है। सोमवार को पश्चिमी विक्षोभ की सक्रियता का असर लखनऊ पर दिखा। पूरे दिन बादल छाए रहे, धूप की झलक चंद सेकंड ही नजर आई। इसके कारण दिन का तापमान गिरा, वहीं रात के पारे में मंगलवार से गिरावट के आसार जताए जा रहे हैं। वहीं कोहरा भी बढ़ेगा। एक तरफ पारा गिर रहा, दूसरी तरफ शहर की हवा का स्तर अभी खराब बना हुआ। लखनऊ की हवा अभी भी नारंगी श्रेणी में खराब बनी हुई है। सोमवार को दिन का पारा 23..6 डिग्री रहा, जो रविवार के 28.2 की अपेक्षा 4..6 डिग्री कम हो गया। हालांकि न्यूनतम तापमान में विशेष बदलाव नहीं रहा। आंचलिक मौसम विज्ञान केन्द्र के वरिष्ठ मौसम वैज्ञानिक के मुताबिक, 2019 में 27 नवंबर को अधिकतम तापमान 21 डिग्री था, जबकि 2020 में 24 डिग्री, 2021 और 2022 में 26 डिग्री दर्ज हुआ था। इस लिहाज से तीन साल बाद नवंबर में 27 दिसंबर का दिन सबसे ठंडा रहा। 28 की रात से न्यूनतम तापमान में भी गिरावट आने के आसार हैं, हालांकि दिन का पारे में गिरावट नहीं आएगी।

दो से तीन डिग्री की गिरावट बढ़ाएगी सर्दी

उत्तर प्रदेश में ठंड बढ़ने के संकेत दे रहा है मौसम विभाग। पूरे प्रदेश में बादलों ने डेरा डाल रखा है। सोमवार को बुंदेलखंड में झांसी-हमीरपुर, आगरा-अलीगढ़ की तरफ बारिश रिकॉर्ड की गई। प्रयागराज, चित्रकूट, दक्षिण पूर्वी यूपी यानी विंध्य क्षेत्र के कुछ जिलों में भी बूंदाबांदी के आसार हैं। आंचलिक मौसम विज्ञान केन्द्र लखनऊ के वरिष्ठ मौसम वैज्ञानिक अतुल कुमार सिंह के मुताबिक, पश्चिमी विक्षोभ की सक्रियता के कारण प्रदेश का मौसम बदल गया है। मध्य क्षोभमंडल में अरब सागर तक एक ट्रफ के रूप में पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय हो गया है। इसके कारण प्रदेश के अधिकतम तापमान में दो डिग्री सेल्सियस की गिरावट आने के आसार हैं। हालांकि ऐसा अनुमान है कि रात का पारा दो डिग्री तक बढ़ सकता है। वहीं इस पश्चिमी विक्षोभ के कमजोर हो कर आगे बढ़ने के कारण आगे बढ़ने और बादल के छंटने के कारण मौसम शुष्क होगा और पछुआ हवा चलने के आसार हैं, इसके कारण रात के पारे में भी दो से तीन डिग्री तक गिरावट आ सकती है।

उन्नाव हसनगंज बक्शीखेड़ा पीड़ित परिजनों से मिलने पहुंचे महाराजा लाखन पासी स्वाभिमान समिति/बहुजन क्रांति संघ राष्ट्रीय अध्यक्ष- डॉ0 मोहनलाल पासी

मृतक दीपक की माता फूलकुमारी ने कोतवाली हसनगंज पुलिस पर दबाव बनाने का लगाया आरोप

- बहुजन क्राति संघ के अध्यक्ष ने उच्च स्तरीय जांच कराकर उचित न्याय दिलाने का दिया आश्वासन।
- पीड़ित परिवार को पुत्र वियोग सहनकर अपने आप को सम्भालने की दी राय कहां यदि गलत हुआ है तो न्याय जरुर मिलेगा चाहे मुझे खुद ही न धरने पर बैठना पड़े।

द अचीवर टाइमस, महेन्द्र कुमार

हसनगंज उन्नाव। कोतवाली हसनगंज उन्नाव क्षेत्र के बक्शीखेड़ा गांव में बीते शुक्रवार को गांव के ही 22वर्षीय यवक मृतक दीपक का शव गांव के ही युवती पुत्री जयप्रकाश गौतम घर के बरामदे में दुपट्टे से बने फांसी के फन्दे बल्ली से लटका हुआ मिला था । जिससे आहत होकर महाराजा लाखन पासी स्वाभिमान समिति बहुजन क्रांति संघ- के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ0 मोहनलाल पासी परिजनों से मिलने पहुंचे ग्राम बक्शीखेड़ा पीड़ित परिजनों को उच्च स्तरीय जांच कराकर उचित न्याय दिलाने का दिया आश्वासन। बक्शीखेड़ा निवासी मृतक दीपक की मां ने घटना की जानकारी दी हसनगंज पुलिस पर आरोप लगाते हुए कहा क्षेत्रीय पुलिस ने उचित न्याय नहीं किया हम सब जीवन यापन करने के लिए बाहर दूसरे शहर में रहते हैं मेहनत मजदूरी करके गुजारा करती हूं मेरे परिवार में कोई भी उस समय घर पर नहीं था मेरे पति रामप्रसाद को सूचना मिलने पर जब वह मौके पर पहुंचे तो उन्हें हसनगंज पुलिस ने डरा-धमका कर हस्ताक्षर करा लिया और शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया जब हम लोगों ने घटना की तहरीर शनिवार को कोतवाली प्रभारी हसनगंज राजेश्वर त्रिपाठी को देनी चाही तो तहरीर लेने से किया इन्कार रविवार की सुबह दोबारा हसनगंज थाने पर गये तो महिला सहित परिजनों से कि अभद्रता दो दिन का आश्वासन देकर दबाव बनाकर पुत्र के शव का कराया अन्तिम संस्कार अभी तक नहीं की हसनगंज पुलिस ने कोई उचित कार्रवाई।

इनसेन्ट

बहुजन क्रांति संघ के अध्यक्ष डॉक्टर मोहनलाल पासी की आंखें हुई नम बेहद शोक प्रकट करते हुए परिजनों को पुत्र वियोग की पीड़ा को सहन करने को कहा परिजनों को धैर्य बंधाते हुए कहा घटना की उच्च स्तरीय जांच कराकर मामले में उचित कार्यवाही की जाएगी जो भी दोषी पाया जाएगा आवश्य ही हसनगंज पुलिस करेगी उचित कार्रवाई आपके साथ हमेशा हमारा संगठन कन्धे से कन्धा मिलाकर आपके साथ खड़ा है चाहे हमें खुद ही धरने पर क्यों न बैठना पडे- डा0मोहनलाल पासी।

सेंट्रल बार चुनाव में भी करनी सेना का दबदबा प्रत्याशियों को दी जीत की बधाई

उत्तर प्रदेश में किया करनी सेना को मजबूत दुर्गेश सिंह दीपू

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

मोहनलालगंज,लखनऊ। श्री राजपूत करणी सेना उत्तर प्रदेश के प्रदेश अध्यक्ष दुर्गेश सिंह दीपू ने जब से प्रदेश अध्यक्ष का पद संभाला है तब से उत्तर प्रदेश में करणी सेना काफी मजबूत होती जा रही है। मंडल से लेकर जिला अध्यक्ष व तहसील अध्यक्षों तक सदस्यता दिलाई जा रही है और करणी सेना को मजबूत किया जा रहा है आपको बता दे की लखनऊ में करणी सेना के हजारों की संख्या में कार्यकर्ता बन चुके हैं और आपने कर्तव्यों का निर्वहन कर रहे हैं। वही सेंट्रल बार एसोसिएशन लखनऊ के चुनाव में करणी सेना ने समर्थन किया। संगठन के जिला अध्यक्ष अधिवक्ता सभा दीपक सिंह एडवोकेट के अगुवाई में चुनाव प्रसार प्रचार किया गया प्रदीप सिंह एडवोकेट वरिष्ठ उपाध्यक्ष सेंट्रल बार एसोसिएशन लखनऊ एवं श्री आशुतोष सिंह चौहान एडवोकेट उपाध्यक्ष मध्य काफी वोटो से विजेता हुए उत्तर प्रदेश श्री राजपूत करणी सेना के प्रदेश अध्यक्ष श्री दुर्गेश सिंह जी लखनऊ के अधिवक्ता सभा के जिला अध्यक्ष दीपक सिंह एडवोकेट को बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा आपकी मेहनत रंग लाई। प्रदेश अध्यक्ष दुर्गेश सिंह ने कहा कि देश में हो रहे अत्याचार व गरीबों का उत्पीड़न बर्दाश्त नहीं किया जाएगा ऐसे मसलों पर करनी सेना हमेशा आवाज उठाती रहेगी। प्रदेश उपाध्यक्ष विकास सिंह जिला सचिव अमर सिंह वा अन्य पदाधिकारी ने भी जीत की शुभकामनाएं देते हुए करणी सेना को मजबूत करने का संकल्प किया।

एक नज़र

आस्था श्रद्धा व विश्वास का संगम बना राजघाट

द अचीवर टाइम्स निशान्त शुक्ला

बिलग्राम हरदोई। कार्तिक पूर्णिमा पर्व पर लाखों श्रद्धालुओं ने गंगा स्नान कर किया पूजन अर्चन,आबकारी मंत्री नितिन अग्रवाल ने की माँ गंगा की आरती लिया साधु संतों का आशीर्वाद।सुरक्षा व्यवस्था की जिम्मेदारी संभाल रहा पुलिस प्रशासन दिखा चौकन्ना। प्राप्त जानकारी के अनुसार हिंदू धर्म की प्रमुख आस्था के केंद्र में कार्तिक पूर्णिमा पर कई जनपदों से हज़ारों की संख्या में लोग बिलग्राम के राजघाट गंगा तट पर स्नान के लिए देर रात तक आते जाते दिखे। जहां पर स्नानार्थी पैदल यात्रा से लेकर बाइक, प्राइवेट बस,रोडवेज, ऑटो ,टैम्पो ,टैक्सी इत्यादि वाहनों में भर कर सवारी करते हुए नजर आए। पुलिस प्रशासन द्वारा स्थानीय गंगा स्नान मेला की महत्वता को देखते हुए राजघाट पर स्वयं पुलिस के आलाधिकारियों द्वारा स्थानीय मुआयना करने के बाद खामियों को अपने सामने ही दूर कराया गया।श्रद्धालुओं की सुरक्षा व्यवस्था भी चाकचौबंद दिखी।दमकल,पुलिस व स्वास्थ्य विभाग की टीम भी एम्बुलेंस सहित ड्यूटी पर रही। कार्तिक पूर्णिमा मेले में इस बार बिलग्राम तहसील क्षेत्र के रहुला जफरपुर मार्ग पर गुहा नदी पुल क्षतिग्रस्त होने की सूचना समय रहते मिलते ही तहसील प्रशासन ने प्रतिवर्ष की भांति वनवे मार्ग की व्यवस्था से परहेज करते हुए कन्नौज बिलग्राम के राजघाट मुख्य मार्ग को आने जाने के लिए चुना।बढ़ती भीड़ को नियंत्रित करने के उद्देश्य से छिबरामऊ से राजघाट मार्ग पर गंगा तट तक चार स्थानों पर पुलिस ने बैरियर लगा अपने जाबांज जवानों को डियूटी पर लगाया जबकि मेला स्थल पर पुलिस चौकी के साथ अतिरिक्त पुलिस बल के अलावा स्वास्थ्य, दमकल,नपाप बिलग्राम के अलावा खोया पाया केंद्र पर तैनात कर्मचारियों ने श्रद्धालुओं के लिए मददगार बनते दिखाई भी दिए।वहीं पीएसी के जवानों ने स्थलीय व जल के बीच बोटों पर रहकर गंगा स्नान के दौरान सम्भावित हर हादसे को घटने से रोकने में सफल रहे।राजघाट गंगा तट के अतिप्राचीन महत्व को समझते हुए यूपी सरकार के आबकारी मंत्री नितिन अग्रवाल ने मां गंगा के पतित पावनी तट पर पहुंचे जहां पर उन्होंने गंगा आरती कर साधु संतों का आशीर्वाद भी प्राप्त किया।इस अवसर पर प्रशासन की सुरक्षा व्यवस्था भी चाक चौबंद रही। गंगा तट पर बच्चों युवा बुजुर्ग व महिलाओं व पुरुषों ने स्नान करने के बाद पुरोहितों को दान दक्षिणा देकर पुण्य प्राप्त करते हुए नजर आए।जिसके बाद अधिकांश लोगों ने मेला घूमने में समय दिया।जहां लगी दुकानों पर महिलाओं ने साजो सृंगार व घरेलू चीज़ें खरीदने में रूचि दिखाई।जबकि बच्चों द्वारा खिलौने खरीदे गए।श्रद्धालुओं की बड़ी संख्या में उपस्थित से राजघाट सहित पूरा मेला परिसर क्षेत्र आस्था व विश्वास से भरा हुआ था।जहां पर हर एक घाट पर श्रद्धालुओं के हर हर गंगे के उद्घोष से माहौल भक्तिमय बना हुआ दिखा।धूप दीप की सुगंध से वातावरण भक्तिमय दिखाई देता रहा। समाचार लिखे जाने तक किसी तरह की कोई अप्रिय घटना की सूचना प्राप्त नहीं हुई है।

संदिग्ध परिस्थितियों में महिला की मौत, पति फरार

हिमांशु त्रिपाठी (द अचीवर टाइम्स)

हरदोई। संदिग्ध परिस्थितियों में महिला की मौत, कमरे में पत्नी के शव को छोड़कर पति फरार। किराए के मकान पर रहते थे पति-पत्नी, बिहार के निवासी बताए जा रहे हैं दंपत्ति। मकान मालिक ने पुलिस को सूचना दी, मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा। संडीला कस्बे के मोहल्ला शक्ति नगर का मामला।

भारती किसान मजदूर जन सेवा यूनियन की बैठक हुई

द अचीवर टाइम्स अभिषेक राजपूत

हरदोई। राष्ट्रीय कार्यालय पर हुई किसानों और मजदूर के बारे में चर्चा की गई और किसानों की समस्या का समाधान करने के लिए हमारी भारतीय किसान मजदूर जन सेवा यूनियन काम करेगी जय जवान जय किसान उपस्थित लोग राष्ट्रीय अध्यक्ष तेज कुमार राष्ट्रीय महामंत्री अमर सिंह राष्ट्रीय संगठन मंत्री राजेश लोधी राष्ट्रीय सचिव अभिषेक यादव प्रदेश सचिव रामसेवक राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अमित यादव जिला अध्यक्ष लवकुश कुमार युवा मोर्चा युवा जिला मंत्री अमित कुमार तहसील अध्यक्ष खुशीराम ब्लॉक अध्यक्ष लल्लू आदि सैकड़ो कार्यकर्ता मौजूद रहे।

आटो और मोटरसाईकिल की आमने सामने टक्कर

बाईक सवार ने आटो में मारी टक्कर

द अचीवर टाइम्स अभिषेक राजपूत

हरदोई ।अतरौली माल भरावन रोड पर आटो और मोटर साईकिल की आमने सामने टक्कर मे बाईक सवार हुवा घायल स्थानीय लोगो ने घायल व्यक्ति को सीएचसी पहुंचाया थाना अतरौली के अंतर्गत भरावन बैंक आफ इंडिया के पास हुआ भयानक एक्सीडेंट बाइक सवार ने आटो मे सामने से मारी टक्कर आटो ड्राइवर की हलकी चोटे आई अतरौली के ओर जाते समय बैटरी रिक्शा भरावन से माल की तरफ जाते समय बाइक सवार ने सामने से मारी टक्कर जिसमें बाइक सवार गंभीर रूप से घायल हो गाया युवक को सीएससी भरावन पहुंचाया गया बाइक सवार शराब के नशे में था

यातायात जागरूकता माह मे लखनऊ के किन्नर समाज के लोगों ने रोड पर उतरकर किया प्रचार

- टी आई राधेश्याम सिंह के नेतृत्व में लगातार लोगों को किया जा रहा जागरुक

द अचीवर टाइम्स प्रशांत अवस्थी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ पुलिस उपायुक्त यातायात ह्रदेश कुमार के नेतृत्व में टी आई राधेश्याम सिंह लगातार लखनऊ के विभिन्न क्षेत्रों में यातायात जागरूकता माह का पालन करते हुए नजर आ रहे हैं तो वहीं पर आज लखनऊ के 1090 चौराहे पर किन्नर समाज के लोगों के साथ प्रचार करते हुए दिखे टी आई राधे श्याम सिंह खास बातचीत में टी आई राधेश्याम सिंह ने कहा कि इस मौसम में गाड़ी चलाना समय सतर्कता जिसे दुर्घटना से बचा जा सके दुर्घटना में काफी जान सिर्फ चालक की लापरवाही के कारण चली जाते हैं इसलिए सभी लोग वाहन चलाते समय नियमों का पालन करें जिससे हादसे को रोका जा सके ।

पत्रकार सम्मान समारोह व भंडारे के साथ हुआ मेले का समापन

समस्त सनातन प्रेमियों को सूचित करते हुए अपार हर्ष हो रहा है

द अचीवर टाइम्स सुधांशु अवस्थी

हरदोई। गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी कार्तिकी मेला स्थान फूल मती माता मंदिर मछरेहटा मे दिनांक 27/11/23 मेले में बाबा महंत प्रीतम दास व मेला कमेटी के सदस्यों के सहयोग से पत्रकार सम्मान समारोह व भंडारे का आयोजन हुआ पत्रकार सम्मान समारोह में पत्रकारों को अंग वस्त्र देकर किया गया सम्मानित जिसमे पत्रकार रजनीश मिश्र, सुशील शुक्ला, सत्य प्रकाश अवस्थी, सुधांशु अवस्थी, अनुपम अवस्थी,राम लखन तिवारी, नवल चौधरी की उपस्थिति रही मेला उद्घाटन श्री श्री 108 पूज्य संत त्यागी जी महाराज डगरहा धाम एवं श्री श्री 108 महंत नारायण दास जी महाराज डंका वाले बाबा चारधाम पहला आश्रम की गरिमा मयी उपस्थित हुई। मेला समापन में- महंत संतोष दास खाकी जी महाराज, सचिव चौरासी कोसी परिक्रमा समिति नैमिषारण्य की गरिमा मयी उपस्थित रही मेला संरक्षण- योगेश प्रधान मिर्जापुर उत्तरी मेला प्रबंधक- रामचंद्र गुप्ता सह प्रबंधक- संजय रस्तोगी। जिला संरक्षक बिश्व हिन्दू परिषद सह संरक्षक- रोहित रस्तोगी मेला प्रभारी- मनोज रावत प्रधान मछरेहटा कस्बा सुरक्षा प्रमुख- महेन्द्र पांडेय प्रान्त सह संयोजक बजरंग दल (अवध प्रान्त) मेला अध्यक्ष- महंत प्रीतम दास कोषाध्यक्ष- संतोष वैश्य मछरेहटा उपाध्यक्ष -दुर्गेश अवश्थी, गोलू मेला महामंत्री- राजन रस्तोगी मेला मंत्री - पंकज कनौजिया मेला सहमंत्री-सतनाम राजवंशी मेला सहमंत्री-किशोरी मौर्या मेला ब्यवस्थापक-मंच ब्यवस्थापक-गौरव राजवंशी मेला ब्यवस्थापक-नवीन मौर्या सह ब्यवस्था प्रमुख गंगाराम राजवंशी प्रचार प्रमुख- मुनेन्द्र मौर्या (पेंटर) सह प्रचार प्रमुख- गनेश मौर्या प्राचार मंत्री- कमल राजवंशी बिशेष सम्पर्क प्रमुख- अनिल दीक्षित सह बिशेष सं प्र,- दिनेश मौर्या पूर्व प्रधान सह बिशेष सं,प्र-राजा राजवंशी मंदिर पुजारी- श्री राम मौर्या

कार्तिक पूर्णिमा पर परियर गंगा तट पर उमड़ा जन सैलाब

द अचीवर टाइम्स मुकेश राजपूत

उन्नाव। विकास खंड सिकन्दर पुर सरोसी के परियर गंगा तट माना बंगला स्थित गंगा मेले में कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर भारी मात्रा में श्रद्धालुओं ने परियर माना बंगला गंगातट पर गंगा स्नान कर पूजा अर्चना की। भीड़ अधिक होने के कारण कई किलोमीटर तक लम्बा लगा रहा जाम में फंसे रहे श्रद्धालु। स्थानीय परियर गंगातट पर गुरुवार से ही श्रद्धालुओं के जत्थे पहुंचना शुरू हो गए थे। रात में गंगा रेती पर टेंट व रावटी लगाकर रुके हुए श्रद्धालुओं ने भजन कीर्तन करने के बाद सुबह ब्रम्ह मुहूर्त से ही गंगा स्नान करना प्रारम्भ कर दिया जो शाम तक चलता रहा।श्रद्धालुओं ने गंगा स्नान के बाद पूजा अर्चना की और मौजूद तीर्थ पुरोहितों को दान दक्षिणा देकर परिवार की मंगल कामनाएं की। प्रशासन द्वारा समुचित व्यवस्था न होने से भक्तों को भोर पहर से दोपहर दो बजे तक लोगों को जाम से जूझना पड़ा। माननीय विधायक पंकज गुप्ता के आदेशों को ना मानकर पहले से ही पंडो द्वारा रास्ते दुरुस्त करवाने व मेले में समुचित प्रबंध करने की मांग की थी लेकिन प्रशासन के सुस्त रवैए के चलते मेले में अव्यवस्थओं का बोल बाला रहा। जिसमे प्रसाधन,पेयजल, खोया पाया कैम्प मेले में नदारद रहे। महिला प्रसाधन न होने से महिलाओं को कई किलोमीटर तक नित्य कर्म के लिए भटकना पड़ा। दोपहर बाद मेले में पहुचे सदर विधायक पंकज गुप्ता व खण्ड विकास अधिकारी उत्तम कुमार तिवारी ने घाट पर पूजन अर्चन कर जायजा लिया। इस दौरान सफीपुर कोतवाली प्रभारी एडीओ पंचायत विनोद वर्मा सहित अन्य आलाधिकारी मौजूद रहे।

डॉ हिमांशु तिवारी का जन्मदिन हरसो उल्लास के साथ मनाया गया

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

लखनऊ । उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के छठा मील चौराहा पर स्थित सैनफोर्ड हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉक्टर हिमांशु तिवारी का जन्मदिन बढ़ो हर्षो उल्लास के साथ सैनफोर्ड हॉस्पिटल में केक काटकर मनाया गया केक काटने के बाद डॉक्टर हिमांशु तिवारी ने कहा कि हम लोग सदैव गरीब असहाय की मदद करते हैं और गरीबों की मदद करने में बहुत सुकून मिलता है इस मौके पर किसान मंच के प्रदेश प्रवक्ता प्रदेश सचिव राहुल पांडे , द अचीवर टाइम्स के उत्तर प्रदेश ब्यूरो प्रशांत अवस्थी, सैनफोर्ड हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉक्टर रिजवान खान, डॉक्टर राहुल गुप्ता, शिवम तिवारी ,छोटू तिवारी, वसीम खान ,हाफीज खान, आदि लोग उपस्थित रहे ।

नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा एवं महापौर अर्चना वर्मा के निर्देशन में हनुमत धाम स्थित घाट अमृत स्नान कार्यक्रम का आयोजन कराया गया नागरिकों को स्वच्छ रखने के दिए निर्देश

द अचीवर टाइम्स फसाद खान

शाहजहांपुर। शासन की मंशा के अनुरूप माननीय महापौर अर्चना वर्मा जी एवं नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा जी के निर्देशन में प्रथम बार नगर निगम, शाहजहांपुर द्वारा आज दिनांक 27-11-2023 को हनुमत धाम स्थल स्थित घाट पर अमृत स्नान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें नगर वासियों द्वारा बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया तथा हनुमत धाम पर स्थित घाट पर स्नान कर पूजन किया। इसके अतिरिक्त नगर आयुक्त महोदय के निर्देशन में नगर निगम टीम द्वारा नदी एवं घाट को स्वच्छ रखने, प्रतिबंधित प्लास्टिक का उपयोग न करने, पूजा सामग्री को अर्पण कलश में डालकर बहाने का संकल्प दिलाया गया। अमृत स्नान कार्यक्रम में उपस्थित नागरिकों ने अपने-अपने माध्यम से नगर निगम शाहजहांपुर व राज्य सरकार का आभार व्यक्त किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम में नगर आयुक्त महोदय संतोष कुमार शर्मा जी, अपर नगर आयुक्त एस0के0 सिंह, मुख्य सफाई एवं खाद्य निरीक्षक हरिवंश दीक्षित, चन्द्रवीर सिंह सागर उपस्थित रहे।

काकोरी बहरू मार्ग से सरायं अलीपुर मार्ग पर गड्ढा मुक्त के नाम पर ठेकेदार कर रहा खिलवाड़

- गड्ढों में कम रा मिटीरियल डालकर गड्ढा मुक्त नहीं गड्ढा युक्त बना रहें सड़क।
- आम जनमानस के साथ किया जा रहा है छलावा।

द अचीवर टाइम्स दीपक कनौजिया।

काकोरी लखनऊ। काकोरी लोक निर्माण विभाग की लापरवाही के चलते क्षेत्र की सड़कें गढ़ों में तब्दील तो हो ही गई है साथ ही जिन सड़कों पर गड्ढे भरने का काम चल रहा है उसको देखने में तो यही लगता है की यह सड़क हफ्ता 15 दिन भी अगर चल जाए तो भी बहुत बड़ी बात है सरकार के आदेशों को जमीनी हकीकत में ठेकेदार कुछ और करके दिखा रहे हैं यहां तक सरकार की मंशा है की सभी सडकें गड्ढा मुक्त की जाए और जिनकी हालत बहुत ही खराब है उनको दोबारा फिर से नवीनीकरण किया जाए। ताजा मामला काकोरी बहरू मार्ग से सरायं अलीपुर मार्ग का है जहां पर महीनों पहले गड्ढा मुक्त करनें के लिए दीपावली से पहले कार्य चालू किया गया था जो थोड़ा कार्य करनें के बाद कार्य में लापरवाही कर रोक दिया गया। और जो भी कार्य किया भी गया वह घटिया सामग्री लगा कर सिर्फ रोड को गड्ढा मुक्त कहनें के लिए किया गया। जबकि गड्ढे वैसे ही मौजूद हैं। जो गड्ढों में गिट्टी डाली जा रही है वह भी कम मात्रा में डाल कर कागजी कार्रवाई पूरी की जा रही है। गड्ढा भरनें के नाम पर सरकार को लगाया जा है चूना। जबकि यह सड़क दर्जनों ग्राम पंचायतों को जोड़ते हुए मलिहाबाद मोहान मार्ग से मलिहाबाद तहसील और बाजार भी पहुंचनें के लिए भी सार्ट कट मार्ग है। इस मार्ग पर रात दिन बराबर आवागमन रहता है। शुबह किसान अपनी सब्जी और फूल भी लेकर लखनऊ जाता है। जबकि लखनऊ में पढ़नें वाले बच्चों को भी इसी मार्ग पर सायकिल और बाइक से आना जाना पड़ता है। स्थानीय लोगों यह भी बताया कि अगर इसी तरह यह रोड बनी तो ज्यादा दिन टिक नहीं पाएगी और इससे ज्यादा गड्ढे हो जाएंगे। जबकि इसी मार्ग पर बहुत ज्यादा गड्ढे होने से क ई लोग काल के गाल में समा चुके हैं। फिर भी इतनी बदहाल सड़क को ठीक तरह से न बनाया जाना कुछ न कुछ आम जनमानस के साथ छलावा तो हो रहा है। जबकि इसी मार्ग पर शाहपुर,इमलिहा,भट ऊ जमालपुर,?खालिशपुर ,असरफ खेड़ा, भुल ई खेड़ा, सरायं अलीपुर,बसरेला,अस्त खेड़ा,लंगोटा खेड़ा, तिलसुआ और क ई गांव होने से लोगों में इस मार्ग को लेकर काफी असंतोष है। जबकि यह क्षेत्र एलडीए से प्रस्तावित है और नवाबों का शहर कहा जानें वाला लखनऊ भी 15 किमी है फिर भी आम जनमानस के साथ आखिर सौतेला व्यवहार क्यों।

प्रदेश भर में 61 हजार लाउडस्पीकरों की जांच

तीन हजार से ज्यादा उतरवाए गए, सभी जिलों में चला अभियान

संवाददाता

लखनऊ। यूपी के सभी जिलों में ध्वनि प्रदूषण के खिलाफ सोमवार को अभियान चलाया गया। इस दौरान धार्मिक व सार्वजनिक स्थलों पर लगाए गए लाउडस्पीकरों का साउंड चेक किया गया, जिसे अधिक पाए जाने पर कार्रवाई की गई। लाउडस्पीकर से होने वाले ध्वनि प्रदूषण के खिलाफ सोमवार को पूरे प्रदेश में अभियान चलाया गया। सात हजार से ज्यादा लाउडस्पीकरों की आवाज कम कराई गई और तीन हजार से ज्यादा हटाए गए। शासन के निर्देश पर सोमवार को सुबह पांच बजे से शाम सात बजे तक प्रदेश के सभी जिलों में चेकिंग टीम बनाकर धार्मिक स्थलों और सार्वजनिक स्थलों पर लगे अवैध लाउडस्पीकरों की जांच की गई। चौदह घंटे में 61399 लाउडस्पीकरों को चेक किया गया। मानक के विपरीत पाए गए 7288 लाउडस्पीकरों की आवाज कम कराई गई। मानक के विपरीत और निर्धारित डेसीबल सीमा से अधिक चल रहे 3238 लाउडस्पीकरों को उतरवाया गया। पुलिस टीमों ने लाउडस्पीकरों की संख्या और आवाज मानक से कम रखने के लिए नोटिस के साथ चेतावनी दी।

अमेठी में 26 स्थलों से हटवाए गए लाउडस्पीकर

अमेठी जिले में ध्वनि प्रदूषण रोकने के लिए सोमवार को पुलिस ने धार्मिक व सार्वजनिक स्थानों पर लगे लाउडस्पीकरों की जांच की। जांच के दौरान 58 लाउडस्पीकर की ध्वनि मानक के अनुरूप कराया गया। जबकि 26 स्थानों से लाउडस्पीकर को हटवाया गया।

अंबेडकरनगर जिले में धार्मिक स्थलों से उतारे 283 लाउडस्पीकर

अंबेडकरनगर जिले के सभी पांच तहसील क्षेत्रों में सोमवार को मंदिरों, मस्जिदों व गुरुद्वारों से लाउडस्पीकर उतारने का विशेष अभियान चला। इस दौरान 283 लाउडस्पीकर उतारे गए। चेतावनी भी दी कि यदि दोबारा लाउडस्पीकर लगाया गया तो संबंधित पर कार्रवाई की जाएगी।

बाराबंकी में 88 धार्मिक स्थलों से लाउडस्पीकर हटाए

बाराबंकी जिले में धार्मिक स्थलों पर लगे लाउडस्पीकर मानक से अधिक ध्वनि पर बजाए जा रहे हैं। इसे लेकर सोमवार की सुबह से शाम तक पुलिस द्वारा चेकिंग अभियान चलाया गया। जिले भर में 868 धार्मिक स्थलों पर पुलिस पहुंची। चेकिंग में 338 स्थान पर मानक के विपरीत लाउडस्पीकर मिले। 88 लाउडस्पीकर उतार दिए गए वहीं 252 लाउडस्पीकरों की आवाज कम करा दी गई। कई जगह पुलिस को विरोध का सामना भी करना पड़ा।

अयोध्या में लाउडस्पीकर उतारने के लिए चलाया अभियान

अयोध्या जिले में एसएसपी राजकरन नय्यर के नेतृत्व में पुलिस ने जिले में विभिन्न स्थानों पर अभियान के तहत धार्मिक स्थलों पर लगे लाउडस्पीकर उतरवाए। चौक घंटाघर के पास लाउडस्पीकर उतरवाते हुए उन्होंने उलमा व धर्मगुरुओं से संवाद भी स्थापित किया।

बहराइच जिले में धार्मिक स्थलों से उतरवाए गए लाउडस्पीकर

बहराइच जिले में रविवार शाम व सोमवार को विभिन्न थाना क्षेत्रों में बिना अनुमति लगाए गए लाउस्पीकरों के खिलाफ अभियान चलाया गया। धार्मिक स्थलों पर लगे लाउडस्पीकरों को पुलिस ने उतरवाया। बिना अनुमति दोबारा न लगाने की हिदायत दी।

रायबरेली में धार्मिक स्थलों पर बिना परमीशन लगे 17 लाउड स्पीकर उतारे

रायबरेली में 18 थाना क्षेत्रों में बिना परमीशन लगाए गए लाउड स्पीकरों को हटाने का अभियान चलाया गया। अभियान के तहत 17 लाउड स्पीकरों को उतरवाया गया है। हिदायत दी गई कि बिना परमीशन दोबारा लाउड स्पीकर लगाने पर कार्रवाई होगी। मंदिरों के पुजारियों, मस्जिदों के इमामों से बात की और उन्हें शासन के आदेश के संबंध में जानकारी दी। साथ ही अतिरिक्त लाउड स्पीकरों को हटवाया गया। एसपी ने बताया कि जिलेभर में धार्मिक स्थलों पर 508 लाउड स्पीकर चेक कराए गए। इसमें बिना परमीशन लगे 17 लाउड स्पीकर हटवा दिए गए। उन्होंने बताया कि 21 लोगों को शासन के निर्देश का पालन करते हुए लाउड स्पीकर नहीं बजाने की हिदायत दी गई।

गोंडा में 40 धार्मिक स्थलों से हटाए लाउडस्पीकर

गोंडा जिले में अलग-अलग थानों की पुलिस ने सोमवार को मानकों को दरकिनार कर बजाए जा रहे लाउडस्पीकर पर रोक लगाने के लिए अभियान शुरू किया है। पहले दिन 40 धार्मिक स्थलों से लाउडस्पीकर हटवाए गए। साथ ही एक हजार के करीब स्थलों पर तेज ध्वनि में लाउडस्पीकर बजाने को लेकर चेतावनी दी गई है।

एक नज़र

निकाह में हर्ष फायरिंग का वीडियो वायरल

लखनऊ। निकाह में अगवानी के समय बग्घी पर चढ़कर बंदूक से हर्ष फायरिंग करते एक युवक का वीडियो सोमवार को वायरल हुआ। पुलिस ने आरोपी के नहीं मिलने पर उसके भाई को हिरासत में ले लिया। कैसरबाग इंस्पेक्टर सुधाकर सिंह के मुताबिक जांच में पता चला कि वायरल वीडियो क्षेत्र के लालबाग पैलेस का है। जहां शनिवार को कैसरबाग के जंबूरखाना निवासी दानिश का निकाह था। बग्घी पर दानिश के साथ उसका छोटा भाई राज भी सवार था। राज ने लालबाग पैलेस के गेट पर बग्घी रुकवा ली और दोनाली लाइसेंसी बंदूक से तीन राउंड हर्ष फायरिंग की। तभी किसी ने उसका वीडियो बनाकर सोमवार को सोशल मीडिया में वायरल कर दिया। इसका पता चलते ही राज भाग निकला। इंस्पेक्टर के मुताबिक दानिश को हिरासत में लेकर लाइसेंसी बंदूक जब्त कर ली है। लाइसेंस निरस्त करने की रिपोर्ट बनाकर भेजी गई है।

25 लाख के गहने व पिस्टल चोरी

लखनऊ। राजाजीपुरम में बंद पड़े मकान का रविवार रात ताला तोड़कर चोरों ने पिस्टल, कारतूस, मैगजीन, नकदी, जेवर सहित करीब 25 लाख का माल पार कर दिया। पुलिस व फोरेंसिक टीम ने जांच की है। तालकटोरा के राजाजीपुरम एफ-3273 में शहाना परवीन दो बेटियों व दामाद नदीम अहमद के साथ रहती हैं। प्रॉपर्टी डीलर नदीम काम के सिलसिले में कुछ दिनों पहले मुंबई गए थे। 25 नवंबर की शाम शहाना घर में ताला लगाकर बेटियों के साथ अपने मायके तकिया चांद अली शाह ऐशबाग चली गई थीं। सोमवार सुबह दामाद ने शहाना को फोन कर बताया कि पड़ोसी ने मकान के गेट का ताला टूटने की सूचना दी है। शहाना घर पहुंचीं तो कमरों में सामान बिखरा पड़ा था। अलमारी का लॉकर टूटा था। उसमें से उनके व बेटियों के हीरे और सोने के करीब 25 लाख के जेवर गायब थे। साथ ही दामाद की लाइसेंसी पिस्टल, पांच कारतूस, मैगजीन व 80 हजार नकदी भी चोरी हो गई। तालकटोरा इंस्पेक्टर ने बताया कि रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है।

पूर्व प्रधान को बंधक बना पीटने के तीनों आरोपी गिरफ्तार

लखनऊ। गुरुबख्शगंज चौराहे पर पूर्व प्रधान की पिटाई करने के तीनों आरोपियों को पुलिस ने सोमवार को गिफ्तार कर लिया। इस घटना में घायल पूर्व प्रधान का ट्रॉमा सेंटर, लखनऊ में इलाज चल रहा है। उन्नाव जिले के मौरावां क्षेत्र के संग्राम खेड़ा मजरे गुलरिहा के पूर्व प्रधान बलबीर सिंह के बैंक खाते से गुरुबख्शगंज चौराहा स्थित सहज जन सुविधा केंद्र के माध्यम से रुपये निकाल लिए गए थे। इसकी जानकारी होने पर बलवीर रविवार को पूछताछ करने सुविधा केंद्र पर पहुंचे जहां संचालक ने विवाद हो गया। आरोप है कि केंद्र संचालक व उसके दो साथियों ने पूर्व प्रधान को कमरे में बंदकर डंडों से बुरी तरह पीटा। इस घटना में गंभीर रूप से घायल पूर्व प्रधान को जिला अस्पताल से लखनऊ रेफर किया गया था। एसओ प्रवीर गौतम ने बताया कि घायल के चचेरे भाई अवनीश सिंह की तहरीर पर गुरुबख्शगंज के गढ़ी दूलाराय निवासी आशीष सिंह, सरेनी के लखनापुर निवासी अमन सिंह, पंकज कुमार के खिलाफ केस दर्ज कर तीनों को गिरफ्तार कर लिया गया है।

बीबीएयू में प्रवेश जारी और परीक्षाएं आज से

लखनऊ। बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय को कुछ दिन पहले ही नैक मूल्यांकन में ए प्लस प्लस ग्रेड मिला है। इसके साथ ही इस केंद्रीय विश्वविद्यालय में एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है। यहां पर जिस कोर्स की परीक्षाएं मंगलवार से शुरू हो रही हैं, उसके लिए 24 नवंबर तक आवेदन मांगे गए थे। यानी कि प्रवेश प्रक्रिया अभी चल रही है और परीक्षाएं शुरू कर दी गईं। विवि में मंगलवार से यूजी व पीजी कोर्स के प्रथम व तृतीय सेमेस्टर में मिड सेमेस्टर की परीक्षाएं शुरू हो रही हैं। वहीं दूसरी ओर 59 कोर्स की खाली 1300 सीटों पर दाखिले के लिए 24 नवंबर तक आवेदन मांगे गए थे। अभी इनकी प्रवेश प्रक्रिया चल रही है। बीबीएयू के मुख्य कैंपस में संचालित एमए, एमएससी, एमबीए, बीकॉम, बीबीए, बीएएलएलबी, बीटेक व बीएड सहित 51 कोर्स के मिड सेमेस्टर की परीक्षाओं को लेकर नोटिस जारी कर दी गई है। 28 नवंबर से चार दिसंबर तक यूजी और पीजी कोर्स की प्रथम व तृतीय सेमेस्टर में मिड सेमेस्टर की परीक्षा होगी। अमेठी सैटेलाइट कैंपस के बीसीए, बीए व बीएससी के कुल आठ कोर्स के खाली सीटों पर दाखिले लिए बिना ही परीक्षाएं शुरू होंगी।

कोर्स वर्क के साथ परीक्षाओं में भी देरी

विवि के एक प्रोफेसर ने बताया कि विवि के टाइम टेबल के आधार पर ही परीक्षाएं शुरु हो रही हैं। लेकिन जिन छात्रों के अभी तक दाखिले नहीं हुए हैं, उनके पाठ्यक्रम कब शुरू होंगे और परीक्षाएं कब होंगी, यह कोई नहीं जानता। उन्होंने बताया कि कोविड काल से जुलाई में दाखिले होने की प्रक्रिया पीछे होने लगी थी। नतीजा यह निकला कि कोर्स वर्क के साथ परीक्षाओं में भी विलंब होने लगा है। इसकी वजह से छात्रों का बड़ा नुकसान हो रहा है।

पिछले सेमेस्टर के परिणाम आए नहीं, अगले सेमेस्टर की परीक्षा शुरू

बीबीएयू में न केवल परीक्षाओं में देरी हो रही है बल्कि पिछले सेमेस्टर के परिणाम आए बिना ही अगले सेमेस्टर की परीक्षाएं शुरु हो गई हैं। छात्रों ने बताया कि राष्ट्रीय स्तर पर विश्वविद्यालय को बेहतर बनाने का दावा किया जा रहा है लेकिन कोर्स वर्क में किसी तरह का सुधार नहीं हो रहा है। पहले विवि अपने स्तर पर परीक्षाएं व परिणाम जारी करता था, अब समर्थ पोर्टल पर जब तक सभी कोर्स वर्क व अन्य जानकारी अपडेट नहीं हो जाती तब तक परीक्षा परिणाम जारी नहीं होते हैं। छात्रों ने कोर्स के साथ परीक्षा प्रणाली में सुधार की मांग की है।

थाना रोजा पुलिस, एसओजी व सर्विलांस सेल की संयुक्त टीम द्वारा 3 लाख 77 हजार ,120 रूपयों की छिनैती की घटना का सफल अनावरण कर 03 शातिर अभियुक्तों को किया गया गिरफ्तार

❖ **छीने गये रूपये, मोबाइल फोन , बैग व घटना मे प्रयुक्त वाहन बरामद।**

द अचीवर टाइम्स फसाद खान

शाहजहांपुर। अशोक कुमार मीणा, पुलिस अधीक्षक, शाहजहाँपुर के कुशल निर्देशन मे सुधीर जयसवाल, अपर पुलिस अधीक्षक, नगर, शाहजहाँपुर व अमित चौरसिया, क्षेत्राधिकारी सदर के कुशल पर्यवेक्षण मे थाना रोजा व एसओजी की संयुक्त टीम द्वारा चोरी व लूट की घटनाओं के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम मे दिनांक 27/11/2023 को समय करीब 02.40 बजे रात्रि को मु0अ0सं0 749/23 धारा 392/120क्र/420/406/201/411 भा.द.वि बनाम अज्ञात के वादी/ अभियुक्त विशाल जयसवाल पुत्र विनोद जयसवाल निवासी सहदेवपुर थाना निगोही जनपद शाहजहाँपुर व उसके साथी कमल गुप्ता पुत्र रामदास गुप्ता निवासी मोहल्ला सूर्य नगर थाना कलान जिला शाहजहाँपुर व पुरुषोत्तम पुत्र भूरे सिंह यादव निवासी ग्राम वजीरगंज थाना कलान जनपद शाहजहाँपुर को अटसलिया की ओर करीब 50 कदम दूरी से समय करीब 02.40 बजे गिरफ्तार किया गया , जिनके कब्जे से बरामदगी 2लाख 72 हजार 330 रूपये नगद मय तीन पिठ्ठू बैग व तीन अदद मोबाइल फोन व घटना मे प्रयुक्त वाहन स्पलेन्डर मोटरसाईकिल बिना नम्बर प्लेट बरामद हुऐ । घटना मे छीने गये शेष एक लाख रूपये अभियुक्त पुरुषोत्तम द्वारा दिनांक 25/11/2023 को फरुख्खाबाद मे अपने बैंक आफ बड़ोदा के खाते मे जमा कराये गये जिनको फ्रीज कराया जा रहा है। अभियुक्तगणों को गिरफ्तार कर जेल भेजा जा रहा है।

गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम 1. .प्रभारी निरीक्षक राजीव कुमार, थाना रोजा, जनपद शाहजहाँपुर। 2. प्रभारी निरीक्षक, रितेन्द्र प्रताप सिंह, (एसओजी/साइबर क्राइम), जनपद शाहजहाँपुर। 3. उ0नि0 नीरज कुमार सिंह, थाना रोजा, जनपद शाहजहाँपुर। 4. हे0का0 ओमकार सिंह, थाना रोजा, जनपद शाहजहाँपुर। 5. हे0का0 ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह (एसओजी), जनपद शाहजहाँपुर। 6. हे0का0 उदयवारी सिह (एसओजी), जनपद शाहजहाँपुर। 7. हे0का0 तौसीम हैदर (एसओजी), जनपद शाहजहाँपुर। 8. हे0का0 राम संजीवन (एसओजी), जनपद शाहजहाँपुर। 9. का0 दिलिप कुमार (एसओजी), जनपद शाहजहाँपुर। 10. का0 कमल कुमार (एसओजी), जनपद शाहजहाँपुर। 11. चालक हे0का0 कपिल ठाकुर (एसओजी), जनपद शाहजहाँपुर। 12. का0 1982 शिवम कुमार, सर्विलांस सेल, शाहजहाँपुर। 13. का0 1805 प्रभात कुमार, सर्विलांस सेल, जनपद शाहजहाँपुर। 14. का0 सचिन कुमार, सर्विलांस सेल, शाहजहाँपुर। 15. का0 राजन, थाना रोजा, जनपद शाहजहाँपुर । 16. का0 गौरव, थाना रोजा, जनपद शाहजहाँपुर ।

राजभर को अब दिल्ली से आस शाह से करेंगे मुलाकात

संवाददाता

लखनऊ। भाजपा के नेतृत्व वाली एनडीए में शामिल होने के बाद से ही मंत्री बनने को लेकर तारीख पर तारीख की घोषणा करने वाले सुभासपा अध्यक्ष ओम प्रकाश राजभर अब नाउम्मीद हो चुके हैं। ऐसे में उन्हें अब दिल्ली से ही उम्मीद बची है। इसी उम्मीद को पुख्ता करने के लिए राजभर जल्द दिल्ली कूच करने वाले हैं। वहां केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा से मिलकर अपनी बात रखेंगे। शाह से राजभर की 30 नवंबर को मुलाकात प्रस्तावित है। बता दें कि एनडीए में शामिल होने के बाद से ही राजभर खुद के अलावा घोसी विधानसभा में उप चुनाव में हारने वाले पूर्व मंत्री दारा सिंह चौहान के भी मंत्री बनने का दावा करते रहे हैं। इसके लिए उन्होंने कई बार मीडिया के सामने भी सार्वजनिक तौर पर शपथ लेने की तारीख भी घोषित किया था। अंतिम बार राजभर में 7 नवंबर की तिथि घोषित किया था. लेकिन इस तारीख पर भी उनकी ताजपोशी नहीं हो पाई। ऐसे में अब वह स्थानीय स्तर से नाउम्मीद हो चुके हैं। शपथ की नई तारीख के बारे में पुछने पर अब राजभर बहुत सधे अंदाज में कहते हैं कि उनका मंत्री बनना तो तय है, लेकिन कब होगा यह तो भाजपा नेतृत्व को तय करना है।

अग्निवीर महिला सैन्य पुलिस भर्ती रैली में दिखाया जुनून

संवाददाता

लखनऊ। सर्द मौसम में महिला सैन्य पुलिस भर्ती रैली में शामिल होने पहुंचीं अभ्यर्थियों ने देशप्रेम के जज्बे के साथ अपनी ताकत का भी परिचय दिया। आर्मी मेडिकल कोर (एएमसी) स्टेडियम में सोमवार को शुरू हुई दो दिवसीय रैली में आई अभ्यर्थियों के दमखम को अफसरों ने भी सराहा। मध्य कमान के जनसम्पर्क अधिकारी शांतनु प्रताप सिंह ने बताया कि पुरुषों के लिए अग्निवीर भर्ती रैली गत 16 नवम्बर से शुरू हुई थी, जो 22 को समाप्त हुई। इसी क्रम में अब सोमवार को अग्निवीर महिला सैन्य पुलिस भर्ती रैली का शुभारंभ हुआ है। पहले दिन 780 अभ्यर्थियों का पंजीकरण हुआ था, जिसमें से 500 अभ्यर्थियों ने ही आमद दर्ज कराई। दो दिवसीय भर्ती रैली में कुल 15 सौ अभ्यर्थियों को शामिल होना है। शांतनु प्रताप सिंह ने बताया कि भर्ती रैली में यूपी व उत्तराखंड की अभ्यर्थियों को शामिल होना है। सुबह सात बजे से ही अभ्यर्थियों की एंट्री शुरू हो गई थी। एंट्री के बाद पहले चरण में 16 सौ मीटर की दौड़ हुई, जिसमें अभ्यर्थियों ने जोश का परिचय दिया। दौड़ में पास होने वाली अभ्यर्थियों को लॉन्ग व हाई जम्प में शामिल होने का अवसर मिला, जहां उन्होंने अपना दमखम दिखाया। मंगलवार को भी अभ्यर्थी रैली में शामिल होंगी। फिजिकल टेस्ट के बाद पास होने वाली अभ्यर्थियों की सूची जारी होगी, जिनकी ट्रेनिंग बंगलूरू में कराई जाएगी।

नए नियमों के साथ विधानमंडल का शीतकालीन सत्र आज से

संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधानमंडल का शीतकालीन सत्र मंगलवार से शुरू होगा। प्रदेश सरकार की ओर से 29 नवंबर को वित्तीय वर्ष 2023-24 का पहला अनुपूरक बजट पेश किया जाएगा। चार दिवसीय सत्र एक दिसंबर तक संचालित होगा।

उत्तर प्रदेश विधानमंडल का शीतकालीन सत्र मंगलवार से शुरू होगा। प्रदेश सरकार की ओर से 29 नवंबर को वित्तीय वर्ष 2023-24 का पहला अनुपूरक बजट पेश किया जाएगा। चार दिवसीय सत्र एक दिसंबर तक संचालित होगा। विधानसभा में मंगलवार को पहले दिन लखनऊ पूर्वी से भाजपा विधायक रहे स्वर्गीय आशुतोष टंडन गोपाल के निधन पर शोक व्यक्त करने के साथ ही सदन की कार्यवाही स्थगित हो जाएगी। 29 नवंबर को वित्त मंत्री सुरेश खन्ना अनुपरक बजट पेश करेंगे। सरकार की ओर से सदन में करीब छह अध्यादेश को विधेयक के रूप में पेश किया जाएगा। नेता प्रतिपक्ष अखिलेश यादव अनुपूरक बजट के खिलाफ सदन में अपनी बात रखेंगे। वहीं नेता सदन और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अनुपूरक बजट के पक्ष में सदन को संबोधित करने के साथ विपक्ष के आरोपों का जवाब देंगे।

नई नियमावली से सत्र- मोबाइल, बैनर व झंडा नहीं ला सकेंगे माननीय

शीतकालीन सत्र की कार्यवाही विधानसभा की कार्य संचालन नियमावली 2023 के अनुसार संचालित होगी। नई नियमावली के तहत विधायक सदन में मोबाइल, बैनर, झंडा और शस्त्र लेकर प्रवेश नहीं कर सकेंगे। माननीय सदन में प्रदेश में किसी भी जगह से वर्चुअली भी शामिल हो सकेंगे। सदस्य सदन में विधानसभा अध्यक्ष के आसन के पास भी नहीं जा सकेंगे। इतना ही नहीं उच्चाधिकार प्राप्त आचरण पर तब तक आरोप नहीं लगा सकेंगे जब तक की उचित रूप से रखे गए मूल प्रस्ताव पर आधारित न हो। सदन में बोलते समय दर्शक दीर्घा में किसी अजनबी की ओर संकेत नहीं कर सकेंगे, न ही उसकी प्रशंसा कर सकेंगे। लॉबी में भी तेज आवाज में न तो बात कर सकेंगे न ही हंस सकेंगे।

एस0के0डी0 एकेडमी का वार्षिकोत्सव वृन्दावन शाखा में बच्चों ने किए कई रंगारंग कार्यक्रम

द अचीवर टाइम्स दीपक कनौजिया।

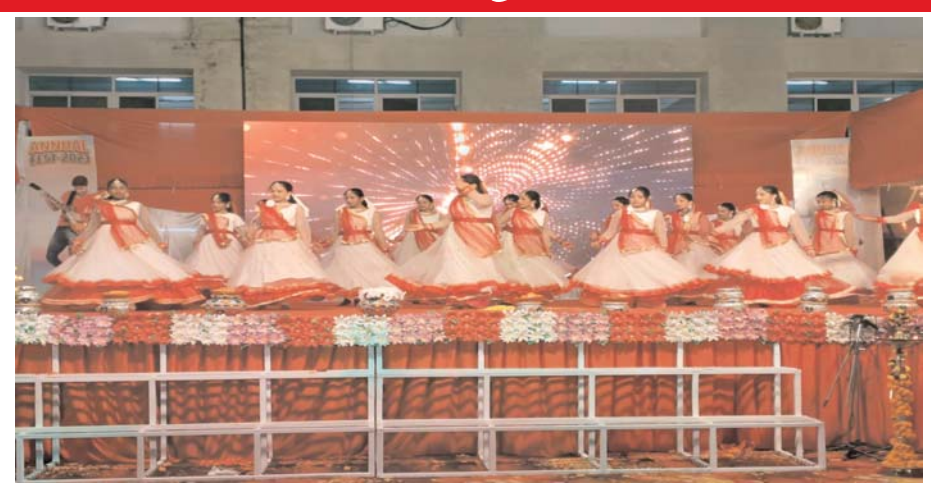

लखनऊ। आज एस0के0डी0 एकेडमी का वार्षिकोत्सव के तीसरे दिन ई-ब्लॉक राजाजीपुरम शाखा का समारोह जलसंस्थान शाखा में तथा जल संस्थान शाखा का समारोह वृन्दावन शाखा में हुआ जिसमें प्री प्राइमरी से 1 व 2 से 11 तक के बच्चों द्वारा कई रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। समारोह का शुभारम्भ दानिश आजाद अंसारी उत्तर प्रदेश सरकार अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री अमिताभ रंजन, रेजिस्ट्रार आई.आई.पी.ए. एवं डॉ0 किया पाण्डेय, एच.ओ.डी. मानव शास्त्र लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा दीप प्रज्वलन से हुआ। तत्पश्चात् चेयरमैन एस.के.डी. सिंह, निदेशक मनीष सिंह, उप निदेशक निशा सिंह एवं सह निदेशक कुसुम बत्तरा द्वारा मुख्य अतिथि को स्मृति चिह्न, शाल व पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया गया। ई-ब्लाक शाखा की प्रधानाचार्या डॉ0 शैली श्रीवास्तव एवं जलसंस्थान शाखा की प्रधानाचार्या अन्जू सिंह जी ने धन्यवाद भाषण द्वारा उपस्थित मुख्य अतिथी, अभिभावकों, प्रेस व मीडिया तथा शहर के गणमान्य नागरिकों का अभिनन्दन किया। बच्चों ने सरस्वती वन्दना एवं स्वागत नृत्य के साथ कार्यक्रमों की शुरूआत की एवं रेन्बो ऑफ होप, खोल दो सारे बन्धन द्वारा मोहक प्रस्तुतियाँ दीं। इसके अलावा कार्यक्रमों के बीच ही बच्चों ने कई संदेश भी दिये जैसे ÷अतुल्य भारत÷ अदि बच्चों ने इंग्लिश प्ले ÷द मैन मोस्ट एक्सट्रा आर्डनरी मशीन द्वारा मनमोहक प्रस्तुति दी। जिसको दर्शकों ने बहुत सराहा। साथ ही बच्चों ने ÷लहरा दो परचम जीत का कार्यक्रम द्वारा अपने अभिनय से सभी अभिभावकों, एवं अतिथी गणों का मन मोह लिया। मुख्य अतिथि ने बच्चों द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रमों की मुक्त कण्ठ से सराहना की एवं कहा कि विद्यालय में शिक्षा के साथ-साथ बच्चों को अपने संस्कारों विशिष्ट संस्कृति से जोड़ने का प्रयास किया जाता है जो वाकई प्रशंसनीय है। उन्होने कहा कि आज कल बच्चों इतनी अधिक क्षमता एवं टैलेंट है और विद्यालय के प्रोत्साहन से उसमें और भी निखार आता है। वार्षिकोत्सव के अधिकतर कार्यक्रम अपने अंदर कोई न कोई संदेश छुपाए हुए हैं जो हमें झकझोरने का काम करते हैं। विद्यालय के निदेशक मनीष सिंह ने आये अतिथि व अभिभावकों के सहयोग की सराहना करते हुए बच्चों के खूबसूरत प्रस्तुतीकरण की प्रशंसा करते हुए कहा कि, ÷हमारे एस0 के0 डी0 के संस्थापक एस.के. डी. सिंह एवं निदेशक मनीष सिंह जी का हमेशा यह प्रयास रहा है कि विद्यालय में विद्यार्थी का समुचित विकास हो इसीलिए शिक्षा के साथ उनके लिए समय-समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रम, बच्चो की गाइडेन्स हेतु होने वाली वर्कशाप आदि आयोजित किये जाते हैं उन्होंने आगे मानव और मशीन के कार्यक्रम के बारे में बताते हुए कहा गया कि हमारे जीवन के आधुनिकता एवं मशीन का योगदान होना चाहिए नाकि आधुनिकता व मशीन हम पर हावी होना चाहिए। इसके लिए हम अपने सभी माननीय अतिथियों का अपने अभिभावकों के सहयोग व स्नेह के हमेशा आभारी रहेंगे। साथ ही जो भी संदेशात्मक प्रस्तुतियां हमारे बच्चों ने पेश की उसमें जो भी संदेश है उसको हमारा पूर्ण विद्यालय अमल करता है चाहे वो पेड़ लगाने का पर्यावरण बचाने का या जल संरक्षण का हो। विद्यालय के संस्थापक प्रबंधक एस0के0डी0 सिंह जी ने सभी कार्यक्रमों की प्रशंसा करते हुए बच्चों को अपना आशीर्वाद दिया व कहा कि ÷बच्चों ने जो कार्यक्रम प्रस्तुत किये वो न केवल हमारा मनोरंजन करते हैं बल्कि हमारी संस्कृति, सभ्यता व अखण्डता से परिचित कराते हैं। लगभग सभी कार्यक्रम हम बड़ों को कोई न कोई संदेश देते हैं। हमें बच्चों के इन प्रयासों व उनकी भावनाओं को सदा उनके भीतर जिन्दा रखना है ताकि यही भावनाएं उन्हें एक सभ्य व अनुशासित भारतीय बनने में व भारत के विकास में सहयोग दें।

सम्पादकीय

अंतरात्मा की आवाज बताती - क्या सही है और क्या गलत है?

अंतरात्मा स्वभाव से सत्य का प्रतिनिधित्व करती है और इसलिए अपने आप में सही दिशा दर्शाती है। अंतरात्मा असल में हमारी स्वभाविक और स्वस्थ स्थिति में होती है, लेकिन हमारे मन के विभिन्न विचार, भावनाएं, और इंद्रियों के प्रभाव के कारण हम अक्सर उसे अनदेखा करते हैं। जब हम अपने मन को शांत करते हैं और संज्ञान बढ़ाते हैं, तब हम अंतरात्मा से जुड़ने लगते हैं और उसकी आवाज सुन पाते हैं। इसलिए, अंतरात्मा की आवाज कभी गलत दिशा नहीं दिखाती है। यह हमेशा हमें सही दिशा में ले जाने की कोशिश करती है और हमारी उन्नति और सुख-शांति के लिए हमें निरंतर प्रेरित करती है। हालांकि, हमारे मन के अधीन होकर हम अपनी अंतरात्मा की आवाज को नहीं सुन पाते हैं और उससे अलग हो जाते हैं। नैतिक कम्पास एक शब्द है जिसका उपयोग हमारे सही और गलत की आंतरिक भावना का वर्णन करने के लिए किया जाता है जो हमारे कार्यों को निर्देशित करने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है। विवेक एक व्यक्ति की आंतरिक नैतिक भावना है जो उसे अपने व्यवहार को विनियमित करने के लिए मार्गदर्शन करती है। अंतरात्मा की आवाज एक आंतरिक आवाज से मेल खाती है जो आपके व्यवहार का न्याय करती है। अंतरात्मा की आवाज कई लोगों के लिए नैतिक निर्णय लेने का स्रोत है। विवेक को हम में से प्रत्येक के भीतर कुछ के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो हमें बताता है कि क्या सही है और क्या गलत है। इसलिए, यदि कोई निर्णय लेते समय अपने विवेक का उपयोग करता है तो वह इस बात से निर्देशित होगा कि क्या करना सही है और क्या गलत। पारंपरिक परीक्षण नैतिक निर्णय लेने के तरीकों को लागू करना है जैसे अधिकार सिद्धांत जो हमें दूसरों के अधिकारों का सम्मान करने और उनके प्रति अपने दायित्वों को पूरा करने के लिए बाध्य करता है। एक अन्य दृष्टिकोण है हितधारकों पर कार्रवाई के वैकल्पिक पाठ्यक्रमों के संभावित लाभ और नुकसान का मूल्यांकन करना जो हमारे संभावित कार्यों से प्रभावित हो सकते हैं और शुद्ध लाभ को अधिकतम करने वाले को चुनें। हमारा विवेक हमारा आंतरिक मार्गदर्शक है और यह आपको यह पता लगाने में मदद करता है कि अच्छे चुनाव कैसे करें। जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, हम गलत से सही सीखते हैं। हमारा विवेक वह विचार और भावना है जो हमारे पास है जो हमें बताता है कि कुछ करना या कहना सही है या गलत। इस प्रकार विवेक की आवाज नैतिक निर्णय लेने के लिए एक सतत मार्गदर्शक है। एक व्यक्ति रुककर और मुद्दे के आयामों के बारे में सोच कर खुद को अंतरात्मा की आवाज सुनने के लिए तैयार कर सकता है। एक इंसान हमेशा निर्णय लेने की प्रक्रिया में नैतिक दुविधाओं का सामना करता है। विवेक की आवाज सही निर्णय लेने के लिए मार्गदर्शक के रूप में कार्य करती है जब हमें किसी दिए गए, आमतौर पर अवांछनीय या उलझन में डालने वाली स्थिति में सिद्धांतों के प्रतिस्पर्धी सेटों के बीच चयन करना होता है। उदाहरण~ साक्षात्कार के लिए जाते समय दुर्घटना के शिकार व्यक्ति की सहायता करना। एक व्यक्ति की अंतरात्मा की आवाज विभिन्न दृष्टिकोणों से स्थिति का विश्लेषण करने और सही निर्णय लेने में मदद करती है। विवेक की आवाज बेहतर निर्णय लेने के लिए हितों के टकराव से बचने में मदद करती है। यह व्यक्तिगत लाभ और लोक कल्याण के बीच निर्णय लेने में मदद कर सकता है। विवेक की आवाज नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों के आलोक में व्यावहारिक निर्णय लेने की हमारी क्षमता है। अंतरात्मा की आवाज एक व्यक्ति के सही और गलत के साथ-साथ उसके कार्यों की चेतना का नैतिक दिक्सूचक है। %आंत महसूस करना% और %अपराधबोध% जैसी अभिव्यक्तियाँ अक्सर विवेक के साथ संयोजन में उपयोग की जाती हैं। अंतरात्मा की आवाज अलग-अलग परिस्थितियों में अलग-अलग सिद्धांतों और अलग-अलग व्यवहारों का सुझाव दे सकती है। लेकिन यह एक पल के लिए व्यक्ति को सार्वभौमिक मूल्यों के आधार पर गलत नहीं करने में मदद करता है। विशुद्ध रूप से स्वार्थ से कार्य करना, सर्वोत्तम रूप से, हमें मूल स्थिति के समानांतर रखता है और यदि हमारे कार्य दूसरों को नुकसान पहुँचाते हैं तो हम अपनी दिशा को दक्षिण की ओर मोड़ सकते हैं। सत्यनिष्ठा का जीवन जीकर हम उस दिशा में जाने से बचते हैं। हमें यह समझने और सराहना करने की भी आवश्यकता है कि हमें कार्य करने से पहले दूसरों की आवश्यकताओं पर विचार क्यों करना चाहिए। हम केवल गोल्डन रूल पर वापस जा सकते हैं~ दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा आप चाहते हैं कि वे आपके साथ व्यवहार करें। हममें से कोई भी, संभवतः, अनादर नहीं चाहता है इसलिए हमें दूसरों के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करना चाहिए। अंतरात्मा स्वभाव से सत्य का प्रतिनिधित्व करती है और इसलिए अपने आप में सही दिशा दर्शाती है। अंतरात्मा असल में हमारी स्वभाविक और स्वस्थ स्थिति में होती है, लेकिन हमारे मन के विभिन्न विचार, भावनाएं, और इंद्रियों के प्रभाव के कारण हम अक्सर उसे अनदेखा करते हैं। जब हम अपने मन को शांत करते हैं और संज्ञान बढ़ाते हैं, तब हम अंतरात्मा से जुड़ने लगते हैं और उसकी आवाज सुन पाते हैं। इसलिए, अंतरात्मा की आवाज कभी गलत दिशा नहीं दिखाती है। यह हमेशा हमें सही दिशा में ले जाने की कोशिश करती है और हमारी उन्नति और सुख-शांति के लिए हमें निरंतर प्रेरित करती है। हालांकि, हमारे मन के अधीन होकर हम अपनी अंतरात्मा की आवाज को नहीं सुन पाते हैं और उससे अलग हो जाते हैं।

सोशल मीडिया पर नग्नता का नंगा नाच

-डॉ. सत्यवान सौरभ

जीवन का चरमसुख अब फॉलोअर्स पाने और कमेंट आने पर निर्भर हो गया है। फेसबुक जैसे प्लेटफॉर्म पर नग्न अवस्था में तस्वीरें शेयर कर आज लड़कियां लाइक कमेंट पाकर खुद को अनुगृहित करती दिखाई देती है मानो जीवन की सबसे अहम और जरूरी ऊंचाई को उन्होंने पा लिया हो। इस नग्नता को हम आधुनिकता के इस दौर में न्यू फैशन कहते हैं। सोशल मीडिया पर फैशन की उबाल आई तो सोशल नेटवर्क पर युवा पीढ़ी ने खुद को खूबसूरत युवतियों से पीछे पाया, फिर क्या युवकों ने खुद की नग्नता का नंगा नाच शुरू किया कहा मैं पीछे कैसे ? युवा अपने यौवन को दिखाते घूम रहे हैं मैं किसी से कम नहीं। पहले के जमाने में बड़े बुजुर्ग इस तरह की हरकतों पर नकेल कसते थे। खैर जमाना आधुनिक है इस लिए समाज इसे स्वीकारता और आनंदित होता है। ऐसे बिगड़ैल यूट्यूबर के इंटरव्यूज होना और भी अचरज की बात है।सोशल मीडिया पर आजकल जो ये फॉलोवर बढ़ाने के लिए जो नग्नता परोसी जा रही है। क्या उसमें परोसने वाले ही दोषी हैं? क्या उसको लाइक और शेयर करने वाले दोषी नहीं हैं ? मेरे हिसाब से तो वो ज्यादा दोषी हैं। अगर हम ऐसी पोस्ट या वीडियो को लाइक शेयर करना ही बंद कर दें तो क्या ये बंद नहीं हो सकता ? पूरा देश नग्नता के लिए फिल्मों को दोष देता है परंतु आज सोशल मीडिया (सामाजिक पटल) पर इतनी भयंकर नग्नता है कि हमारी जो भारतीय फिल्में को भी शर्म आ जाए। आज कोई भी सोशल प्लेटफार्म अछूता नहीं है फूहड़पन और नग्नता से। सोशल मीडिया के अंधे दौर में कुछ लाइक और व्यू पाने के लिए हमारे समाज की नारियों को कैसे लक्षित किया जा रहा है और उन्हें नग्नता परोसना पड़ रहा है। और वो लाइक और व्यू के आसमान में उड़ने के लिए नग्नता परोस स्वयं के मान सम्मान स्वाभिमान का सौदा आसानी से कर रही है। कुछ चप्पल छाप यूट्यूबर्स लोग केवल व्यू पाने के लिए हमारी आस्था पर इस तरह के अश्लीलता वाले थम्बनेल लगाते हैं। किससे क्या कहें? जीवन का चरमसुख अब फॉलोअर्स पाने और कमेंट आने पर निर्भर हो गया है। फेसबुक जैसे प्लेटफॉर्म पर नग्न अवस्था में तस्वीरें शेयर कर आज लड़कियां लाइक कमेंट पाकर खुद को अनुगृहित करती दिखाई देती है, मानो जीवन की सबसे अहम और जरूरी ऊंचाई को उन्होंने पा लिया हो। इस नग्नता को हम आधुनिकता के इस दौर में न्यू फैशन कहते हैं। सोशल मीडिया पर फैशन की उबाल आई तो सोशल नेटवर्क पर युवा पीढ़ी ने खुद को खूबसूरत युवतियों से पीछे पाया, फिर क्या युवकों ने खुद की नग्नता का नंगा नाच शुरू किया और कहा, मैं पीछे कैसे ? युवा अपने यौवन को दिखाते घूम रहे हैं मैं किसी से कम नहीं। ऐसे बिगड़ैल यूट्यूबर के इंटरव्यूज होना और भी अचरज की बात है। पहले के जमाने में बड़े बुजुर्ग इस तरह की हरकतों पर नकेल कसते थे। खैर जमाना आधुनिक है इस लिए समाज इसे स्वीकारता और आनंदित होता है। पर ये बहुत ही गम्भीरता से सोचने का विषय है - हमारे घरों के छोटे-छोटे बच्चे किस दिशा में जा रहे हैं। माता-पिता क्यों जानबूझ कर अनदेखा कर रहें हैं? क्यों नहीं अपने बच्चों को टाईम और संस्कार देना चाहते हैं? क्यों अपने हाथो अपने बच्चो को दलदल में धकेल रहें हैं। आजकल के माता-पिता बहुत ज्यादा मार्डन है और उन्हें नंगापन, बॉयफ्रेंड और मार्डन परिवेश बेहद आकर्षित करती है। ये आने वाली पीढ़ी और समाज के लिए घातक सिद्ध होगा। टीनएजर लड़कियों की मनःस्थिति को अपने खास मकसद के मुताबिक ढाला जा रहा है। अब तो सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मस आभासी नग्नता के अड्डे बने हुए हैं। वल्गर रील्स और वीडियोस तो अब हर घर के टीनेजरस बना ही रहे हैं। अब तो ऐसा महसूस होने लगा है कि वैश्यावृति के अड्डे भी नये विकल्पों के साथ हवस परस्त मर्दो के लिए उपलब्ध हो गए हैं। सोशल मीडिया पर आजकल जो ये फॉलोवर बढ़ाने के लिए जो नग्नता परोसी जा रही है। क्या उसमें परोसने वाले ही दोषी हैं? क्या उसको लाइक और शेयर करने वाले दोषी नहीं हैं ? मेरे हिसाब से तो वो ज्यादा दोषी हैं। अगर हम ऐसी पोस्ट या वीडियो को लाइक शेयर करना ही बंद कर दें तो क्या ये बंद नहीं हो सकता ? आज सामाजिक विकार अपने सफर के सफलतम पड़ाव में है। रोकथाम की कोई गुंजाइश नही है। अब तो प्रलय ही इसकी गति को रोक सकती है। सोशल मीडिया में रील्स पर नग्न और अश्लील नृत्य की नौटंकी करने वाली बेटियों से निवेदन है कि चंद काग़ज़ के टुकड़ों के लिए अपने परिवार और धर्म की इज्जत तार-तार ना करो। पैसे आपको आज नृत्य के लिए नही अपितु नग्नता परोसने के लिए दिए जा रहे है ताकि पूरे समाज को एक दिन रसातल में धकेल कर नीचा दिखाया जा सके। हमारी संस्कृति ही नहीं बचेगी तो तो हमारे राष्ट्र का और आने वाली पीढ़ियों का दुर्गुणों से विनाश होने से कोई बचा नहीं सकता है। अभी समझे कि संस्कृति क्या है और इसे बचाना क्यों जरूरी है। यह हमारे राष्ट्र का स्वाभिमान है। हमें चाहिए अश्लीलता और नग्नता मुक्त समाज अपनी नष्ट हो रहे सभ्यता और संस्कृति की रक्षा करें। बॉलीवुड की अश्लीलता, नग्नता और गाली गलौज से भरी फिल्मों और वेब सीरीज का बहिष्कार करें। अश्लील गाना एवं अश्लील फिल्मों का बहिष्कार करें। सोशल मीडिया में ट्वीटर, फेसबुक आदि ऐसे प्लेटफार्म हैं जिसके माध्यम से लोग अपने विचार, अभिव्यक्ति के साथ किसी महत्वपूर्ण जानकारी का प्रेषण करते हैं। किन्तु वर्तमान में इन प्लेटफार्मो मे अश्लील,आपत्तिजनक व नग्नता पूर्ण मैसेज व विज्ञापन की भरभार होने के साथ जुए जैसे खेलों को खेलने के लिए प्रोत्साहित कर सामाजिक प्रदूषण फैलाया जा रहा है। हमारे नौनिहाल, बहन बेटी भी इन प्लेटफार्मो का बहुतायत उपयोग करते है। इस प्रदूषण पर अंकुश लगवाने के लिए सभी को सोचना होगा और खुद पहल करनी होगी। आज चेतना चाहिए नहीं तो कल रास्तों में होगा नंगा नाच। आप देश का भविष्य हो, कठपुतली मत बनो। स्वच्छंदता के नाम पर फूहड़ता सोशल मीडिया के इस दौर में अपने चरम पर है। हमारी संस्कृति में स्त्री को धन की संज्ञा से नवाजा गया वो भी बहुमूल्य न कि टके बराबर। इसलिए राजदरबारो में होने वाले मुजरे भी चारदीवारो के अंदर ही होते थे। सत्य यह है की अश्लीलता को किसी भी दृष्टिकोण से सही नहीं ठहराया जा सकता। ये कम उम्र के बच्चों को यौन अपराधों की तरफ ले जाने वाली एक नशे की दुकान है और इसका उत्पादन आज सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म स्त्री समुदाय के साथ मिलकर कर रहा है। मस्तिष्क विज्ञान के अनुसार 4 तरह के नशों में एक नशा अश्लीलता से भी है। आचार्य कौटिल्य ने चाणक्य सूत्र में वासना% को सबसे बड़ा नशा और बीमारी बताया है। यदि यह नग्नता आधुनिकता का प्रतीक है तो फिर पूरा नग्न होकर स्त्रियां पूर्ण आधुनिकता का परिचय क्यों नहीं देती? गली- गली और हर मोहल्ले में जिस तरह शराब की दुकान खोल देने पर बच्चों पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता है उसी तरह अश्लीलता समाज में यौन अपराधों को जन्म देती है। इसको किसी भी तरह उचित नहीं ठहराया जा सकता है। विचार करिए और चर्चा करिए या फिर मौन धारण कर लीजिए।

पनौती का भौकाल और भौकाल की पनौती!

अलबत्ता दो बातें गौर करने लायक है कि आज के जमाने में राजनीति की भाषा हिंदी के देशज मुहावरे की ओर लौट रही है और उतनी ही मारक भी है। शब्द लोक से उपजते हैं, लेकिन राजनीति उन्हें नए अर्थ और आयाम देती है। इन दिनो दो नितांत देशज शब्दों पर जमकर सियासत हो रही है और ये सियासत भी नकारात्मक है। ये शब्द हैं 'पनौती' और 'भौकाल।' साहित्य और बोलचाल में ये शब्द एकदम नए नहीं हैं, लेकिन सियासत में इनका इस्तेमाल अब एक दूसरे का नकाब उतारने के लिए उसी रूप में हो रहा है, जो शायद इन शब्दों का मूल भाव है। यानी पनौती में भी भौकाल देखा जा रहा है और भौकाल के भीतर छिपी पनौती से डराया जा रहा है। अलबत्ता दो बातें गौर करने लायक है कि आज के जमाने में राजनीति की भाषा हिंदी के देशज मुहावरे की ओर लौट रही है और उतनी ही मारक भी है। इसकी सचाई पर बहस हो सकती है, लेकिन दिलचस्प बात ये है कि इन शब्दों का प्रयोग उन राहुल गांधी और प्रियंका गांधी की ओर से हुआ है, जिनकी हिंदी पर पकड़ को लेकर अक्सर सवाल उठाए जाते रहे हैं। हिंदी में 'पनौती' शब्द नया नहीं है। लेकिन राजनीतिक भाषा में इसके प्रयोग कुछ नया है। पनौती हिंदी के पन शब्द में औती प्रत्यय को जोड़कर बना है। इसका भावार्थ किसी भी व्यक्ति के अपशकुनी अथवा अमंगल होने से है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने राजस्थान में चुनाव प्रचार के दौरान कि कहा कि अच्छा भला वहां पे हमारे लड़के आईसीसी वर्ल्ड कप जीत जाते... वहां पर पनौती ने हरवा दिया। टीवी वाले ये नहीं कहेंगे मगर जनता जानती है।% राहुल के इस कमेंट पर चुनाव आयोग ने उन्हें नोटिस थमा दिया। हालांकि इसके पहले मोदी ने राहुल को 'मूर्खों का सरदार' बताया था और राहुल द्वारा मोदी को पनौती बताने पर मप्र के मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान ने राहुल को 'राष्ट्रीय शर्म' तक कहा था। भाजपा ने इस शब्द प्रयोग के लिए राहुल गांधी से माफी मांगने को कहा तो उधर असम के मुख्यमंत्री और पूर्व कांग्रेसी हिमंत बिस्वास सरमा ने %पनौती% के लिए पूरे गांधी परिवार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि %गांधी फैमिली के जन्मदिन पर देश में कोई शुभ काम हो ही नहीं सकता।% संयोग से 19 नवंबर को वर्ल्ड कप फाइनल वाले दिन इंदिरा गांधी की जयंती थी। इसी संदर्भ में कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी ने उम्मीद जताई थी कि इस मौके पर टीम इंडिया ही चैंपियन बनेगी। इसमें यह छुपा संदेश भी था कि 1983 में जब भारतीय क्रिकेट टीम पहली बार वन डे वर्ल्ड चैंपियन बनी थी, तब इंदिरा गांधी ही देश की प्रधानमंत्री थीं। जवाब में भाजपा आईटी सेल की ओर से कहा गया कि 1982 में नई दिल्ली में हुए एशियाई खेलों में हॉकी के सेमी फाइनल में पाकिस्तानी टीम ने भारत को 7-1 से हराया था। उस वक्त स्टेडियम में पीए इंदिराजी और भावी पीएम राजीव गांधी मौजूद थे। भाजपा का सवाल था कि प्रतिप्रश्न किया कि यहां पनौती किसे कहेंगे? यूं किसी की मौजूदगी भर को हार जीत से जोड़ना टोटका हो सकता है, तार्किक आधार नहीं। फिर भी राहुल ने जो कहा वह सीधा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उनकी आत्ममुग्ध कार्यशैली पर हमला था। क्योंकि फाइनल मैच में मोदी खुद स्टेडियम में मौजूद थे। राहुल की मानें तो पीएम मोदी की उपस्थिति भारतीय टीम के लिए अशुभ साबित हुई और वो पूरे टूर्नामेंट में अच्छा खेलने के बाद भी फाइनल में ऑस्ट्रेलिया से मात खा गई। 140 करोड़ लोगों के अरमानों पर पानी फिर गया। इस आरोप में छिपा संदेश यही था कि मोदी की मौजूदगी देश के लिए शुभ नहीं है। यह आरोप अपने आप में राजनीतिक गुगली थी, जिसके जरिए प्रधानमंत्री के जनसमर्थन का स्टम्प उखाड़ने की कोशिश की गई। राहुल के इसी आरोप को तमाम विपक्षी पार्टियों ने अपने ढंग से दोहराया। शिवसेना (उद्धव) और ममता बैनर्जी ने कहा कि यदि फाइनल मैच मुंबई या कोलकाता में होता तो टीम रोहित हर हाल में जीतती। हालांकि इस सवाल का कोई जवाब नहीं है कि यदि ऐसा होता भी तो क्या पीएम मोदी वहां भी जाते और जाते तो नतीजा क्या अहमदाबाद से अलग आता? दबी जबान से यह आरोप भी सामने आए कि अहमदाबाद में भारतीय टीम की संभावित जीत को राजनीतिक श्रेय में बदलने की पूरी तैयारी थी, जिसे टीम कमिंस ने पहले ही ध्वस्त कर दिया। कहा यह भी गया कि नमो स्टेडियम की जिस पिच नंबर पांच पर फाइनल मैच हुआ, उसी ने ऐन वक्त पर दगा दे दिया। वरना वर्ल्ड कप विजेता का सेहरा भारतीय टीम के सिर ही बंधता। चूंकि फाइनल नरेन्द्र मोदी के गृहराज्य अहमदाबाद के नमो स्टेडियम में रखा गया, पीएम वहां खुद मौजूद रहे, इसीलिए भारतीय टीम पर अनावश्यक मनोवैज्ञानिक दबाव बना, इसीलिए भारत विश्व विजेता बनते बनते रह गया। यानी कि छक्के के लिए मारा जाने वाला शॉट भी बाउंड्री पर कैच हो जाए तो वह हार की पनौती है। हालांकि टीम रोहित की हार के बावजूद प्रधानमंत्री ने ड्रेसिंग रूम में जाकर भारतीय खिलाड़ियों की हौसला अफजाई की सदाशयता जरूर दिखाई। वैसे सुधि लोगों का मानना है कि नेताओं को खेलों से दूर ही रहना चाहिए। क्योंकि खेल से प्रतिष्ठा और पैसा मिल सकता है, वोट नहीं। वो चाहें तो जीत-हार के बाद खिलाड़ियों से मिल सकते हैं। दरअसल नेताओं के खिलाड़ियों को चीयर करने और आम खेल प्रेमियों के चीयर करने में बुनियादी फर्क यह है कि नेता चीयर करते- करते खुद 'चीयरलीडर' बनने का मोह नहीं टाल पाते। जबकि आम खेल प्रशंसक अपनी चहेती टीम को भी प्रभु के प्रसाद की तरह ही ग्रहण करता है। इसलिए 'राजनीतिक पनौती' और साधारण 'पनौती' में फर्क है। पनौती दुर्भाग्य की धारणा को मूर्त रूप देने का दुराग्रह है। वह असल में एक लक्षित सिर है, जिस पर हार, अपयश अथवा विनाश का ठीकरा फोड़ा जा सकता है। वैसे यह काम भाजपा राहुल गांधी को लेकर बहुत पहले से करती आ रही है। लेकिन वह 'पनौती' शब्द के इस्तेमाल से बचती रही है। अब राहुल ने (हालांकि वो हिंदी के इस देशज शब्द की मार को कितना ठीक से समझते हैं, पता नहीं) इसी ब्रह्मास्त्र का उपयोग अपने चुनाव प्रचार में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के खिलाफ किया। भाजपा इस आरोप से बिलबिला गई है और अब राजनीतिक शब्दावली में %पनौती% कई प्लेटफार्मो और सोशल मीडिया में खूब ट्रेंड कर रहा है। प्रसिद्ध लेखिका मालती जोशी की एक कहानी है 'मैं चुनौती हूं, पनौती नहीं।' इसमें नायिका अपने संघर्ष और दृढ़ संकल्प से आर्थिक संकटों से घिरे परिवार को बखूबी संभालती है, जबकि उसका पति और ससुराल वाले आर्थिक बदहाली के लिए उसे ही जिम्मेदार ठहराते हैं। कुछ राजनीतिक भाषा विज्ञानियों का मानना है कि चुनाव प्रचार में पीएम मोदी के लिए %पनौती% का प्रयोग भाजपा द्वारा राहुल के लिए अब किए जाते रहे 'पप्पू' शब्द का सियासी जवाब है। जो दूसरा शब्द इन दिनो राजनीतिक स्क्रीन पर खूब ट्रेंड हुआ है और वो है 'भौकाल।' इसके बारे में कहा जाता है कि यह उत्तर प्रदेश और खासकर लखनऊ और अवध के इलाके की बोली का शब्द है। भौकाल का अर्थ है बनावटी रूतबा.. मरतबा या हनक। जानकारों के मुताबिक भौकाल बनाया जाता है, मचाया जाता है और दिखाया भी जाता है। यानी खुद को बढ़ाचढ़ाकर पेश करने की कोशिश। दूसरे शब्दों में कहें तो भौकाल किसी शख्स का ऐसा जलवा है, जिसका निगेटिव एप्रिसियेशन किया जाता है। भाषा शास्त्री इसका अर्थ %समय को संबोधित% (भो+काल) करने से जोड़ते हैं। कहते हैं कि राजनीति में इस शब्द का प्रयोग सबसे पहले स्व. मुलायम सिंह की बहू अपर्णा यादव ने एक दशक पहले तत्कालीन अखिलेश सरकार की कार्य शैली पर कटाक्ष के रूप में किया था। उन्होंने कहा था कि %यूपी में तो बस भौकाल मंत्रालय चलता है। लोगों का अटेंशन अपनी ओर खींचना ही अगर भौकाल है तो अवश्य ही मैं भौकाली हूं।% अब इसी शब्द का उपयोग प्रियंका गांधी ने चुनाव प्रचार के दौरान किया। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ताओं ने मुझसे बड़ी गाड़ी में बैठने का अनुरोध किया। मैंने पूछा कि क्यों तो जवाब मिला कि दीदी आजकल भौकाल (दिखावे) की राजनीति है। जनता की समस्याओं से कोई लेना देना नहीं है। चुनाव प्रचार में ये दोनो शब्द जिस भी नीयत और समझ से इस्तेमाल किए गए हों, लेकिन ये हमारे देश की वर्तमान राजनीति और उसके चरित्र को बखूबी प्रतिबिम्बित करते हैं। दुर्भाग्य से सत्ता के खेल में आपसी कटुता और विद्वेष इस निचले स्तर तक पहुंच गया है कि असल खेल में हार जीत भी अब राजनीतिक पनौती का बायस है। दूसरी तरफ सियासत में %भौकाल %अब एक जरूरी फैक्टर बन चुका है। यह वास्तव में झूठ को सच के रैपर में लपेट कर जनता को बेचने का मार्केटिंग स्किल है। यक्ष प्रश्न उस जनता के सामने है कि वो किसे %पनौती% माने और किसके %भौकाल% को हकीकत समझे।

डॉक्टरी बना कारोबार, झोलाछाप कर रहे उपचार

-प्रियंका सौरभ

देशभर में खासकर गांवों में बिना जरूरी डिग्री वाले डॉक्टरों की भरमार है। कोई तीन-चार साल तक मेडिकल स्टोर पर काम करने के बाद डॉक्टर बन जा रहा है, तो किसी के पूर्वज इलाज करते आ रहे हैं। ये लोग मरीजों को दर्द निवारक दवाएं व इंजेक्शन की बदौलत तुरंत आराम तो दिला देते लेकिन इसका दुष्प्रभाव मरीजों को भुगतना पड़ रहा है। ये झोलाछाप डॉक्टर (वे डॉक्टर जो न तो पंजीकृत हैं और न ही उनके पास उचित डिग्री है) नकली दवाओं के साथ इलाज कर मरीजों के जीवन से खिलवाड़ कर रहे है। ऐसा भी देखा गया है कि कई झोलाछाप डाक्टर नशे के व्यापार से भी जुड़े हुए हैं। ऐसे में गावों में चल रहे ये क्लीनिक नशेड़ियों की पौध को पैदा करने में जुटे हुए है। मगर देश भर में प्रशासन को जानकारी के बावजूद इन पर नकेल कसने की कोई कार्रवाई अंजाम नहीं दी जाती। पूरी दुनिया में डॉक्टर भगवान् के रूप में लोगों को नज़र आये है और ऐसा हो भी क्यों न? दूसरों को निस्वार्थ भाव से जिंदगी उपहार देने वाले भगवान ही तो है। मगर सरकारी आँकड़ों के अनुसार भारत के 1।3 बिलियन लोगों के लिये देश में सिर्फ 10 लाख पंजीकृत डॉक्टर हैं। इस हिसाब अगर देखा जाये तो भारत में प्रत्येक 13000 नागरिकों पर मात्र 1 डॉक्टर मौजूद है। जबकि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इस संदर्भ में 1~1000 अनुपात को जायज़ और जरूरी मानता है, यानी हमारे देश में प्रत्येक 1000 नागरिकों पर 1 डॉक्टर होना अनिवार्य है। लेकिन ऐसा करने के लिए भारत को वर्तमान में मौजूदा डॉक्टरों की संख्या को कई गुना करना होगा। जहाँ एक ओर शहरी क्षेत्रों में 58 प्रतिशत योग्य चिकित्सक है, वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में यह आँकड़ा 19 प्रतिशत से भी कम है। योग्य चिकित्सकों के अभाव में देश में में झोलाछाप डाक्टरों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इन झोलाछाप डॉक्टरों के कारण मरीजों की जान सासत में है। इस मामले में स्वास्थ्य विभाग आखें मूंदे बैठा है। विभाग की अनदेखी के कारण झोलाछाप डाक्टर चाँदी कूट रहे है। गाँवों में तो ये स्थिति और भी बदतर है। भारत के प्रत्येक गाव में कई-कई झोलाछाप डाक्टर मरीजों को लूट रहे हैं। यह धधा इतना चंगा हो गया है कि लोग धड़ल्ले से इस व्यवसाय में एंट्री कर रहे है। गावों में इस प्रकार के झोलाछाप डाक्टर सरेआम क्लीनिक चलाकर लोगों को बेवकूफ बना रहे हैं। स्वास्थ्य विभाग की अनदेखी से देश में बड़ी संख्या में झोलाछाप पनप रहे हैं। गांवों से लेकर शहरों तक हर जगह ऐसे डॉक्टर क्लीनिक खोलकर मरीजों का इलाज कर रहे हैं, जिनके पास मेडिकल की डिग्री तक नहीं है। अधिकांश डॉक्टर तो इंटरमीडिएट या स्नातक पास होते हैं। मरीजों की हालत बिगड़ने पर शहर के किसी निजी अस्पताल में रेफर कर देते हैं। इसका इनको कमीशन भी मिल जाता है। इस कमीशन का भार भी मरीज पर पड़ता है। माने तो इन झोलाछाप का धंधा स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों की मेहरबानी से चल रहा है। इन अवैध कारोबारियों पर स्वास्थ्य महकमे के आला अधिकारियों की अनदेखी से इनके गोरखधंधे पर कोई आंच नहीं आती। इन झोलाछाप डॉक्टरों (वे डॉक्टर जो न तो पंजीकृत हैं और न ही उनके पास उचित डिग्री है) की संस्कृति हमारी स्वास्थ्य प्रणाली के लिये काफी खतरनाक है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अपनी रिपोर्ट में बताया है कि भारत में 57।3त्न डॉक्टर वास्तव में बिना मेडिकल डिग्री के हैं। और, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि उनमें से ज्यादातर देश के ग्रामीण इलाकों में पाए जाते हैं। इंडियन मेडिकल काउंसिल एक्ट 1956, दिल्ली मेडिकल काउंसिल एक्ट 1997, ड्रग्स एंड कॉस्मेटिक्स एक्ट 1940 और ड्रग्स एंड कॉस्मेटिक्स रूल्स 1945 में कहा गया है कि केवल एक रजिस्टर्ड डॉक्टर ही एलोपैथिक दवा लिख सकता है। ÷भारतीय चिकित्सा पद्धति के लिए, भारतीय चिकित्सा केंद्रीय परिषद अधिनियम, 1970 कहता है कि भारतीय चिकित्सा पद्धति के अभ्यासी के अलावा कोई भी व्यक्ति जो किसी मान्यता प्राप्त चिकित्सा योग्यता रखता है और किसी राज्य रजिस्टर या भारतीय चिकित्सा के केंद्रीय रजिस्टर में नामांकित है, भारतीय में मेडिकल और किसी भी राज्य में मरीजों के लिए दवा लिखेगा। इसके अलावा यदि कोई अन्य ऐसा करता पाया तो उसके लिए इंडियन मेडिकल काउंसिल एक्ट, 1956 में कारावास की सजा का उल्लेख है जो एक वर्ष तक का हो सकता है या जुर्माना जो 1,000 रुपये तक हो सकता है या दोनों हो सकता है, दिल्ली मेडिकल काउंसिल एक्ट, 1997 के तहत क्लॉज (27) में %कठोर दंड% का उल्लेख किया गया है । इसमें तीन साल तक की कैद या 20,000 रुपये तक का जुर्माना या दोनों हो सकते है। भारतीय दंड संहिता भी इन मामलों को धारा 429 (प्रतिरूपण), 420 (धोखाधड़ी) और 120 क्क (आपराधिक षड्यंत्र) के तहत देखती है। मगर इतना होने के बावजूद देश में ऐसा हो क्यों रहा है? इस धंधे के इतना फूलने-फलने का कारण सरकारी स्वास्थ्य सेवाओं की कमी है। साथ ही जो सरकारी मेडिकल अफसर है वो बड़े घरों से आते है और खासकर गाँवों में मरीज देखना पसंद नहीं करते, जिसकी वजह से उनका ध्यान अपने प्राइवेट हॉस्पिटल पर ज्यादा रहता है। झोलाछाप का धंधा फलने फूलने के पीछे स्वास्थ्य केंद्रों पर तैनात डॉक्टरों की लापरवाही है। सामुदायिक व प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों पर मरीजों को समय से डॉक्टर नहीं मिलते। गावों के लोगों को सरकार द्वारा स्थापित स्वास्थ्य केंन्द्रों में डॉक्टरों की कमी के कारण मरीजों को इन झोलाछाप डॉक्टरों की शरण में जाना पड़ रहा है। गांवों में बिना जरूरी डिग्री वाले डॉक्टरों की भरमार है। कोई तीन-चार साल तक मेडिकल स्टोर पर काम करने के बाद डॉक्टर बन जा रहा है, तो किसी के पूर्वज इलाज करते आ रहे हैं। ये लोग मरीजों को दर्द निवारक दवाएं व इंजेक्शन की बदौलत तुरंत आराम तो दिला देते लेकिन इसका दुष्प्रभाव मरीजों को भुगतना पड़ रहा है। ये झोलाछाप डॉक्टर नकली दवाओं के साथ इलाज कर मरीजों के जीवन से खिलवाड़ कर रहे है। ऐसा भी देखा गया है कि कई झोलाछाप डाक्टर नशे के व्यापार से भी जुड़े हुए हैं। ऐसे में गावों में चल रहे ये क्लीनिक नशेड़ियों की पौध को पैदा करने में जुटे हुए है। मगर देश भर में प्रशासन को जानकारी के बावजूद इन पर नकेल कसने की कोई कार्रवाई अंजाम नहीं दी जाती। इन फर्जी डॉक्टरों द्वारा मरीजों के जीवन से खिलवाड़ किया जा रहा है। देश भर में जगह-जगह बिना रजिस्ट्रेशन वाले डॉक्टर क्लीनिक चला रहे हैं। इतना ही नहीं क्लीनिकों के नाम बड़े शहरों के क्लीनिकों की तर्ज पर रखते है, जिससे लोग आसानी से प्रभावित हो जाते है। मरीज अच्छा डॉक्टर समझकर इलाज करवाते हैं, लेकिन उन्हें इस बात का पता नहीं रहता है कि उनका इलाज भगवान भरोसे किया जा रहा है। फर्जी डाक्टरों ने इस धंधे को और लाभदायक बनाने के लिए निजी अस्पतालों से भी सांठगांठ कर रखी है। मरीज की हालत ज्यादा गंभीर होने पर वो उसे वहां भेज देते हैं, जहां से उन्हें कमीशन के तौर पर फायदा होता है। फर्जी डॉक्टरों का ग्रामीण क्षेत्रों में धंधा खूब फल-फूल रहा है। फर्जी डॉक्टर ग्राम स्तर पर शाखाएं जमाए हुए हैं और बड़े डॉक्टरों की तर्ज पर बिना संसाधनों के क्लीनिक चलाते हैं। फर्जी डॉक्टर वहीं दवा लिखते है जिनमें उन्हें कमीशन मिलता है। अक्सर ऐसे मामले देखने को मिलते है कि फर्जी डॉक्टरों के इलाज से मरीज की जान पर आफत आ जाती है । हमारी शिक्षा प्रणांली भी ऐसे धंधों के को पनपाने में बराबर कि दोषी है। देश में हर साल कई फर्जी संस्थान हैं जो असंख्य फर्जी मेडिकल डिग्री सौंपते हैं। राजनेताओं के ऐसे निजी शिक्षा संस्थाओं से निहित स्वार्थ है जो इन सबको बढ़ावा दे रहे है। सरकार को ऐसे संस्थानों पर लगाम लगानी चाहिए। केंद्रीय स्वास्थय मंत्रालयों को देश भर में जिला प्रशासन के साथ मिलकर इन झोलाछाप डॉक्टरों पर नकेल कसनी चाहिए और लोगों को भी इस दिशा में स्वयं जागरूक होना चाहिए कि वो इन झोलाछाप के पास न जाकर अपने गाँव के सरकारी स्वास्थ्य केंद्र पर जाये। ग्रामीण पंचायतों को इस दिशा में ये प्रयास करना चाहिए कि उनके गाँव में स्वास्थ्य केंद्र पर कोई स्टाफ और जरूरी चिकित्सा सेवा उपकरणों की कमी न हो। अगर ऐसा है तो वो सरकार से मांग कर उनको सर्वप्रथम पूरा करवाए। सरकारी चिकित्सिकों पर जहां ड्यूटी है वहां रात को भी रुकने की पाबंदी लगाई जाये। ग्रामीण क्षेत्र में सर्विस का नियम हर चिकित्सा कर्मी पर लागू कर उनके प्राइवेट प्रैक्टिस पर कानूनी पाबन्दी हो तो ये झोलाछाप स्वतः ही खत्म हो जायँगे।

डीएम की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में मनाया गया दहेज प्रतिषेध दिवस

संवाददाता

उरई (जालौन)। दहेज प्रतिषेध दिवस के अवसर पर कलेक्ट्रेट सभागार में जिलाधिकारी राजेश कुमार पाण्डेय की अध्यक्षता में महिला कल्याण विभाग की ओर से संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का शुभारंभ जिलाधिकारी राजेश कुमार पाण्डेय, मुख्य विकास अधिकारी भीमजी उपाध्याय, अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व संजय कुमार, मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. एनडी शर्मा ने दीप प्रज्वलित कर किया । संगोष्ठी को संबोधित करते हुए जिलाधिकारी ने कहा की अपने लोगों संबंधियों तथा बेटे बेटियों को दहेज न लेने न देने के लिए प्रेरित करें तथा समाज में होने वाले दहेज वाली शादियों का सामाजिक बहिष्कार करने के लिए प्रेरित करें। दहेज एक सामाजिक अभिशाप है इसे हम सब मिलकर रोकने के लिए जन जागरूकता अभियान चलाएं। जिलाधिकारी ने जिला प्रोवेशन अधिकारी को निर्देशित किया कि समस्त विद्यालयों में महाविद्यालयों में तथा ग्राम पंचायतों में दहेज प्रतिषेध विषय पर संगोष्ठियां आयोजित करे तथा आम जन में यह संदेश देने का प्रयास करें कि दहेज सामाजिक अभिशाप है जिससे समाज में कई तरह की कुरीतियां पनपत्ति है तथा जिसके कारण कई घर अनावश्यक कर्ज के बोझ तले दब जाते हैं। बच्चे अपनी शादी बगैर दहेज के करें तथा अपने जीवन सादगी के साथ व्यतीत करें। मुख्य विकास अधिकारी भीमजी उपाध्याय ने संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा कि समाज में होने वाले आडंबर पूर्ण तथा भव्य शादियों को रोकना होगा तभी दहेज रूपी दानव को हम समाज से बहिष्कृत कर सकते हैं जब तक लोगों में भव्य शादियों के प्रति आकर्षण बना रहेगा तब तक दहेज किसी न किसी रूप में चाहे उपहार के रूप में चाहे भव्यता के रूप में विराजमान रहेगा इसे दूर करने के लिए युवा पीढ़ी को पहल करनी होगी।मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर एन डी शर्मा ने कहा कि युवा पीढ़ी को पहल करने की आवश्यकता है तभी इस सामाजिक कुरीति से मुक्ति मिल सकती है।

अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व संजय कुमार ने कहा कि दहेज एक सामाजिक अभिशाप है इसे दूर करने का हम सबको मिलकर के आवाहन करने की आवश्यकता है तथा जन भागीदारी से इस सामाजिक कुरीति को दूर किया जा सकता है।अपर जिलाधिकारी नमामि गंगे विशाल कुमार यादव ने कहा की सबके प्रयास से ही इस सामाजिक कुरीति को दूर किया जा सकता है आइए हम सब मिलकर शपथ लें की विवाह में न तो दहेज लेंगे न हीं दहेज देंगे। आज के कार्यक्रम में दहेज प्रथा रोकने को लेकर गरिमा पाठक ने मार्मिक गीत प्रस्तुत किया। दहेज के लिए बेटियां जलाइ न जाए । सब मिलकर दहेज रुपी दानव को परिवार समाज तथा देश से बहिष्कृत करें ताकि एक समृद्ध समाज व सशक्त समाज का निर्माण हो सके। मुख्य कोषाधिकारी आशुतोष चतुर्वेदी ने संबोधित करते हुए कहा की प्राचीन काल से किसी न किसी रूप में समाज में दहेज उपहार के रुप में मौजूद रहा है पर समाज जैसे-जैसे शिक्षित हुआ है दहेज में कमी आई है पर इसका रूप परिवर्तित हुआ है। अब बच्चे जागरुक होते जा रहे हैं स्वावलंबी होने के साथ अंतरजातीय विवाह तथा दहेज के लेन देन में भी कमी आई है। कार्यक्रम में जहां अलकमा अख्तर ने कविता के माध्यम से दहेज रूपी दानव को समाप्त करने का आवाहन किया। रिचा द्विवेदी ने कविता के माध्यम से दहेज मुक्त समाज की परिकल्पना को साकार करने के लिए आवाह्न किया।कार्यक्रम में सिटी मजिस्ट्रेट दिनेश कुमार, उप जिलाधिकारी सौरभ पाण्डेय, जिला कार्यक्रम अधिकारी इफ्तिखार अहमद, बेसिक शिक्षा अधिकारी चंद्र प्रकाश, अपर जिला सूचना अधिकारी पंकज तिवारी, बाल कल्याण समिति के अध्यक्ष सतीश चंद्र,एस के चौधरी, विनीता बाथम, गरिमा पाठक, वन स्टॉप सेंटर की केंद्र प्रबंधक अंजना , प्रवीणा यादव, अलकमा अख्तर, नीतू, रचना कुशवाहा, रिचा द्विवेदी, रागिनी, वीर सिंह, आदर्श, राहुल, जितेंद्र, हर्षित, जूली तथा सामाजिक कार्यकर्ता अवध नारायण द्विवेदी व अन्य समस्त कार्मिक मौजूद रहे।अंत में जिला प्रोवेशन अधिकारी डॉ अमरेंद्र कुमार पौत्स्यायन ने संगोष्ठी में प्रतिभाग करने वाले समस्त अधिकारियों व प्रतिभागियों का आभार व्यक्त कर आज के संगोष्ठी का समापन किया।

पिछला उधार मांगने गए लोगों ने व्यापारी के साथ की मारपीट

व्यापारी ने उक्त लोगों पर रंगदारी मांगने का लगाया आरोप

पीड़ित जगत नारायण गुप्ता

संवाददाता

कालपी जालौन। मामला जनपद जालौन के कालपी कोतवाली का बताया जा रहा है जहां 25 नवम्बर को क़रीब शाम 5 बजे जगत नारायण गुप्ता उर्फ (फोकस) पुत्र केशव नारायण गुप्ता निवासी रावगंज कालपी रोज की तरह अपने भाई उदय नारायण गुप्ता की दुकान मे बैठा था। जो कि मुख्य बाजार स्थिति उरई फाटक के नीचे बनी हुई है। तभी वहां कुछ अराजकतत्व नशे मे धुत होकर आए और पिछले जुआ का उधार का पैसा मागने लगे जिसे पीड़ित ने देने से मना कर दिया। जिसको लेकर तू तू मैं मै होने लगीं। बाद विवाद इतना बड़ गया कि मामला मारपीट तक आ गया। उक्त लोगों ने जगत नारायण गुप्ता से मारपीट करने लगे। दूकान में बैठा उनके पुत्र विवेक गुप्ता ने जब बीच बचाव किया तो वो लोग उसे भी मरने पीटने लगे जिससे उसे काफ़ी चोट आई है। दिन दहाडे बीच बजार ये हाई वोल्टेज ड्रामा चलता रहा। पीड़ित ने जिसकी शिक़ायत डायल 112 से की जिसने मौके पर पहुंच कर जांच की और टरननगंज चौकी इंचार्ज को विवाद के मामले से अवगत कराया। पीड़ित जगत नारायण गुप्ता ने बताया कि वह शाम को टरननगंज चौकी को लिखित प्रार्थना पत्र देकर उक्त लोगों पर कठोर कार्यवाही करने की मांग की है। टरननगंज चौकी प्रभारी अभिलाख सिंह ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। दोषियों पर जल्द से जल्द कार्यवाही अमल में लाई जाएगी।

एक नज़र

पटरी से उतरी इंटरसिटी की चाल, घंटों की देरी से चल रही

झांसी। झांसी-लखनऊ इंटरसिटी की चाल एक बार फिर पटरी से उतर गई है। यह ट्रेन घंटों की देरी से चल रही है। इससे कानपुर, लखनऊ की ओर आने-जाने वाले कर्मचारियों को खासी परेशानी उठानी पड़ रही है। झांसी से चलने वाली इंटरसिटी चिरगांव, मोंठ, एट, उरई, पुखरायां, कालपी, गोविंदपुरी, कानपुर व उन्नाव स्टेशन पर ठहराव लेते हुए लखनऊ पहुंचती है। लखनऊ से इसके चलने का समय शाम 4.40 बजे है, परंतु शनिवार को यह दो घंटे और रविवार को सवा घंटे की देरी से चली। शुक्रवार को यह गाड़ी सवा चार घंटे की देरी से झांसी आई थी, जबकि शनिवार को पौने दो घंटे की देर से यहां पहुंची थी। इसके अलावा यहां से भी यह गाड़ी लगातार देरी से चल रही है। रेलवे के पीआरओ मनोज कुमार सिंह ने बताया कि कतिपय कारणों से गाड़ी विलंबित हो जाती है। इसका समय लगातार सुधारा जा रहा है।

बरेली में रामगंगा घाट पर उमड़ा आस्था का सैलाब, श्रद्धालुओं ने स्नान कर किया दान-पुण्य

बरेली। रामगंगा चौबारी घाट पर तड़के चार बजे से ही स्नान का सिलसिला शुरू हो गया। हर-हर गंगे से घाट गुंजायमान हो गया। श्रद्धालुओं ने स्नान के बाद दान-पुण्य कर चौबारी मेले में खरीदारी की। बरेली में कार्तिक पूर्णिमा पर सोमवार को रामगंगा के घाटों पर श्रद्धालु का सैलाब उमड़ पड़ा। चौबारी मेले में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी है। तड़के चार बजे से ही स्नान का सिलसिला शुरू हो गया। हर-हर गंगे से घाट गूंज उठे। चौबारी घाट पर स्नान के लिए आने वाले श्रद्धालुओं को कोई परेशान न हो, इसके लिए व्यापक इंतजाम किए गए हैं। रविवार को भी घाटों की साफ-सफाई को अंति म रूप देने का काम चलता रहा। रामगंगा चौबारी मेले में कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे हैं। रविवार शाम से ही श्रद्धालुओं के पहुंचने का सिलसिला शुरू हो गया था। तड़के स्नान, पूजन और दान के बाद मेले में खरीदारों की भीड़ उमड़ने लगी। बच्चे, युवक और युवतियां झूले का आनंद लेते दिखाई दिए।

घाटों पर की गई बैरिकेडिंग

मेला प्रबंध समिति के प्रबंधक अमरजीत सिंह ने बताया कि स्नान के लिए घाटों को साफ-सफाई करवाकर पहले ही तैयार करवा दिया गया। सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए बैरिकेडिंग भी लगा दी गई है। घाट के पास ही महिलाओं के लिए अलग से चेंजिंग रूम बनाया गया है। समिति की ओर से 21 गोताखोरों को तैनात किया गया है। सीसीटीवी कैमरों को भी लगाया गया है। आचार्य पंडित प्रखर मिश्रा ने बताया कि पूर्णिमा तिथि रविवार को दोपहर 3¬52 बजे से लग गई हैं। यह सोमवार दोपहर 2¬45 बजे तक है। इसमें सर्वप्रथम श्रद्धालु दर्शन कर मां गंगा को प्रणाम करेंगे। आचमन के बाद स्नान, इसके बाद सूर्य अर्घ्य देकर पितरों के निमित्त गंगाजल समर्पित किया जाएगा। कार्तिक मास में दीपदान, तुलसी पूजन और गंगा स्नान का अनंत गुना फल मिलता है।

स्काउट गाइड ने संभाली गंगा घाट पर व्यवस्था

हिंदुस्तान स्काउट्स एंड गाइड की ओर से चल रहे समाजसेवा शिविर के चौथे दिन स्काउट गाइड ने गंगा घाट की व्यवस्था संभाली। इस अवसर पर स्काउट गाइड ने नुक्कड़ नाटक रामगंगा चौबारी मेले में प्रस्तुत किया। वन एवं पर्यावरण मंत्री अरुण कुमार और विधायक संजीव अग्रवाल का स्थापना दिवस पर बैच लगाकर स्वागत किया।

ग्रेटर बरेली आवासीय योजना, पांच हजार लोग ले सकेंगे प्लॉट, कॉलोनी के बीच में विकसित की जाएगी झील

बरेली। अल्ट्रा मॉडर्न सिटी की तर्ज पर ग्रेटर बरेली आवासीय योजना विकसित की जा रही है। इसमें आवासीय और व्यावसायिक भूखंड मिलेंगे। बरेली विकास प्राधिकरण (बीडीए) की ग्रेटर बरेली कॉलोनी 238 हेक्टेयर में विकसित की जा रही है। इस कॉलोनी में 13 सेक्टर होंगे। इसमें 5,000 लोग भू-खंड खरीद सकेंगे। कॉलोनी के बीच में झील विकसित की जाएगी। स्थानीय लोगों के अलावा सप्त नाथ मंदिरों में दर्शन के लिए आने वाले श्रद्धालु भी इस प्राकृतिक नजारे का आनंद ले सकेंगे। अल्ट्रा मॉडर्न सिटी की तर्ज पर ग्रेटर बरेली आवासीय योजना विकसित की जा रही है। इसमें आवासीय और व्यावसायिक भूखंड मिलेंगे। कॉलोनी की बसावट के साथ ही आसपास का क्षेत्र विकसित हो जाएगा। इस हाईटेक कॉलोनी में झील के आसपास के क्षेत्र में शानदार पिकनिक स्पॉट बनेगा। झील के किनारे टहलने के लिए पैदल पथ बनाया जाएगा। सुगंधित फूलों के साथ ही छायादार पौधे भी रोपे जाएंगे।

ये सुविधाएं भी होंगी

योजना के तहत व्यावसायिक भूखंडों पर सेवा क्षेत्र को वरीयता दी जाएगी। शोरूम, दुकानों के अलावा खानपान के लिए रेस्टोरेंट खुल सकेंगे। साइकिल ट्रैक, जॉगिंग ट्रैक, हाईवे की ओर ढाबा व कैफेटेरिया होगा। जॉगिंग ट्रैक के साथ रेजिडेंशियल एन्क्लेव बनेगा। कॉलोनी का सेंट्रल पार्क चार हेक्टेयर क्षेत्रफल में विकसित किया जाएगा। योग केंद्र भी बनाया जाएगा। बीडीए उपाध्यक्ष जोगिंदर सिंह ने बताया कि नया साल शहरवासियों के लिए सौगात लेकर आ रहा है। ग्रेटर बरेली आवासीय योजना के लिए जमीन अधिग्रहण की प्रक्रिया चल रही है। शहर के लिए एक अति आधुनिक सुविधाओं वाली हाईटेक कॉलोनी विकसित की जाएगी।

विद्युत उपभोक्ता, उठा सकते है ओटीएस योजना का लाभ-एसडीओ

संवाददाता

बदायूं । दिनांक 8/11/2023 से 31/12/2023 तक बिल में ब्याज माफी हेतु ओटीएस योजना लागू हो गई है, यदि आपका या आपके परिचित किसी उपभोक्ता का घर, दुकान, ट्यूबवेल, उद्योग आदि का बिजली बिल अधिक बकाया है, बिजली चोरी का जुर्माना बकाया है(मुकदमा हो चुका है) तो अपने पास के बिजलीघर या दफ्तर में संपर्क करके, योजना का लाभ उठाए। इस योजना में जो पहले बिल जमा करेगा उसे अधिक लाभ मिलेगा और जो बाद में बिल जमा करेगा, उसे कम लाभ होगा। किसी भी हेल्प के लिए मेरे सीयूजी न0-7599560238 पे कॉल/ वाट्सअप पे संपर्क कर सकते है। सतेंद्र कुमार जेई सहसवान टाउन ईडीडी-उझानी अभिषेक ऋषि एसडीओ सहसवान।

SPEL कार्यक्रम के अन्तर्गत जनपद के विभिन्न थानो द्वारा पाठशाला का आयोजन

संवाददता

बदायूं। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक बदायूँ के निर्देशन मे Student Police Experiential Learning (SPEL) कार्यक्रम के अन्तर्गत जनपद के विभिन्न थानो द्वारा पाठशाला का आयोजन कर स्कूल के छात्र/छात्राओ को अनुभवात्मक सिखायी व लोक कौशल मे सुधार तथा कानून एवं आपराधिक प्रक्रिया, साइबर क्राइम विषयो की जानकारी दी गई तथा संविधान दिवस के अवसर पर संविधान में निहित मूल्यों, आदर्शो, उद्देशिका को स्मरण कराते हुए राष्ट्र की एकता व अखण्डता बनाये रखने की शपथ दिलाई गई। आज दिनाँक 26-11-2023 को डॉ0 ओपी सिंह वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जनपद बदायूँ एवं अपर पुलिस अधीक्षक नगर अमित किशोर श्रीवास्तव के मार्गदर्शन तथा क्षेत्राधिकारी नगर आलोक मिश्र के निकट पर्यवेक्षण में जनपद के थाना कोतवाली, मुजरिया, पर ÷स्.क्क्ष्.रु कार्यक्रम÷ के अन्तर्गत पाठशाला का आयोजन किया गया। जिसमें छात्र/छात्राओं द्वारा पूर्ण मनोयोग से इस पाठशाला में प्रतिभाग किया गया । जिसमें स्नातक स्तर के छात्र/छात्राओं को अनुभवात्मक सिखायी व लोक कौशल में सुधार एवं साथ ही साथ कानून एवं आपराधिक प्रक्रिया, आपराधिक अनुसंधान, यातायात नियन्त्रण, साइबर क्राइम, मानव तस्करी, कानून व्यवस्था इत्यादि जैसे विषयो की जानकारी दी गयी। साथ ही संविधान दिवस के अवसर पर छात्र/छात्राओं को संविधान की प्रस्तावना एवं मौलिक कर्तव्यों की जानकारी प्रदान कर, संविधान में निहित मूल्यों, आदर्शो, उद्देशिका को स्मरण कराते हुए राष्ट्र की एकता व अखण्डता बनाये रखने की शपथ दिलाई गई।

कार्तिक पूर्णिमा पर पचनद संगम पर होने वाले स्नान के घाटों की तैयारी पूर्ण

उरई जालौन। कार्तिक पूर्णिमा पर पंचनद संगम पर होने वाले स्नान के घाटों तैयारी हुई पूर्ण, उप जिलाधिकारी माधौगढ़, खंड विकास अधिकारी सभी संबंधित अधिकारियों ने पचनद संगम स्नान घाट के पुख्ता इंतजाम किए हैं किसी भी श्रद्धालु को परेशानी नहीं होगी। वही बताते चलें कि जिलाधिकारी राजेश कुमार पाण्डेय ने कल पचनद घाट का निरीक्षण कर श्रद्धालुओं के लिए बेहतर व्यवस्था के निर्देश दिए गए थे। जिलाधिकारी के निर्देश पर उप जिलाधिकारी खंड विकास अधिकारी व संबंधित अधिकारियों ने 24 घंटे के अंदर स्नान घाट तक जाने वाले रास्ते व स्नान घाट पर रेत डालकर चौक चौबंद किया गया है। श्रद्धालुओं के लिए सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। वही नदी के किनारे बड़े-बड़े प्राकृतिक खतरनाक दिखने वाले पत्थरों को भी निकाल दिया गया है।

अज्ञात वाहन की टक्कर से किसान की मौत

झांसी। मोंठ थाना इलाके में पैदल घर लौट रहे किसान की अज्ञात वाहन की टक्कर से मौत हो गई। वह खाद लेने गया था। खाद न मिलने पर शाम को वापस अपने घर लौट रहा था। टहरौली थाना क्षेत्र के गांव पिपरा निवासी बादाम सिंह (26) खेतीबाड़ी कर अपने परिवार का जीवन-यापन करते थे। शनिवार सुबह वह खाद लेने के लिए मोंठ गए थे। खाद के लिए वे दिनभर लाइन में लगे रहे, परंतु मिल नहीं पाई। इस पर वह शाम को पैदल ही अपने घर लौट रहे थे। खिरियाघाट के पास अज्ञात वाहन ने उन्हें टक्कर मार दी। इससे वह गंभीर रूप से घायल हो गए। वहां से गुजर रहे लोगों ने बादाम सिंह के पास से मिले आधार कार्ड के जरिये सूचना परिजनों को दी। मौके पर पहुंचे परिजन आनन-फानन उन्हें मेडिकल कॉलेज लेकर भागे। यहां इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। बता दें कि मृतक बादाम सिंह के दो बेटे छह साल का राघव और डेढ़ साल का हैप्पी है।

थाना प्रभारी सौरभ सिंह ने संविधान दिवस पर दिलाई शपथ

संवाददाता

सहसवान। संविधान दिवस के अवसर पर कोतवाली प्रांगण में थाना प्रभारी सौरभ सिंह ने समस्त स्टाफ को हम भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व-सम्पन्न समाजवादी पंथ निरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखण्डता सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़संकल्प होकर एतद्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं। की शपथ दिलायी। उन्होने कहा कि सत्य निष्ठा, कर्तव्यों का पालन करने, संवैधानिक आदर्शो, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज व राष्ट्रीय प्रतीकों का आदर एवं देश संप्रभुता एवं अखण्डता की रक्षा करना है। उन्होंने कहा कि 26 नवंबर 1949 को संविधान के प्रारूप को अंगीकृत किया गया था। यह दिन बहुत ही हर्ष एवं उल्लास का दिन है। प्रत्येक वर्ष 26 नवम्बर को संविधान दिवस के रूप में मनाया जाता है। संविधान दिवस के अवसर पर संविधान की प्रस्तावना का पाठ किया जाता है। प्रस्तावना संविधान की आत्मा है। यह देश के शासन व्यवस्था एवं देशवासियों के लिए मार्गदर्शिका है। हम सब एक भारत, एकजुट भारत और श्रेष्ठ भारत के रूप में कार्य करें। इसका हम सभी लोग सम्मान करें और अपने कार्यो को अच्छे से निष्पादन करें

जनपद के समस्त स्थान पर गठित महिला सुरक्षा दल ने बालिकाओं एवं महिलाओं को किया जागरूक

संवाददाता

उरई जालौन। जनपद के समस्त थानों पर गठित महिला सुरक्षा विशेष दल द्वारा अपने-अपने थाना क्षेत्र अंतर्गत आबादी क्षेत्र, बाजारों, भीड़भाड़ वाले क्षेत्रो में पहुंचकर बालिकाओं एवं महिलाओं को महिला उत्पीड़न की रोकथाम संबंधी एवं उनके अधिकारों के सम्बन्ध में जागरूक किया जा रहा है। महिला सुरक्षा विशेष दल ने बालिकाओं एवं महिलाओं को हेल्पलाइन नंबर- 1090, 1076, मुख्यमंत्री हेल्पलाइन- 181, यूपी 112 आदि के बारे में जानकारी दी गई तथा किसी भी अप्रिय घटना के बारे में संदेह होने पर उक्त नंबर या तत्काल थाना पुलिस को सूचित करने के बारे में बताया गया । महिला सुरक्षा विशेष दल द्वारा सार्वजनिक स्थानों के आस-पास बेवजह घूम रहे युवकों से पूछताछ कर चेतावनी दी गयी तथा नियमानुसार आवश्यक कार्यवाही की गयी।

पुलिस अधीक्षक जालौन ने संविधान दिवस के अवसर पर राष्ट्र की एकता अखंडता बनाए रखने हेतु शपथ दिलाई

संवाददाता

उरई जालौन। आज पुलिस अधीक्षक डॉ ईराज राजा जालौन ने पुलिस लाइन उरई में संविधान दिवस के अवसर पर अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संविधान की प्रस्तावना एवं मौलिक कर्तव्यों से अवगत कराते हुए संविधान में निहित मूल्यों आदर्शो एवं उद्देशिका को स्मरण करते हुए राष्ट्र की एकता एवं अखंडता बनाए रखने हेतु शपथ दिलाई गई शपथ के दौरान पुलिस अधीक्षक डॉ ईराज राजा ने कहा हम, भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए, तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए। दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हज़ार छह विक्रमी) को एतदद्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं शपथ दिलाई। इसी दौरान उन्होंने बताया संविधान दिवस पर हमें जीवन भर अपने मौलिक कर्तव्यों और देश के कानून का पालन करने का प्रण लेना चाहिए और देश का अच्छा हुआ जिम्मेदार नागरिक बनने से न सिर्फ संविधान का मकसद पूरा होगा बल्ब संविधान निर्माता के सपनों के राष्ट्र का निर्माण होगा और राष्ट्र हित में कार्य करने के लिए प्रेरित किया गया।

यमुना तट स्थिति संत पथिक आश्रम में भव्य भंडारे का आयोजन

संवाददाता

जालौन। जालौन व्यास नगरी कालपी के पवित्र यमुना तट स्थित संत पथिक जी आश्रम में चल रहे पंच कुण्डीय विष्णु महायज्ञ की पूर्ण आहूति के बाद सैकड़ो की संख्या में आस्थावान महिलाओं व पुरुषों व बच्चों ने भण्डारा प्रसाद ग्रहण किया । कार्तिक मास में नगर के तरीबुल्दा स्थित संत पथिक जी आश्रम में चल रहे पंच कुण्डीय विष्णु महायज्ञ व श्रीमद भागवत कथा ज्ञान यज्ञ व संत सम्मेलन पूज्यपाद संत पथिक जी महाराज के शिष्य स्वामी अक्षयानंद जी महाराज की देखरेख में चल रहे इस आयोजन में बडे-बडे साधु संतो का लाभ मिला तथा सुबोधानन्द जी महाराज का लोगों ने आर्शीवाद प्राप्त किया तथा बड़ी संख्या में आस्थावानों ने बढ़ चढ़कर सहयोग किया। शनिवार को यज्ञ की पूर्ण आहूति के बाद रविवार को भण्डारा प्रसाद ग्रहण करने वालों की भारी भीड़ देखने को मिली। इस दिव्य एंव भव्य आयोजन को पूर्ण कराने के लिये आचार्य हेमन्त पाण्डेय हरिद्वार, यज्ञाचार्य अनिल पाण्डेय, वृद्धा जी ओम प्रकाश तिवारी, गोविन्द प्रसाद पाण्डेय, कालीदास पाठक, प्रहलाद अरजरिया, तरूण , विनोद त्रिपाठी, अशोक गौतम, विनोद पाण्डेय आदि आचार्य ने वैदिक मंत्रों के पूरा आयोजन सम्पन्न कराया।इस दौरान जगदीश गुप्ता, योगेन्द्र नारायण शुक्ल बैद्य, राजेश गुप्ता मिठाई लाल, विनीत गुप्ता, राजेन्द्र गुप्ता नेता, सुरेश वर्मा, श्यामबाबू पुरवार, पंकज पाण्डेय, शरद शुक्ला, संजय गुप्ता, कृष्ण कुमार गुप्ता, डाक्टर राजेन्द्र गुप्ता, विवेक निगम, गगन गुप्ता,अंकित गुप्ता अइया आदि का सराहनीय सहयोग रहा।

माया के ताबूत में कील ठोक गए चंद्र शेखर

दलितों की राजधानी मे भाजपा, कांग्रेस और सपा पर जमकर बरसे।

संवाददाता

आगरा। दलितों की राजधानी में सविधान बचाओ रैली में जहां भीम आर्मी चीफ ने भाजपा ,कांग्रेस और सपा पर जमकर बरसे वही बसपा सुप्रीमो मायावती के ताज नगरी में बने ताबूत में कील ठोक गए। जिससे भीम नगरी एब अंवेदकर शोभायात्रा समिति के संयोजक करतार सिंह भारती और डा अम्बेडकर बार एसोसिएशन अध्यक्ष ने भीम आर्मी में आस्था व्यक्त कर भीम आर्मी चीफ का स्वागत किया । ताज नगरी के जी आई सी ग्राउंड में आगरा अलीगढ़ मंडल की सविधान बचाओ रैली को संबोधित करते हुए कहा कि बाबा साहब के मिशन को पूरा करने के लिए काशीराम ने 1984 में बसपा का गठन करके बहुजनो को जोड़कर यूपी जैसे राज्य में चार बार सरकार बनाई। इनके निधन के बाद दलितों, पिछड़ों अल्प संख्यक समाज पर लगातार हो रहे अत्याचार पर बसपा चुपचाप सुनती रही है। लंबा इंतजार करने के बाद बहुजन समाज की आवाज बुलंद करने के लिए सामाजिक संगठन भीम आर्मी के साथ आजाद समाज पार्टी काशीराम का गठन करना पड़ा है। भीम आर्मी चीफ ऐब आजाद समाज पार्टी काशीराम चीफ चंद्र शेखर आजाद उर्फ रावण ने भाजपा पर करारे प्रहार किए जिसके तहत दलितों, पिछड़ों, अल्प संख्यक समाज पर हो रहे अत्याचार सरकार के इशारे पर होने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार में दलित ,पिछड़ों का आरक्षण धीरे धीरे खत्म किया जा रहा है लेकिन इस समाज के बल बूते पर चार बार सत्ता हथियाने बाली पार्टी चुप बैठी है आखिर क्यों ये पार्टी सरकार के इशारे पर अब राजनीति कर रही है काशीराम साहब के निधन के बाद यह पार्टी मिशन से भटक गई है। उन्होंने कहा कि भाजपा कांग्रेस को

इस वर्ग के बोट तो चाहिए लेकिन इनके अधिकार नहीं देने है। सपा पिछड़ों की जरूर पार्टी कही जाती है लेकिन इनके नेता मनुवादियों के इशारे पर राजनीति करते हैं। जबकि बाबा साहब अम्बेडकर ने इन वर्गों को अधिकार दिलाए उन्हें भी 2024 के बाद खत्म कर दिया जाएगा । इसलिए अभी से तैयारी करने का आहवान किया। आर्थिक विषमता खत्म होने तक संघर्ष। श्री रावण ने ऐलान किया है कि देश में छुआ छूत के साथ आर्थिक विषमता है उसे समाप्त होने तक आंदोलन जारी रहेगा इसके लिए उन्हें कितनी बार और जेल जाना पड़े। क्योंकि बाबा साहब अम्बेडकर ने सविधान में बराबरी का अधिकार दिया है लेकिन देश को आधा दर्जन उधोग पति ही चला रहे हैं। भाजपा ने छोटे व्यापार बंद कराए। श्री आजाद ने भाजपा पर कड़ा प्रहार करते हुए कहा कि भाजपा सरकार ने देश के छोटे व्यापार को गलत नीति के कारण बंद करा दिया है जिससे व्यापारी परेशान है।इसके पीछे बहू संख्यक समाज को रोकना है। इसी के चलते सरकार ने सरकारी सस्थानों का प्राइवेट करण किया जा रहा है।

कंबल वितरित किए गये संस्था भारत सरकार के नीति आयोग द्वारा

संवाददाता

आगरा। कंबल वितरित किए गए आगरा रीसन सामाजिक सेवा ट्रस्ट द्वारा आज गांव गुड़ा में बुजुर्गों को-कंबल वितरित किए गये संस्था भारत सरकार के नीति आयोग द्वारा नीति पर काम कर रही है रीसन सामाजिक सेवा ट्रस्ट द्वारा संस्था यह कार्य समाज के हित में कर रही है संस्था का उद्देश्य है सभी गरीब और असहाय लोगों की मदद करना और बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, सवरोजगार प्रशिक्षण संस्थान, बेरोजगार मुक्त भारत ,नशा मुक्त जागरूकता अभियान ,के तहत अपनी बात को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य कर रही है यह कार्य युवा पीढ़ी के लिए किया जा रहा है जिसमें की युवा पीढ़ी ज्यादा से ज्यादा बढ़-चढ़कर भाग ले और संस्था में अपना योगदान दे संस्था बेरोजगार लोगों को रोजगार देने का कार्य भी कर रही है संस्था सरकार द्वारा चलाई जा रही सभी योजनाओं का लाभ दिलाने में कार्यरत है संस्था चाहती है कि जन-जन तक उनकी बात पहुंचे और लोगों को सरकारी योजनाओं का लाभ मिले इस प्रोग्राम में संस्थापक सुनील चौधरी संस्थापिका रेखा चौधरी अध्यक्ष विष्णु चौधरी सत्येंद्र प्रधान जिला पंचायत सदस्य ब्रजमोहन धनगर और गांव के कार्यकर्ता मौजूद थे।

कार्यसमिति बैठक 2 सत्रो में आयोजित हुई

आगरा। भारतीय जनता पार्टी ब्रज क्षेत्र कार्यलय में भाजयुमो महानगर के अध्यक्ष शेलु पंडित की अध्यक्षता में युवा मोर्चा महानगर की कार्यसमिति एवं मंडल सशक्तिकरण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, कार्यसमिति बैठक 2 सत्रो में आयोजित हुई, पहला चरण गीत से प्रारंभ करने के बाद युवा मोर्चा महानगर के अध्यक्ष शेलु पंडित ने स्वागत भाषण से बैठक को विधिवत रूप से आगे बढाया, प्रथम सत्र में मुख्य अतिथि के रूप भाजपा महानगर के अध्यक्ष भानु महाजन रहे, अध्यक्षता युवा मोर्चा महानगर अध्यक्ष शेलु पंडित ने की, प्रथम सत्र का संचालन युवा मोर्चा के महानगर महामंत्री मनीष साहू ने किया, मुख्य अतिथि भानु महाजन ने भाजपा का इतिहास पार्टी की रीती निति पर विस्तार से चर्चा की, द्वितीय सत्र में मुख्य अतिथि भाजयुमो के ब्रज क्षेत्र अध्यक्ष मनीष गौतम एवं भाजयुमो ब्रज क्षेत्र के उपाध्यक्ष नागेन्द्र चाहर उपस्थित रहे, अध्यक्षता शेलु पंडित ने की, संचालन युवा मोर्चा महानगर महामंत्री संचित कुलश्रेष्ठ ने किया, मंच पर कार्यक्रम संयोजक लक्की दीक्षित रहे, मुख्य अतिथि श्री मनीष गौतम ने कार्यकर्ताओं को 2024 के चुनाव को लेकर क्या तैयारियां होनी चाहिए, आगामी कार्यक्रम को लेकर चर्चा की, नागेन्द्र चाहर मंडल सशक्तिकरण को लेकर मुख्य बिंदु सभी साझा किये, युवा मोर्चा महानगर अध्यक्ष शेलु पंडित ने होने वाले लोकसभा चुनाव में युवा मोर्चा का प्रत्येक कार्यकर्ता किस प्रकार से सक्रिय भूमिका निभाये इस पर चर्चा की साथ ही भाजपा की तरफ से चलाए जा रहे वोटर चेतना महाअभियान में महानगर पदाधिकारी द्वारा आगरा के सभी डिग्री कॉलेज एवं महानगर के मुख्य चौराहों पर मंडल के अध्यक्ष एवं उनकी टीम द्वारा वोट बनाने के लिए कैंपों का आयोजन किया जाएगा, सभी कैंपों में प्रदेश से लेकर क्षेत्र एवं महानगर के पदाधिकारी विस्तारक के रूप सभी मंडलों की कैंप में जाएंगे और इस वोटर चेतना महाअभियान पर विशेष नजर रखेंगे, इस कार्यसमिति कार्यक्रम के संयोजक लक्की दीक्षित रहे, इस कार्यसमिति बैठक में भाजयुमो महानगर के सभी पदाधिकारी एवं सभी मंडल के अध्यक्ष एवं उनके कार्यकर्ता मजूद रहे।

एक नज़र

रब में बदला वोटिंग पैटर्न, जिस बात का था कांग्रेस को डर, जानिए उस जी फैक्टर का असर

जयपुर। पूरे विधानसभा चुनावों में कांग्रेस को जिस बात का सबसे ज्यादा डर सता रहा था, वह जी फैक्टर यानी गुर्जरों की नाराजगी का था। पूर्वी राजस्थान में गुर्जर वोटरों का प्रभाव था कि पिछली बार कांग्रेस, निर्दलीय और बसपा ने मिलाकर 39 में से 35 सीटों पर जीत दर्ज की थी। बीजेपी सिर्फ 4 सीटों पर सिमट गई थी। वजह थी सचिन पायलट, जिनके प्रभाव से गुर्जर वोटरों ने अपनी जाति के प्रत्याशी को भी छोड़कर कांग्रेस के पक्ष में वोट किया था। जिसके चलते बीजेपी के सभी 9 गुर्जर प्रत्याशी चुनाव हार गए थे। लेकिन इस बार पूर्वी राजस्थान में वोटिंग पैटर्न बदला है। कई सीटों पर वोटिंग पिछली बार से कम हुई है तो कई सीटों पर बढ़ी है। जिन सीटों पर बढ़ी है वहां गुर्जर प्रत्याशी हैं। यह संकेत हैं कि गुर्जर वोटरों का रुझान इस बार सिर्फ जाति की तरफ रहा है।

नाबालिग का अपहरण कर चार लोगों ने किया गैंगरेप, आरोपियों में विधायक का रिश्तेदार भी शामिल

मध्यप्रदेश (ग्वालियर)। मध्यप्रदेश के ग्वालियर में एक दलित किशोरी के साथ गैंगरेप का मामला सामने आया है। लड़की के एक परिचित ने लड़की को मिलने के बहाने बुलाया था, जिसके बाद चार लोगों ने उसका अपहरण किया और फिर बारी-बारी से उसके साथ दुष्कर्म किया। ग्वालियर में दलित नाबालिग का अपहरण करके चार लोगों ने न सिर्फ उसके साथ गैंगरेप किया, बल्कि आरोपियों ने लड़की के साथ अप्राकृतिक कृत्य भी किया। किसी तरह लड़की अपराधियों के चंगुल से छूटी और उसने इस मामले की शिकायत अपने परिजनों से की। इसके बाद शनिवार रात को पुरानी छावनी पुलिस ने दलित उत्पीड़न, दुष्कर्म पॉक्सो एक्ट मारपीट और धमकाने जैसी संगीन धाराओं के तहत आरोपी रामू कुशवाह, अरविंद कुशवाह, छोटे खान और उसके एक अन्य साथी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। आरोपियों की गिरफ्तारी फिलहाल नहीं हो सकी है। पुलिस उनकी तलाश में मुरैना भेजी गई है। जानकारी के अनुसार एक आरोपी से लड़की की पहचान फेसबुक के जरिए हुई थी। दोनों एक दूसरे को एक साल से जानते थे, इसलिए लड़की उसके बुलाने पर चली गई थी, लेकिन उसे नहीं पता था कि यह लोग गैंगरेप जैसी संगीन वारदात को अंजाम देंगे। आरोपियों में एक सुमावली के विधायक का नजदीकी रिश्तेदार भी शामिल है। जब स्टोन पार्क मोतीझील क्षेत्र में रहने वाली 17 साल की किशोरी अपने फेसबुक फ्रेंड के बुलावे पर पानी के प्लांट मोतीझील के पास पहुंची थी, उसे इन बदमाशों ने अगवा कर लिया और उसके साथ बारी-बारी से दुष्कर्म किया। लड़की के साथ अप्राकृतिक कृत्य भी किया गया है।

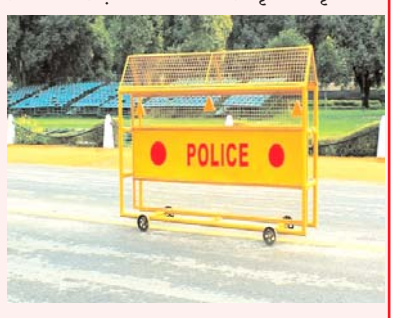

छत्तीसगढ़ में फिर दिखा नक्सलियों का कहर- 50 से ज्यादा ने दिया घटना को अंजाम, कई ट्रकों में आग; मजदूर बने बंधक

छत्तीसगढ (जगदलपुर) । दंतेवाड़ा में नक्सलियों ने बीती रात जमकर उत्पात मचाते हुए 16 ट्रकों को आग के हवाले करने के साथ ही प्लांट में मौजूद सुरक्षाकर्मी को बंधक भी बना लिया। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि दंतेवाड़ा जिले के भांसी डामर प्लांट में नक्सलियों ने जमकर उत्पात मचाया। दंतेवाड़ा जिले के भांसी थाना क्षेत्र के डामर प्लांट में नक्सलियों ने बीती रात जमकर उत्पात मचाते हुए 16 ट्रकों को आग के हवाले करने के साथ ही प्लांट में मौजूद सुरक्षाकर्मी को बंधक भी बना लिया। घटना को अंजाम देने के बाद सभी नक्सली जंगल के रास्ते भाग निकले, इस घटना को अंजाम देने के लिए 50 से ज्यादा नक्सली आए। जिसमें कुछ वर्दीधारी भी होने की बात कही जा रही है। मामले की जानकारी देते हुए पुलिस अधिकारियों ने बताया कि दंतेवाड़ा जिले के भांसी डामर प्लांट में नक्सलियों ने जमकर उत्पात मचाया। यहां निजी कंस्ट्रक्शन कंपनी की खड़ी करीब 16 गाड़ियों को नक्सलियों ने आग के हवाले कर दिया। इस आगजनी से करोड़ों का ट्रक जलकर खाक हो गया है। वहीं प्लांट में मौजूद सुरक्षाकर्मियों ने बताया कि करीब 50 से ज्यादा नक्सली यहां पहुंचे और सबसे पहले गाड़ियों के डीजल टैंक फोड़ने के साथ ही टंकियों में आग लगा दी।

वेस फाउंडेशन (एनजीओ) द्वारा इंटर स्कूल प्रतियोगिता

संवाददाता

शहड़ोल। 25 नवंबर को प्रतिभा और आकांक्षा के एक उल्लेखनीय प्रदर्शन में, डब्ल्यूईएस फाउंडेशन की इंटर-स्कूल प्रतियोगिता कक्षा 1 से 5 तक के प्राथमिक विद्यालय के छात्रों के लिए एक परिवर्तनकारी अवसर के रूप में उभरी। समावेशिता और सशक्तिकरण के प्रतीक इस कार्यक्रम में नौ स्कूलों ने भाग लिया। वेस फाउंडेशन के द्वारा गोद ली गई स्कूल शासकीय प्राथमिक विद्यालय धनपुरी बाजार ने मेज़बान की भूमिका निभाई 7

अवसरों के लिए एक मंच

अक्सर ऐसे मंचों से वंचित इन बच्चों के लिए यह आयोजन संभावनाओं की दुनिया का प्रवेश द्वार था। यह सिर्फ एक प्रतियोगिता नहीं थी; यह एक ऐसा अवसर था जहां प्राथमिक विद्यालय के बच्चे एथलेटिक प्रयासों में आनंद लेते नजर आए, स्टालों पर अपनी वैज्ञानिक जिज्ञासा को बढ़ाते दिखे, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने खुद को एक ऐसे स्थान पर पाया जहां उनकी प्रतिभाओं को बिना किसी सीमा के मनाया जरहा हो।

कक्षा से परे प्रतिभा

खेल आयोजनों और वैज्ञानिक चमत्कारों के उत्साह से परे, इन उभरते दिमागों को सशक्त बनाने के लिए फाउंडेशन की दृष्टि स्पष्ट थी। यह कार्यक्रम शिक्षा को प्रेरित करने और कई सारे अवसर प्रदान करने, इन युवा छात्रों की क्षमता को उजागर करने और उनके सपनों को रोशन करने के लिए फाउंडेशन की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

प्रेरणा बढ़ाने वाली प्रतिष्ठित शख्सियतें

नगरपालिका धनपुरी की अध्यक्ष रविंदर कौर छाबड़ा, रिलायंस फाउंडेशन शहडोल से राजीव श्रीवास्तव, निपुण प्रोफेशनल शहडोल से शीतल जैन और सेवानिवृत्त सेना अधिकारी अनिल मिश्रा जैसी प्रतिष्ठित हस्तियां इस अवसर पर उपस्थित रहीं। जजेस और पुरस्कार प्रस्तुतकर्ताओं के रूप में उनकी निष्पक्ष भूमिकाओं ने कार्यक्रम में प्रतिष्ठा और प्रोत्साहन जोड़ा।

समग्र विकास को बढ़ावा देना

प्रतियोगिता केवल पदकों के बारे में नहीं थी; यह सर्वांगीण व्यक्तियों को आकार देने के सामूहिक प्रयास का प्रतीक है। अनुभवी शिक्षकों और पेशेवरों के निष्पक्ष निर्णय ने इन युवा प्रतिभाओं के बीच खेल कौशल और शैक्षणिक अखंडता का पोषण करते हुए उपलब्धि की भावना पैदा की।

प्रभाव और आकांक्षा से भरपूर

जैसे-जैसे कार्यक्रम समाप्त हुआ, इसकी गूँज दूर तक बनी रही, जिसने इन युवा मनों पर एक अमिट छाप छोड़ी। यह प्राथमिक विद्यालय के बच्चों को सशक्त बनाने और शैक्षणिक और एथलेटिक उपलब्धि दोनों की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए फाउंडेशन के अटूट समर्पण के प्रमाण के रूप में खड़ा है।

WES (वजीर एजुकेशन सोसाइटी) फाउंडेशन, एक गैर-लाभकारी गैर सरकारी संगठन है, जो वंचित समुदायों के लिए शिक्षा को प्रेरित करने और समृद्ध अवसर प्रदान करने के लिए अथक प्रयास करता है।

वेस फाउंडेशन शहडोल जिले के कई गांवों कस्बों में कंप्यूटर और लिटरेसी पर 2 सालों से कम कर रहा है, इनका कंप्यूटर लैब भी धनपुरी नो माइकल चौक पर स्थित है, जो कंप्यूटर शिक्षा और सब्जेक्ट स्पेशल ट्यूशन फ्री में प्रदान करता है।

अवेध एबूलेंश ज़िले में चला चेकिंग अभियान

- फिरोजाबाद, मैनपुरी मथुरा एटा अलीगढ़ की एबुलेंस बॉर्डर रोकी गई ।
- 05 एंबुलेंस की गई सीज,13 एंबुलेंस का फिटनेस , बीमा, पॉल्यूशन इत्यादि की कमी मिलने पर 1,35000चालान काट, की गई वसूली।

संवाददाता

आगरा। जिलाधिकारी भानु चन्द्र गोस्वामी द्वारा जनपद में चल रही अपंजीकृत एवं अनफिट एम्बुलेंस के विरूद्ध परिवहन विभाग एवं स्वास्थ्य विभाग द्वारा सयुक्त रूप से अभियान चलाकर कार्यवाही करने को निर्देश दिए गए थे।जिसके क्रम में आज अपर जिलाधिकारी (नगर) व सिटी मजिस्ट्रेट के नेतृत्व में आज फिर ,स्वास्थ्य विभाग एवं परिवहन विभाग के संयुक्त टीम द्वारा विशेष अभियान

चलाया गया, जिसके अन्तर्गत जनपद आगरा में संचालित जनपदीय / गैर जनपदीय निजी एंबुलेंस को संयुक्त टीम द्वारा जांच की गई, कार्यवाही का पता चलते ही एंबुलेंस चालक भाग खड़े हुए। सरोजनी नायडू मेडिकल कालेज, आगरा के इमरजेंसी के पास, मेडिकल कालेज के अन्दर पोस्ट मार्टम हाऊस के पास, लेडी लायल ,जिला महिला अस्पताल के पास एवं देहली गेट पर निजी एम्बुलेंसो का निरीक्षण किया गया। जिसमें 13 एंबुलेंस में फिटनेस,बीमा, प्रदूषण समाप्त पाया गया, जिस पर नियमानुसार कार्यवाही करते रूपया एक लाख पैतीश हजार का चालान काटा गया तथा 05 एंबुलेंस सीज की गई। चालान काटी गयी एडीएम सिटी के नेतृत्व में कुल 05 एंबुलेंस सीज की गई अभियान में सिटी मजिस्ट्रेट आनंद कुमार सिंह,स्वास्थ्य विभाग से डॉ.एस0के0 राहुल, उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी एवं परिवहन विभाग से,एआरटीओ आलोक अग्रवाल, तथा एसीएम प्रथम, तथा एसीएम द्वितीय,

पीटीओ एस के मिश्रा,भारत आदि मौजूद रहे।

अपर जिलाधिकारी नगर ने बताया कि आज अभियान में 02 टीमों को लगाया गया था अपंजीकृत एवं अनफिट एम्बुलेंस के विरुद्ध परिवहन विभाग एवं स्वास्थ्य विभाग द्वारा संयुक्त रूप से लगातार अभियान चलाया जाएगा तथा पड़ोसी जनपदों से आने वाले अवैध, अनधिकृत एंबुलेंस पर भी विशेष नजर रखी जाएगी।

जीवित व्यक्ति को मृतक दिखाने डी एम गंभीर, पेंशन देने के निर्देश

जिलाधिकारी ने तत्काल लिया संज्ञान, समाज कल्याण अधिकारी और संबंधित बीडीओ को किया तलब

संवाददाता

आगरा। जिलाधिकारी भानु चन्द्र गोस्वामी ने आज,बुजुर्ग,वृद्धावस्था पेंशनर की पेंशन सत्यापन के दौरान त्रुटिवश मृतक दर्शाए जाने तथा पेंशन बंद होने की समाचार पत्रों में प्रकाशित खबर का तत्काल संज्ञान लिया। जिलाधिकारी ने समाज कल्याण अधिकारी तथा संबंधित बीडीओ को पत्रावली सहित तलब किया, जिसमें बताया गया कि पेंशन सत्यापन के दौरान तत्कालीन सचिव द्वारा पेंशनर को त्रुटिवश मृतक दर्शित करने के कारण पेंशन बंद कर दी गई है। जिलाधिकारी ने इस पर संबंधित अधिकारियों से कड़ी नाराजगी जताई, और वृद्धावस्था पेंशन पोर्टल पर तत्काल डाटा रिवर्ट कर पेंशन सुचारू करने के कड़े निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने इस कृत्य को अक्षम्य माना और निर्देशित किया कि समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े नागरिक प्रथम हैं,अधिकारी यह सुनिश्चित करें कि पात्र वंचितों तक सभी सरकारी योजनाओं का लाभ पहुंचे।जिलाधिकारी ने संबंधित सचिव के विरुद्ध भी जांच कर विभागीय कार्यवाही करने के कड़े निर्देश दिए।

गौरतलब है कि समाचार पत्रों में ÷डीएम साहब मैं जीवित हूं, वृद्धावस्था पेंशन दिलाइए÷ शीर्षक से प्रार्थी दीनानाथ, नगला हंसराज, एत्मादपुर की खबर प्रकाशित हुई थी जिसका जिलाधिकारी ने तत्काल संज्ञान लिया और संबंधित को तलब किया।

सविधान दिवस पर जिले के खुले स्कूल, ली शपथ।

- डीएम, सीडीओ, नगर निगम, एडीए कार्यालय में ली गई शपथ।

संवाददाता

आगरा। सविधान दिवस पर जिले के सरकारी दफ्तर, और स्कूल रविवार को भी खुले जहा सविधान निर्माता बाबा साहब अम्बेडकर के तेल चित्र पर श्रद्धा सुमन अर्पित कर विभाग अध्यक्षों ने शपथ दिलाई गई। संविधान दिवस के अवसर पर जिलाधिकारी भानु चन्द्र गोस्वामी ने कलेक्ट्रेट के कर्मचारियों को संविधान की प्रस्तावना की शपथ दिलाई, इस दौरान अधिकारियों ने भी शपथ ग्रहण की। इधर विकास भवन के सभागार में मुख्य विकास अधिकारी ने अधिकारियो कर्मचारियों को शपथ दिलाई इस अवसर पर डी डी ओ राकेश रंजन परियोजना निदेशक रेनू चौधरी उपायुक्त रामायण सिंह यादव, डी ओ बी के सिंह डी

पी आर ओ मनीष कुमार आदि मौजूद थे इधर जिलाधिकारी ने सभी अधिकारियों कर्मचारियों को संविधान दिवस के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि आज ही के दिन हमारा संविधान अधिनियमित, अंगीकृत किया गया था, 26 नवंबर 1949 को संविधान सभा ने औपचारिक रूप से भारत के संविधान को अपनाया था, जिसे 26 जनवरी, 1950 को लागू किया गया।नागरिकों के बीच संविधान के मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए हर साल 26 नवंबर को संविधान दिवस के रूप में मनाया जाता है। यही वह दिन है, जब गुलामी की जंजीरों से आजाद होकर अपने स्वतंत्र अस्तित्व को आकार देने का प्रयास कर रहे राष्ट्र ने संविधान को अंगीकार किया था। इसी दिन संविधान सभा ने इसे अपनी स्वीकृति दी थी, इस वजह से इस दिन को संविधान दिवस के तौर पर मनाया जाता है। अपर जिलाधिकारी (प्रोटोकॉल) सुश्री शैरी ने संविधान दिवस तथा संविधान निर्माण की प्रक्रिया पर प्रकाश डाला। विकास भवन में मुख्य विकास अधिकारी द्वारा सभी अधिकारी व कर्मचारियों को संविधान की प्रस्तावना की शपथ दिलाई। जनपद में संविधान दिवस को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक, स्वैच्छिक संगठनों ने भी कार्यक्रम आयोजित किए तथा संविधान की प्रस्तावना की ली शपथ ली, समस्त उच्च, माध्यमिक, प्राथमिक शिक्षा संस्थाओं में संविधान दिवस के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी नगर अनूप कुमार, अपर जिलाधिकारी (ना.आ.) सुशीला अग्रवाल,सिटी मजिस्ट्रेट आनंद कुमार सिंह सहित सभी अधिकारीगण मौजूद रहे। वही नगर आयुक्त अंकित खंडेलवाल, ए डी ए उपाध्यक्ष चर्चित गोड, सचिव गरिमा सिंह ने सविधान की शपथ दिलाई। इसके साथ साथ तहसील, विकास खंडों , शिक्षण संस्थानों में पर सविधान दिवस पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए।

एसएन मेडिकल कॉलेज के सर्जरी विभाग में सर्जिकल वर्कशॉप एंड सीएमई आयोजित ।

संवाददाता

आगरा। सर्जरी विभाग ने प्रसूति एवं स्त्री रोग विभाग के साथ मिलकर 25 नवंबर 2023 को एसएन मेडिकल कॉलेज, आगरा में व्यावहारिक कार्यशाला सह सीएमई का आयोजन किया। इस कार्यशाला में लखनऊ के हनुमंत एंडो सेंटर के डॉ. योगेश मिश्रा और डॉ करन रावत ने चिवेट्स प्रक्रिया (जो आगरा में पहली बार किया गया), एमआईपीएच का प्रदर्शन किया और स्यूचरिंग तकनीक पर व्याख्यान दिया। देहरादून से डॉ. अंशिका मित्तल अरोड़ा (ईसी यूपीएएसआई) ने स्तन कैंसर और गर्दन के विच्छेदन में सर्जिकल तकनीक का प्रदर्शन किया। इस अवसर पर यूपीएएसआई के उपाध्यक्ष डॉ. निखिल सिंह उपस्थित थे। एस एन मेडिकल कॉलेज के प्रधानाचार्य प्रोफेसर डॉ. प्रशांत गुप्ता समारोह के मुख्य अतिथि रहे । उन्होंने कहा कि इस प्रकार की वर्कशॉप रेजिडेंट डॉक्टर को नवीन विधाओं को सीखने का अवसर प्राप्त हो रहा है। डॉ. प्रशांत लवानिया विभाग अध्यक्ष सर्जरी विभाग ने स्वागत भाषण दिया और नई तकनीक एवम विधि से गरीब मरीजों को स्वस्थ लाभ होगा, और कम मात्रा में ब्लड लॉस , मिनिमम दर्द , जल्दी काम पर लौटने मैं मदद मिलेगी । डॉ. ऋचा सिंह (एचओडी ऑब्स एवं गायनी) ने सीएमई के बारे में अपने विचार दिए। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. जूही सिंघल ने किया। डॉ. ऋचा जैमन, डॉ. राजेश गुप्ता, डॉ. जेपीएस शाक्य, डॉ. सुरेंद्र पाठक, डॉ. पुनीत श्रीवास्तव, डॉ. अरुण राठौड़, डॉ. पूनम, डॉ. अनु पाठक, डॉ. रुचिका गर्ग, डॉ. अनुभव गोयल,डॉ. करन आर रावत, डॉ. विवेक कुमार, डॉ. वरुण अग्रवाल, डॉ. सुरुभि, अंकुर अग्रवाल, डॉ. भावना, डॉ. संदीप गुप्ता, एवं सर्जरी एवं ऑब्स एवं गायनी के रेजिडेंट्स उपस्थित रहे।

नशीला पदार्थ रखने के आरोप में महिला गिरफ्तार सप्लायर भी पकड़ा

कुरुक्षेत्र। एंटी नारकोटिक सैल की टीम ने नशीला पदार्थ रखने के आरोप में दबखेड़ी निवासी वासी एक महिला को गिरफ्तार कर किया है, जिसके कब्जे से सात किलो 500 ग्राम चूरापोस्त बरामद किया गया। टीम ने नशीला पदार्थ सप्लाई करने के आरोप में जगजीत सिंह उर्फ़ बाबू उर्फ़ काका निवासी दबखेडी को भी गिरफ्त में लिया है। पुलिस प्रवक्ता नरेश कुमार ने बताया कि 24 नवंबर को टीम ज्योतिसर बस अड्डा पर मौजूद थी। तभी टीम को गुप्त सूचना मिली कि दबखेड़ी निवासी महिला जसबीर कौर दबखेड़ी निवासी जगजीत सिंह के साथ रहती है और चूरापोस्त बेचने का काम करती है। सूचना पर पुलिस ने उसे गांव दबखेड़ी की मुख्य सड़क से गिरफ्तार कर लिया। मौके पर डीएसपी मुख्यालय सुभाष चंद को बुलाया गया। जांच की तो उससे सात किलो 500 ग्राम चूरापोस्त बरामद हुआ। पुलिस ने उसके खिलाफ मामला दर्ज कर लिया और अगली करवाई करते हुए महिला को नशीला पदार्थ सप्लाई करने के आरोपी जगजीत सिंह को भी गिरफ्तार कर लिया। दोनों आरोपियों को अदालत में पेश किया गया, जहां से महिला को कारागार भेज दिया जबकि आरोपी जगजीत को चार दिन के पुलिस रिमांड पर लिया गया।

किराये पर गाड़ी लेकर गाड़ी छीनने का आरोपी गिरफ्तार, पहुंच जेल

शाहाबाद। अपराध अन्वेषण शाखा-दो की टीम ने किराये पर गाड़ी लेकर गाड़ी छीनने के आरोपी अमित उर्फ़ विक्की वासी झोली जिला सोनीपत को प्रोडक्शन वारंट पर लेकर मामले में गिरफ्तार किया है। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि नौ अक्तूबर को थाना शाहाबाद पुलिस को दी अपनी शिकायत में मनोज वासी रबौण जिला सोलन हिमाचल प्रदेश ने बताया कि उसके पास अपनी गाडी इनोवा है और वह टैक्सी का काम करता है। नौ अक्तूबर को वह टैक्सी यूनियन के माध्यम से अंबाला कैंट रेलवे स्टेशन की बुकिंग के लिए चंबाघाट सोलन में एक लड़के से मिला, जिसने बताया कि उनके साहब ने अंबाला कैंट रेलवे स्टेशन से अपने परिवार को लेने जाना है तो वह उन दोनों को अपनी गाड़ी में लेकर अंबाला पहुंचा । वहां पर उनमें से एक व्यक्ति ने कहा कि अभी ट्रेन आने में समय है तब तक हम शाहाबाद के पास से कंपनी का सामान ले लेते हैं। जब वह शाहबाद से थोड़ा पहले एक पुल के नीचे पहुंचा तो उन्होंने गाड़ी को रुकवा लिया और एक व्यक्ति ने उसकी आंखों में लाल मिर्च रगड़ दी थी और दूसरे लड़के ने खिड़की खोलकर उसको मारना-पीटना शुरू कर दिया था। दोनों ने मिलकर उसे गाड़ी से बाहर गिरा दिया और गाड़ी छीनकर अंबाला की तरफ भाग गए थे। इस संबंध में पुलिस ने केस दर्ज किया था। बाद में मामले की जांच अपराध अन्वेषण शाखा-दो को दी गई। अब गिरफ्तार किए आरोपी को अदालत में पेश कर कारागार भेज दिया गया है।

मोटरसाइकिल चोरी करने का आरोपी काबू

कुरुक्षेत्र। अपराध अन्वेषण शाखा-दो की टीम ने मोटरसाइकिल चोरी करने के आरोप में बीर सिंह उर्फ बीरबल निवासी मटरवाखेड़ी जिला कैथल को प्रोडक्शन वारंट पर लिया है। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि थाना कृष्णा गेट पुलिस को अमित गोयल वासी सुभाष मंडी ने शिकायत दी थी। इसमें बताया कि वह अमीन रोड पर किसी काम से गया था। वह अपनी मोटरसाइकिल दुकान के बाहर खड़ी करके दुकान के अंदर चला गया था। थोड़ी देर बाद आया तो उसकी मोटरसाईकिल वहां नहीं मिली। अब पुलिस टीम ने आरोपी बीर सिंह उर्फ बीरबल वासी मटरवाखेडी को अदालत से प्रोडक्शन वारंट पर लिया है। मामले में चोरीशुदा मोटरसाइकिल पहले ही बरामद हो चुकी है। आरोपी को अदालत में पेश करके अदालत के आदेश से कारागार भेज दिया।

मंदिर से चोरी मामले के तीसरे आरोपी को पुलिस ने संरक्षण में लिया

पिहोवा। पुलिस टीम ने मंदिर से चोरी के आरोप में जुनाईल वासी अरणाय को गिरफ्त में लिया है। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि महन्त विश्वनाथ गिरी सचिव श्री संगमेश्वर महादेव मंदिर श्री पंचायती अखाड़ा महानिर्वाणी अरणाय ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि संगमेश्वर महादेव मंदिर में पहले कई बार चोरियां हो चुकी है। एक नवंबर को चोरों ने मंदिर में गल्ले तोड़े व मंदिर प्रांगण में रखी 10 धान की बोरियां चुरा लीं। इस मामले की जांच करते हुए पुलिस टीम ने मंदिर से चोरी मामले में आरोपी गौरव व राजेश कुमार उर्फ सोनू वासी अरुणाय को मामले में गिरफ्तार कर लिया था। आरोपियों से वारदात में प्रयोग मोटरसाइकिल बरामद की थी। आरोपियों को अदालत में पेश करके अदालत के आदेश से कारागार भेज दिया था । 24 नवंबर को टीम ने मामले में जांच आगे बढ़ाते हुए मंदिर से चोरी मामले में तीसरे नाबालिग आरोपी निवासी अरणाय को पुलिस सरंक्षण में लिया।

ट्रांसफार्मर से सामान चोरी के अलग-अलग तीन मामलों में तीन आरोपी गिरफ्तार, जेल भेजे

कुरुक्षेत्र। पुलिस टीम ने अलग-अलग में ट्रांसफार्मर सामान चोरी के आरोप में संदीप कुमार उर्फ सोनू वासी गगसीना जिला करनाल, उत्तम चन्द वासी कुराड़ी मोहल्ला कालका जिला पंचकूला व नाजिम अली निवासी आदमपुर जिला अमरोहा यूपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि एसडीओ बिजली निगम कार्यालय से प्राप्त शिकायतों के माध्यम से बताया गया कि चोरों द्वारा 13/14 जून की रात्रि को भूपेंद्र सिंह निवासी मछरौली के खेतों से 16 केवीए ट्रांसफार्मर से सामान चोरी कर लिया। आठ अगस्त रात्रि को प्यारे लाल निवासी खरींडवा के खेतों से 16 केवीए ट्रांसफार्मर से सामान तो वहीं 3/4 सितंबर की रात्रि को श्याम लाल निवासी डींग के खेतों से 16 केवीए ट्रांसफार्मर से सामान चोरी कर लिया। टीम ने भूपेंद्र सिंह के खेतों से 16 केवीए ट्रांसफार्मर से सामान चोरी के आरोपी संदीप कुमार उर्फ सोनू को अदालत से प्रोडक्शन वारंट पर लेकर जांच में शामिल किया, जिसके बाद अदालत में पेश कर कारागार भेज दिया। 24 नवंबर को प्रभारी थाना शाहाबाद के मार्ग निर्देश में सहायक उप निरीक्षक रामेश्वर की टीम ने प्यारे लाल के खेतों से 16 केवीए ट्रांसफार्मर से व श्याम लाल के खेत से ट्रांसफार्मर से सामान चोरी करने के तीन आरोपी संदीप कुमार उर्फ सोनू के अलावा उत्तम चन्द व नाजिम अली को अदालत से प्रोडक्शन वारंट पर लिया। अदालत के आदेश से तीनों आरोपियों को कारागार भेज दिया।

एक नज़र

कमानी पट्टा टूटने से घर के लेंटर पर जा चढ़ी बस, पांच यात्री घायल

संवाददाता

कुल्लू । कुल्लू जिले के औट से बंजार आ रही एक निजी बस का कमानी पट्टा टूटने के कारण बस घर के लेंटर पर जा चढ़ी। हादसा बंजार और मंगलौर नेशनल हाईवे 305 के मध्य पड़ने वाले गांव तरगाली में पेश आया। बताया जा रहा है कि इस हादसे में पांच यात्रियों को चोटें आई हैं। मौके पर जेसीबी लगा कर बस को हटाया जा रहा है। हादसे के बाद यात्रियों में अफरातफरी मच गई।

मुख्यमंत्री मनोहर लाल की बड़ी घोषणा

इन लड़कियों की कॉलेज शिक्षा होगी फ्री

संवाददाता

पानीपत (हरियाणा)। हरियाणा के सीएम मनोहर लाल ने कहा कि 1.80 लाख तक की वार्षिक आय तक के परिवार की लड़कियों की कॉलेज (निजी और सरकारी) की शिक्षा फ्री होगी। जो फीस होगी वो सरकार द्वारा वहन की जाएगी। हरियाणा में 1.80 लाख तक की वार्षिक आय तक के परिवार की लड़कियों की कॉलेज की शिक्षा फ्री होगी। जो फीस होगी वो सरकार द्वारा वहन की जाएगी। वहीं 1.80 रुपये से 3 लाख तक के वार्षिक आय वाले परिवार की लड़कियों की कॉलेज (निजी और सरकारी) की शिक्षा की आधी फीस सरकार देगी। मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने कांग्रेस को प्रदेश व देश में करप्शन क्राइम और कास्ट पॉलिटिकल की जनक बताया। उन्होंने कहा कि भाजपा ने इस दिशा में काम किया और करप्शन क्राइम और कास्ट पॉलिटिशियन को खत्म किया। देशभर में कांग्रेस का खात्मा है, कांग्रेस राजस्थान में भी जल्द ही साफ हो जाएगी। हरियाणा में कांग्रेस को साफ करना जनता के हाथ में है। उन्होंने समालखा अनाज मंडी में जन आशीर्वाद रैली में कांग्रेस के विधायक धर्म सिंह छोक्कर का नाम लिए बिना उनको निशाने पर साधा। उन्होंने कहा कि कुछ लोग छोटी-मोटी कंपनियां बनाकर गुड़गांव में मकान देने के नाम पर लोगों के खून पसीने की कमाई को अपनी जेब में डाल रहे हैं। ऐसे लोगों को छोड़ नहीं जाएगा।

समालखा पहुंचे मुख्यमंत्री मनोहर लाल

मनोहर लाल रविवार दोपहर बाद करीब 1:00 बजे समालखा पहुंचे। यहां जन आशीर्वाद रैली में शामिल हुए। अनाज मंडी समालखा में आयोजित जन आशीर्वाद रैली में भाजपा ने कई बड़ी घोषणाएं की। इन घोषणाओं के माध्यम से समालखा की जनता को केंद्रित रखा गया है। स्थानीय सांसद संजय भाटिया, राज्यसभा सांसद कृष्णलाल पंवार साथ में मौजूद रहे।

डेंगू मरीजों का उपचार करने वाले चिकित्सक की डेंगू से मौत

संवाददाता

चरखी दादरी। मातृ-शिशु अस्पताल में डेंगू मरीजों का उपचार करने वाले डॉ. अमित सोनी की डेंगू से मौत हो गई। वो दो दिन पहले डेंगू पॉजिटिव मिले थे और रोहतक के एक निजी अस्पताल में उनका उपचार चल रहा था। स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों ने डॉ. अमित के डेंगू पॉजिटिव होने की पुष्टि की है। हालांकि उनका तर्क है कि डेथ ऑडिट कमेटी की जांच के बाद ही मौत का कारण स्पष्ट हो सकेगा। बता दें कि इस साल डेंगू ने दादरी जिले में पिछले सारे रिकॉर्ड तोड़े हैं। अब तक जिले में करीब 902 लोग डेंगू पॉजिटिव मिल चुके हैं। इस साल जिले में डेंगू जांच के लिए कुल 3750 सैंपल लिए गए हैं। इनमें से हर 41वां सैंपल पॉजिटिव मिला है। जिले में डेंगू संक्रमित कुछ लोगों की मौत भी हुई है। हालांकि विभाग की ओर से अभी तक इन मौत की अधिकारिक तौर पर पुष्टि नहीं की गई है। वहीं, मातृ-शिशु अस्पताल में डेंगू मरीजों का उपचार करने वाले डॉ. अमित सोनी की मौत से स्वास्थ्य विभाग में हड़कंप मचा है। रोहतक के अस्पताल में उनकी मौत होने की सूचना स्वास्थ्य विभाग के पास पहुंची है। इसके आधार पर विभाग ने मौत का वास्तविक कारण पता करने के लिए जांच शुरू कर दी है। हालांकि विभाग ने ये माना है कि वो दो दिन पहले डेंगू पॉजिटिव मिले थे और तबीयत ज्यादा बिगड़ने पर उन्हें रोहतक के एक निजी अस्पताल में भर्ती करवाया गया था।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का भुवनेश्वर में राज्यपाल और मुख्यमंत्री ने स्वागत किया

संवाददाता

ओड़िशा, भुबनेश्वर। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू पहुंचीं भुवनेश्वर. राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू वायुसेना के विशेष विमान से भुवनेश्वर हवाईअड्डे पहुंचीं. राज्यपाल रघुवर दास और मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने हवाईअड्डे पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का स्वागत किया. राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू कल पारादीप बंदरगाह प्राधिकरण द्वारा आयोजित पारादीप बोट डॉकिंग समारोह में भाग लेने वाली हैं।

युवक को प्यार का नाटक पड़ा महंगा घर पहुंची प्रेमिका तो मच गया हंगामा.

पुलिस देख परिजनों ने करवाया निकाह

संवाददाता

रामपुर। रामपुर के मिलक क्षेत्र के एक गांव में युवक और युवती के बीच लंबे समय से प्रेम-प्रसंग चल रहा था। युवती शादी को लेकर लगातार प्रेमी पर दबाव बना रही थी। युवक उससे लगातार बहाने बना रहा था। इससे नाराज होकर युवती उसके घर पहुंच गई। हंगामा मचने के बाद दोनों के परिजनों ने उनका निकाह करवा दिया। मिलक में प्रेमी के घर प्रेमिका अचानक पहुंच गई। उसे देखकर प्रेमी और उसके परिजनों के होश उड़ गए। प्रेमिका अपने युवक से शादी की जिद पर अड़ गई। परिजनों और रिश्तेदारों ने युवती को समझाने का प्रयास किया लेकिन वह नहीं मानी। घर वालों के दबाव डालने पर युवती ने पुलिस को फोन कर दिया। इसके बाद पुलिस कर्मी मौके पर पहुंच गए। युवती और उसके परिजनों को पुलिस ने समझाया। इसके बाद युवक और युवती का

निकाह कर दिया गया। घटना कोतवाली क्षेत्र के धर्मपुरा इलाके की है। गांव निवासी एक युवती का पड़ोसी युवक से प्रेम प्रसंग लंबे समय से चल रहा था। युवक से शादी करने के लिए युवती लगातार करते हुए आ रही थी। इसके बाद भी युवक आए दिन कोई ना कोई बहाना करके शादी करने से इनकार कर देता। लगातार युवक की तरफ से शादी के लिए टाल-मटोल करने से युवती नाराज हो गई। शनिवार को युवक के घर युवती जा पहुंची और निकाह करने की जिद करने लगी। युवक और उसके परिजनों ने युवती को मनाने का प्रयास किया लेकिन वह अड़ी रही। इसके बाद युवती के परिजन भी मौके पर पहुंच गए। उन्होंने भी युवती को समझाकर अपने साथ घर ले जाने का प्रयास किया। युवती पर जब सभी ने दबाव डाला तो उसने पुलिस को फोन कर दिया। पुलिस को देखकर युवती और युवक के परिजनों के हाथ पैर फूल गए। युवती ने युवक के साथ निकाह करने की इच्छा जताई। युवती ने पुलिस को बताया कि युवक शादी का झांसा देखकर उसके साथ प्रेम का झूठ नाटक कर रहा है। पुलिस के पहुंचने पर युवती की इच्छा जानकर युवक और युवती के परिजन निकाह के लिए तैयार हो गए। इसके बाद दोनों का निकाह करवा दिया गया। इसके बाद युवती राजी खुशी अपने ससुराल के लिए विदा हो गई। दोनों के निकाह का मामला क्षेत्र में चर्चा का विषय बना रहा।

नानक नाम चढ़दी कला, तेरे भाने सरबत दा भला

संवाददाता

अंबाला। नानक नाम चढ़दी कला, तेरे भाने सरबत दा भला, गुरु नानक की वडियाई, नानक नाम जहाज है चढ़े सो उतरे पार शबद गायन से नगर कीर्तन का माहौल भक्तिमय हो गया। धन-धन श्री गुरु नानक देव जी महाराज के 554 वें प्रकाश पर्व पर आयोजित महान नगर कीर्तन में संगत ने गुरु चरणों में शीश नवाकर सुख-शांति की अरदास की और आशीर्वाद पाया। नगर कीर्तन धन-धन श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी महाराज की छत्रछाया और पांच प्यारों की अगुवाई में किया, जोकि हरगोलाल रोड स्थित गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा से दोपहर ढाई बजे शुरू होकर बीसी बाजार स्थित गुरुद्वारा साहिब पहुंचा

और फिर यहां से बैंडबाजों, ट्रॉलियों, गतका पार्टी और स्कूल के बच्चों के साथ नगर कीर्तन बाजार की तरफ रवाना हुआ। इस दौरान घुड़सवारों ने भी करतब दिखाकर संगत को निहाल किया। गतका पार्टी में शामिल बच्चों ने भी अपनी कला का बेहतरीन तरीके से प्रदर्शन किया। संगत ने सभी का तालियां बजाकर उत्साह बढ़ाया। नगर कीर्तन के स्वागत के लिए बाजारों को भी फूल और रंग-बिरंगी लड़ियों से सजाया था। कीर्तन जिस बाजार से गुजरा, वहां की एसोसिएशन और दुकानदारों ने पूरी श्रद्धाभाव से स्वागत किया।

किसी ने संगत में मिष्ठान का वितरण किया तो किसी ने पुष्प वर्षा करके संगत का स्वागत किया। नगर कीर्तन के आयोजन के लिए कैंट थाने की पुलिस भी पुरी तरह से मुस्तैद रही। वाहन चालकों की परेशानी को देखते हुए भी दूसरे रास्ते का विकल्प रखा गया। नगर कीर्तन कैपिटल चौक से आरंभ होकर राय मार्केट, विजय रतन चौक, पंजाबी गुरुद्वारा साहिब, कबाड़ी बाजार, पुल चमेली, इकबाल गंज रोड, पुरानी सब्जी मंडी, गुरुद्वारा श्री सुखमणि साहिब सेवा सोसायटी से होता हुआ शाम को हरगोलाल रोड पर गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा में संपन्न हुआ। नगर कीर्तन में हरियाणा सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य सरदार सुदर्शन सिंह सहगल सहित बीएस बिंद्रा भी मौजूद रहे। जबकि नगर कीर्तन की व्यवस्थाओं को दुरुस्त रखने के लिए गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा के प्रधान सर्बजीत सिंह अपनी टीम सहित मौजूद रहे। वहीं फारुखा खालसा सीनियर सेकेंडरी स्कूल के प्रिंसिपल केपी सिंह, ब्रह्मजीत सिंह खालसा, सुरजीत सिंह धामी, अमरपाल सिंह , हरमोहिंदर सिंह, विचित्र सिंह, गुरकृपाल सिंह जसल, तेजिंदर सिंह, जसप्रीत सिंह जोहार, अमरप्रीत सिंह राजू, रजिंद्र सिंह राजा, गुरमीत सिंह कालड़ा, कुलवंत सिंह, प्रभजोत सिंह लांबा, मनमीत सिंह ओबेरॉय ने नगर कीर्तन में सराहनीय सहयोग दिया।

तेलुगु फिल्म गारागा में हीरोइन के तौर पर नजर आएंगी मल्कानगिरी की मोनिका

संवाददाता

ओड़िशा, भुबनेश्वर। ओडीशा की मालकानगिरी जिले के कालीमेला ब्लॉक अंतर्गत एमवी 75 गांव की मोनिका समद्दर ने तेलुगु फिल्मों में नायिका के रूप में अभिनय करके जिले का गौरव बढ़ाया है। उपनगरों की इस युवती ने अपनी प्रतिभा, सुंदरता और बेबाक अभिनय से इतनी लोकप्रियता हासिल की है। मोनिका के पिता गौतम समद्दर पेशे से एक छोटे व्यवसायी हैं।बड़ा भाई हैदराबाद में एक निजी कंपनी में काम करता है। लेकिन गरीबी के बावजूद मोनिका मलकांगरी के एक निजी कॉलेज से +2 की पढ़ाई पूरी करने के बाद नृत्य सीखने के लिए अपने बड़े भाई के साथ हैदराबाद चली गई। उनके बड़े भाई ने मोनिका को हैदराबाद में ÷हाई-डांस स्टूडियो÷ नामक अकादमी में भर्ती कराया। वहां 2 साल तक प्रशिक्षण के बाद उन्हें कुछ छोटे धारावाहिकों में अभिनय करने का मौका मिला। उनके अद्भुत अभिनय और सुंदरता ने तेलुगु फिल्म निर्देशकों को आकर्षित किया। अब उन्हें एक स्थानीय फिल्म में मुख्य भूमिका निभाने का मौका मिला है। मोनिका जल्द ही श्रीनिवास क्रिएशंस द्वारा निर्मित तेलुगु फिल्म गारागा में मुख्य भूमिका के रूप में पर्दे पर नजर आएंगी। फिल्म की शूटिंग फिलहाल आंध्र प्रदेश के बिजिवाड़ा क्षेत्र में की जा रही है। बताया जा रहा है कि यह फिल्म पहले तेलुगु और फिर हिंदी में रिलीज होगी। मोनिका को बचपन से ही डांस और गाने का शौक था। फिल्मों में काम करना उनका सपना था. अब उनका सपना सच होने जा रहा है, ऐसा उनके परिवार ने कहा।

देव पर भरोसा, कही ये बात जरूर होगी पूरी मजदूरों की सलामती के लिए ईष्ट की शरण में लोग

संवाददाता

सिलक्यारा (उत्तरकाशी)। बाबा बौखनाग की डोली हे देवता। यूं मजदूरों तैं राजिखुशी भैर निकाली दयावा (हे भगवान। इन मजदूरों को सही सलामत बाहर निकाल दे)...15 दिन से गंगा-यमुना घाटी के ईष्ट आराध्य देवताओं को मनाने के लिए स्थानीय लोग अपने-अपने देवता की शरण में हैं। सुबह-शाम उनकी सलामती और ऑपरेशन सिलक्यारा के सफल होने की कामना की जा रही है। स्थानीय निवासी एवं शिक्षक विरेंद्र अवस्थी का कहना है कि गंगा घाटी के भंडारस्यूं पट्टी, दसगी पट्टी, बिष्ट पट्टी, यमुना घाटी के मुगरसंती, बड़कोट पट्टी के आराध्य देव बाबा बौखनाग हैं। टनल के ऊपरी हिस्से पर बाबा बौखनाग का मंदिर है। हादसा होने के बाद सुरंग के प्रवेश द्वार पर भी उनका मंदिर स्थापित किया गया। स्थानीय लोग यहां डोली लेकर गए, पूजा-अर्चना की। बचाव अभियान शुरू होने से पहले उनकी पूजा-अर्चना की जा रही है। वहीं, विश्वनाथ बाबा, भंडारस्यूं पट्टी के विश्वा राणा, प्रकटेश्वर महाराज, ब्रहम देव, बाड़ाहाट पट्टी के कंडार देवता, बाड़ागड्डी पट्टी के हरि महाराज, टकनौर पट्टी के समेश्वर देवता, बिष्ट पट्टी के नागराजा देवता की भी लगातार पूजा-अर्चना की जा रही है। स्थानीय लोगों की अपने आराध्य देव के प्रति मजबूत आस्था है। उनका कहना है कि उन्होंने अपने देव से बात कर ली है। उन्होंने बोला है कि सभी सही सलामत हैं और जरूर वापस आएंगे। स्थानीय निवासी विरेंद्र अवस्थी का कहना है कि वह बाबा बौखनाग की डोली भी ले जा चुके हैं। सबकुछ सकारात्मक ही रहेगा। गेंवला गांव निवासी योगिता रावत का कहना है कि वे सुबह-शाम 41 लोगों के जल्द बाहर आने की कामना कर रहे हैं। उत्तरकाशी सिलक्यारा टनल पहुंचकर सीएम धामी ने की बौख नाग देवता से श्रमिकों की कुशलता के लिए प्रार्थना अपने ईष्ट देवता से उनकी सलामती की प्रार्थना कर रहे हैं। देखना सभी जरूर आएंगे।

भारतीय हॉकी में फिर बवाल

तेलंगाना ने हॉकी इंडिया के महासचिव पर जबरन वसूली का आरोप लगाया

एजेंसी

तेलंगाना हॉकी के चुनाव इस साल अप्रैल में होने थे लेकिन इस राज्य संघ के अध्यक्ष सरस तलवार के अनुसार वे चुनाव कराने के प्रयास कर रहे हैं लेकिन भोलानाथ विभिन्न कारणों से इसमें रोड़ा अटका रहे हैं। भारतीय हॉकी एक बार फिर गलत कारणों से चर्चा में है क्योंकि एक राज्य संघ तेलंगाना हॉकी ने हॉकी इंडिया के महासचिव भोलानाथ सिंह पर उसके चुनाव कराने के लिए 25 लाख रुपए की जबरन वसूली करने

का आरोप लगाया है।तेलंगाना हॉकी के चुनाव इस साल अप्रैल में होने थे लेकिन इस राज्य संघ के अध्यक्ष सरस तलवार के अनुसार वे चुनाव कराने के प्रयास कर रहे हैं लेकिन भोलानाथ विभिन्न कारणों से इसमें रोड़ा अटका रहे हैं। बाद में हॉकी इंडिया के महासचिव भोलानाथ ने तेलंगाना हॉकी के कामकाज को चलाने के लिए छत्तीसगढ़ हॉकी के महासचिव फिरोज अंसारी की अगुवाई में तीन सदस्यीय समिति गठित की इसके बाद तलवार ने शिकायत दर्ज कराई थी। तलवार ने पीटीआई से कहा,''चुनाव अप्रैल में होने वाले थे और हम इन्हें कराने की प्रक्रिया में थे लेकिन हॉकी इंडिया का एक अधिकारी इसमें रोड़ा अटका रहा था। हॉकी इंडिया ने कहा कि कुछ शिकायतें हैं और हमने उनका जवाब दिया। आखिर में मैं उनसे (भोलानाथ) मिला तो उन्होंने कहा कि अगर आप इससे बाहर निकलना चाहते हो तो 25 (लाख रुपए) का भुगतान करो। तब कमरे में केवल मैं और वह थे।'' तलवार ने कहा,''इसके बाद उन्होंने कहा कि मैं इस पर विचार करने के लिए सात दिन का समय दूंगा। मैं उनसे तीन नवंबर को मिला था।'' भोलानाथ ने इन आरोपों को खारिज करते हुए कहा कि उन्होंने हमेशा इस खेल को बढ़ावा देने के लिए काम किया है। भोलानाथ ने पीटीआई से कहा,''यह आरोप पूरी तरह से आधारहीन हैं। मैंने 25 लाख तो छोड़िए, कभी किसी से यहां तक की 25 पैसे भी नहीं लिए हैं। मैंने हमेशा खेल को बढ़ावा देने के लिए काम किया है।''

मणिपुर को हराकर पंजाब सेमीफाइनल में पहुंचा, अब कर्नाटक से होगा मुकाबला

उत्तराखंड के खिलाफ पिछले मैच में हैट्रिक लगाने वाले पंजाब के हरमनप्रीत ने 31वें और 51वें मिनट में पेनल्टी कॉर्नर पर गोल किए। भारतीय कप्तान हरमनप्रीत सिंह के दो गोल की मदद से पंजाब ने शनिवार को यहां मणिपुर को 4-2 से हराकर हॉकी इंडिया सीनियर पुरुष राष्ट्रीय चैंपियनशिप के सेमीफाइनल में प्रवेश किया जिसमें उसका सामना कर्नाटक से होगा। शनिवार को दूसरे क्वार्टरफाइनल मैच में कर्नाटक ने झारखंड को 4-1 से शिकस्त दी जिसमें हरीश मुतागर ने 46वें और 49वें मिनट में, कप्तान शेशे गौड़ा ने 23वें मिनट और लिखित बेम ने 32वें मिनट में गोल किए। झारखंड के लिए सांत्वना गोल दिलबर बार्ला ने 39वें मिनट में किया। दूसरा सेमीफाइनल सोमवार को हरियाणा और तमिलनाडु के बीच खेला जाएगा। हरियाणा ने पेनल्टी शूटआउट में ओडिशा को 3-2 से पराजित किया। नियमित समय तक दोनों टीमें 2-2 की बराबरी पर थीं। एक अन्य मैच में तमिलनाडु ने वापसी करते हुए उत्तर प्रदेश पर 3-2 से रोमांचक जीत हासिल की। उत्तर प्रदेश ने मनीष साहनी के 27वें और सुनील यादव के 30वें मिनट में किए गए गोल से 2-0 से बढ़त बना ली थी। लेकिन फिर कर्नाटक ने जे केविन किशोर (33वें मिनट) और कप्तान जे जोशुआ बेनेडिक्ट वेस्ले (52वें और 59वें मिनट) की बदौलत वापसी करते हुए जीत दर्ज की।

ठंड के मौसम में इन चार बीमारियों का बढ़ जाता है खतरां

इस बढ़ती बीमारी को लेकर WHO का अलर्ट, कितना तैयार है भारत?

चीन इन दिनों तेजी से बढ़ती श्वसन संबंधी बीमारी की चपेट में है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक यहां %मिस्टीरियस निमोनिया% का जोखिम तेजी से बढ़ता जा रहा है, विशेषतौर पर छोटे बच्चे इसके अधिक शिकार हो रहे हैं। असल में कोरोना महामारी के बाद तीन साल में ऐसा पहली बार है जब चीन बिना प्रतिबंधों के सर्दी के मौसम में प्रवेश कर रहा है। इसकी शुरुआत में ही पूरे देश में श्वसन संबंधी बीमारियों की लहर देखी जा रही है। छोटे बच्चों में सांस से संबंधित बीमारियों और निमोनिया के मामले रिपोर्ट हो रहे हैं। इसको लेकर विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने अलर्ट जारी करते हुए सभी देशों को सावधानी बरतते रहने की सलाह दी है।

भारत की तैयारियों पर क्या बोले स्वास्थ्य-मंत्री?

चीन में विशेषकर बच्चों में माइकोप्लाज्मा निमोनिया और इन्फ्लूएंजा फ्लू के मामलों में वृद्धि के मद्देनजर केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मंडाविया ने शनिवार को कहा, सरकार स्थिति पर नजर रख रही है और बचाव के लिए सभी आवश्यक कदम उठाए जा रहे है। वैश्विक चिंता का कारण बने इस प्रकोप के बारे में पूछे जाने पर स्वास्थ्य मंत्री ने कहा, आईसीएमआर और स्वास्थ्य सेवा महानिदेशक चीन में निमोनिया के बढ़ते मामलों को देखते हुए भारत को इस तरह के जोखिमों से कैसे बचाया जा सकता है, इसपर गंभीरता से ध्यान दे रहे हैं।

देश के ज्यादातर हिस्सों में सर्दी का मौसम बढ़ रहा है। पिछले दिनों कई राज्यों में अचानक से मौसम में बदलाव आया है जिसके कारण अचानक से तापमान में गिरावट दर्ज की जा रही है। सर्दियों का ये मौसम वैसे तो कई मामलों जैसे खान-पान में आनंद वाला होता है पर इस दौरान आपको सेहत को लेकर विशेष सावधानी बरतते रहने की आवश्यकता होती है। गिरते तापमान के साथ कई प्रकार के बैक्टीरिया और वायरस बढ़ने लगते हैं, जिसके कारण श्वसन संक्रमण सहित कई बीमारियों का जोखिम हो सकता है। इतना ही नहीं, सर्दियों का ये मौसम पहले से ही मौजूद कुछ स्वास्थ्य समस्याओं को ट्रिगर करने वाला भी हो सकता है जिसको लेकर अलर्ट रहने और बचाव के उपाय करते रहना सभी के लिए आवश्यक है।

सर्दी-जुकाम, फ्लू का खतरा

ठंड के महीनों में सर्दी, फ्लू और अन्य श्वसन संबंधी बीमारियां अधिक रिपोर्ट की जाती हैं। लोग अक्सर घर के अंदर रहते हैं, जिससे वायरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक आसानी से पहुंच जाते हैं। इसके अलावा ठंडी, शुष्क हवा प्रतिरोध को कमजोर कर सकती है, जो इन बीमारियों के खतरे को बढ़ाने वाली मानी जाती है। जिन लोगों को पहले से अस्थमा या ब्रोंकाइटिस जैसी स्वास्थ्य समस्याएं रही हैं, उनके लिए ये मौसम इन समस्याओं को ट्रिगर करने वाला भी हो सकता है।

निमोनिया का जोखिम

चीन, इन दिनों निमोनिया के गंभीर संक्रमण की चपेट में है, पिछले कुछ दिनों की रिपोर्ट के

अनुसार यहां के अस्पतालों के आपातकालीन विभाग में निमोनिया की शिकायत वाले रोगियों की संख्या काफी तेजी से बढ़ी है। सर्दियों का ये मौसम निमोनिया के जोखिमों को काफी बढ़ाने वाला हो सकता है। निमोनिया के मामले सबसे अधिक ठंड के महीनों के दौरान देखे जाते हैं। पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों, बुजुर्गों और कमजोर प्रतिरक्षा वाले लोगों को निमोनिया होने का सबसे अधिक खतरा होता है। माइग्रेन, गंभीर रूप के सिरदर्द की समस्या है, इसे साइकोसोमेटिक डिसऑर्डर भी माना जाता है। जिन लोगों को पहले से ही माइग्रेन की समस्या रही है उनके लिए सर्दियों का ये मौसम चुनौतीपूर्ण हो सकता है। न्यूयॉर्क शहर के मोंटेफियोर मेडिकल सेंटर के न्यूरोलॉजिस्ट सिंथिया आर्मंड कहते हैं, ÷ठंड का मौसम माइग्रेन को ट्रिगर कर सकती है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मानना है कि ठंड के कारण रक्त प्रवाह बाधित हो सकता है, जिसके कारण सिरदर्द की समस्या के बढ़ने का खतरा हो सकता है। स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं, ठंड का ये मौसम उन लोगों के लिए भी समस्याकारक है जिनको ब्लड प्रेशर की दिक्कत रही है। तापमान कम होने के कारण रक्त वाहिकाएं अस्थायी रूप से संकीर्ण हो जाती हैं, इससे रक्तचाप बढ़ जाता है क्योंकि संकुचित नसों और धमनियों के माध्यम से रक्त को प्रवाहित होने में समस्या होने लगती है। ब्लड प्रेशर बढ़ने की समस्या हृदय रोगों और इसके जटिलताओं को भी बढ़ाने वाली हो सकती है। ब्लड प्रेशर को कंट्रोल करने के उपाय करते रहना सभी के लिए बहुत आवश्यक है। हेल्थ एवं फिटनेस कैटेगरी में प्रकाशित सभी लेख डॉक्टर, विशेषज्ञों व अकादमिक संस्थानों से बातचीत के आधार पर तैयार किए जाते हैं। लेख में उल्लेखित तथ्यों व सूचनाओं को अमर उजाला के पेशेवर पत्रकारों द्वारा जांचा व परखा गया है। इस लेख को तैयार करते समय सभी तरह के निर्देशों का पालन किया गया है। संबंधित लेख पाठक की जानकारी व जागरूकता बढ़ाने के लिए तैयार किया गया है। अमर उजाला लेख में प्रदत्त जानकारी व सूचना को लेकर किसी तरह का दावा नहीं करता है और न ही जिम्मेदारी लेता है। उपरोक्त लेख में उल्लेखित संबंधित बीमारी के बारे में अधिक जानकारी के लिए अपने डॉक्टर से परामर्श लें।

आखिर क्या है ये बीमारी?

माइकोप्लाज्मा निमोनिया जिसे मिस्टीरियस निमोनिया कहा जा रहा है ये एक प्रकार के बैक्टीरिया के कारण होने वाली समस्या है जो मुख्यरूप से बच्चों को अपना शिकार बनाती है। इसके कारण सूखी खांसी, बुखार और शारीरिक मेहनत करने पर सांस की तकलीफ हो सकती है। माइकोप्लाज्मा निमोनिया के बैक्टीरिया सभी मानव रोगजनकों में से सबसे अधिक प्रचलित हैं। माइकोप्लाज्मा निमोनिया स्कूल, कॉलेज परिसर और नर्सिंग होम जैसे भीड़-भाड़ वाले इलाकों में खांसने-छींकने से निकलने वाली ड्रॉपलेट्स के संपर्क से तेजी से फैलता है। पांच साल से कम आयु के बच्चों, बुजुर्गों, कमजोर प्रतिरक्षा वाले लोगों, फेफड़ों की बीमारी के शिकार, सिकल सेल एनीमिया वाले लोगों में इसका खतरा अधिक देखा जाता रहा है।

चीन में बढ़ते खतरे की क्या है वजह?

चीन में पिछले कुछ दिनों से बढ़ती इस बीमारी के लिए चीन के राष्ट्रीय स्वास्थ्य आयोग के अधिकारियों ने कोविड-19 प्रतिबंध हटाने को जिम्मेदार ठहराया है। स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं, इसी तरह की समस्या यूके में भी प्रतिबंधों के हटने के बाद देखी गई थी, इसे ÷लॉकडाउन एग्जिट वेव÷ नाम दिया गया है। यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन में जेनेटिक इंस्टीट्यूट के निदेशक फ्रेंकोइस बेलौक्स कहते हैं, चीन अपने लंबे लॉकडाउन के बाद पहली बार सर्दी के दिनों में प्रतिबंधों से मुक्त हुआ है। सख्त प्रतिबंधों के कारण यहां श्वसन जैसे रोगों के कारक वायरस का खतरा कम हो गया था। वर्तमान स्थिति को देखते हुए एक नए रोगजनक के उभरने को लेकर जो कयास लगाए जा रहे हैं उसकी कोई पुष्टि नहीं है।

बच्चों के लंच के लिए झटपट तैयार करें ये सैंडविच, बनाने की विधि है बेहद आसान

हर मां की सबसे बड़ी चिंता होती है कि उनका बच्चा काफी मन से पेट भरकर खाना खाए। जब बच्चे घर पर होते हैं तो घरवाले खासतौर पर बच्चे की मम्मी उन्हें अपने हाथों से खाना खिला देती हैं, लेकिन दिक्कत सामने आती है स्कूल जाने वाले बच्चों के साथ। स्कूल में वो अकेले ही जाते हैं। ऐसे में उन्हें खाना भी अकेले वो भी खुद से ही खाना पड़ता है। इसी के चलते में हर मां अपने बच्चों को लंच बॉक्स में ऐसी डिशेज पैक करके देती हैं, जिसे वो आसानी खा लें। बच्चों का लंच बनाते वक्त हर मां बस यही सोचती है कि ये डिब्बा खाली होकर ही वापस आए लेकिन कई बार ऐसा नहीं होता। दरअसल, अगर आप सिर्फ अपने हिसाब से बच्चे का लंच तैयार करेंगी तो वो इसे मन से नहीं खाएगा। ऐसे में कभी-कभी बच्चों के मन के पकवानों को भी टिफिन में रखना चाहिए। इसी क्रम में हम आपको आज दो प्रकार के सैंडविच बनाने का तरीका बताने जा रहे हैं, जिसे बच्चे काफी मन से खाते हैं।

स्वीट कॉर्न सैंडविच बनाने के लिए सामान

स्वीट कॉर्न (उबला हुआ)
ब्रेड स्लाइस
टमाटर (कटा हुआ)
प्याज (कटा हुआ)
धनिया (कटा हुआ)
नमक, काली मिर्च पाउडर
चटनी या मेयोनीज

विधि

इस सैंडविच को बनाने के लिए एक कटोरी में उबले हुए स्वीट कॉर्न को नमक, काली मिर्च पाउडर, प्याज, टमाटर, धनिया आदि के साथ मिलाएं। इसके बाद एक ब्रेड स्लाइस को लें और उस पर चटनी या मेयोनीज लगाएं।

आखिर क्यों ऑयली हो जाते हैं बाल? जानें इसकी वजह और इस परेशानी से छुटकारा पाने का तरीका

अपनी त्वचा के साथ अपने बालों का ख्याल रखना बेहद जरूरी है, क्योंकि आपकी सुंदरता में आपके बाल भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मौसम के अनुसार हर कोई अपनी स्किन का खास ध्यान रखता है, क्योंकि बदलते मौसम में कई परेशानियां सामने आती हैं। जैसे मौसम की वजह से चेहरे पर काफी ऑयल आने

गलत शैंपू और कंडीशनर

बालों के जल्दी ओयली होने का एक महत्वपूर्ण कारण यह भी हो सकता है। जैसे आपने कुछ ऐसे शैम्पू और कंडीशनर को प्रयोग किया, जो आपके बालों को सूट नहीं करतें उनमें मौजूद केमिकल्स, पैराबेन, सिलिकॉन, सल्फेट, और पेट्रोलियम प्रोडक्ट्स, बालों के मस्तिष्क से प्राकृतिक तेल को कम कर देते हैं, जिसके कारण बाल जल्दी ओयली होने लगते हैं। इसके लिए सही शैम्पू और कंडीशनर का उपयोग करने, और सही तरीके से पोषक आहार लेने से, इस समस्या को सुलझाया जा सकता है।

गरम पानी का उपयोग

अगर आपके बाल बहुत जल्दी चिपचिपे नजर आते हैं तो ऐसे में आपको अपने बालों की सही देखभाल करने की जरूरत है। इसलिए मौसम भले ठंड का हो, लेकिन आप बालों को धोने के लिए गरम पानी का उपयोग न करें। डाइट का मतलब बस हेल्थ से ही नहीं होता, बल्कि इसका असर स्किन और बालों पर भी पड़ता है। इसके लिए जरूरी है अपनी हेयर की हेल्थ का भी ध्यान रखते हुए बालों को पोषण देने वाली चीजों का उपयोग करें। अपनी डाइट में जिंक, विटामिन ए और ओमेगा-3 फैटी एसिड सहित जरूरी पोषक तत्व खाएं, जिससे बालों को पूरा पोषण मिले। अगर बाल बहुत जल्दी-जल्दी ऑयली हो जाते हैं, तो इसके लिए जरूरी है कि बहुत सारे हेयर स्टाइलिंग का प्रयोग न करें। जैसे सीरम, हेयर जेल और हेयरस्प्रे या कोई खुद से बनाया प्रोडक्ट आदि स्टाइलिंग प्रोडक्ट्स का अधिक प्रयोग करने से स्कैल्प में ऑयल अधिक मात्रा में निकल सकता है, जिससे बाल चिपचिपे महसूस होने लगतें हैं। कुछ लोगों की यह आदत होती है कि वे अपने बालों पर ऑयल लगाते हैं। उसके बाद उसको पूरे हफ्ते लगा रहने देते हैं। इससे आपके बाल बहुत जल्द ऑयली हो जाते हैं, इसलिए आपको अपनी इस आदत को बदलना चाहिए। आप बालों में रात को ऑयल लगा कर उसे सुबह धो सकते हैं। अगर आप ऑयली स्कैल्प से परेशान हैं तो दही और नींबू के इस्तेमाल करें। इसके लिए आपको बस एक कटोरे में दही लेना है और इसमें आधा नींबू का रस मिलाना है। इस मास्क को अपने स्कैल्प पर कुछ समय के लिए लगाएं और बाद में सादे पानी से धो दें। हफ्ते में दो बार इसका इस्तेमाल जरूर करें।

स्वामी, प्रकाषक, मुद्रक विवेक श्रीवास्तव द्वारा ओम साई क्रियेषन्स, आषा काम्पलक्े स, इन्दिरा नगर लखनऊ से मुद्रित एव ं पहला तल, निधि काम्पलेक्स, विकास नगर लखनऊ (उ0प्र0) से प्रकाषित।
RNI No.UPHIN/2015/6090 सम्पादक- विवेक श्रीवास्तव, फोन नं0- 8004949556, 7570901365 Email. info@theachievertimes.com किसी भी वाद विवाद का निस्तारण लखनऊ न्यायालय ही मान्य होगा।

समाचार-पत्र का मुख्य उद्देय ग्रामीण भारत का सत प्रतिशत मीडिया कवरेज कर समाज में फैला भ्रष्टचार सामाजिक बुराइयों एवं कुरीतियों को अपने स्तर पड़ताल करके सम्बन्धित उच्चअधिकारियों को ध्यानकर्षण कर उन्हें समाप्त कराना है।